राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५२

राजस्थानी साहित्य - संग्रह

भाग २

[देवजी बगडावतांरी, प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी न वीरमदे सोनीगरारी वात]

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या सशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद; विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-सस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई।

ग्रन्थाङ्क ५२

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग २

[देवजी बगडावतारी, प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी नै वीरमदे सोनीगरारी वात]

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग २

सम्पादन कर्त्ता

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए, साहित्यरत्न

राजस्थानी शोध सहायक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ प्रथमावृत्ति १०००	भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२	खिस्ताब्द १९६० मूल्य २.७५

मुद्रक—श्री हरिप्रसाद पारीक साधना प्रेस जोधपुर

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publicaion of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular.

*

GENERAL EDITOR

ACHARYA JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Visvesvrananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab, Gujarat Sahitya Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director, Bharatya Vidya Bhawan, Bombay; General Editor, Gujarat Puratattva Mandir Granthavali, Bharatiya Vidya Series, Singhi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 52

RAJASTHANI SAHITYA SAMGRAHA

Pt. 2.

WITH

INTRODUCTION, NOTES, APPENDIXES, ETC.

* * *

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director, Rajasthana Prachy Vidya Pratisthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V S 2017] *[1960 A D*

RAJASTHANI SAHITYA SAMGRAHA

Pt 2

Edited

WITH INTRODUCTION NOTES APPENDIXES ETC

By

SHRI PURUSHOTTAM LAL MENARIA, M A Sahity Ratna

Rajasthani Research Asst

Rajasthan Oriental Research Institute,
Jodhpur

Published

Under the orders of the Government of Rajasthan

By

The Director Rajasthan Oriental Research Institute
Jodhpur (Rajasthan)

V S 2017] [1960 A D

विषय - तालिका

सञ्चालकीय वक्तव्य

—o—

राजस्थानमे और अन्यत्र ज्ञान-भण्डारोमे सैंकडो ही राजस्थानी कथाए प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोमे लिखित प्राप्त होती हैं, जिनमे हमारी पुराकालीन रीति-नीति, आचार-व्यवहार एव मनोभावादिसे सम्बद्ध सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, भाषावैज्ञानिक और साहित्यिक परम्पराओके सुस्पष्ट दर्शन होते है, अतएव इन कथाओका हमारे साहित्यमे विशेष महत्त्व है।

अनेक राजस्थानी कथाए सस्कृत और अपभ्रशादि कथाओके अनुवादोके रूपमे प्राप्त होती है तथा अनेक कथाए मौलिक कल्पना और ऐतिहासिक घटनाओ एव चरित्रो पर आधारित हैं। अनेक कथाओका उद्देश्य धर्म-प्रचार और शिक्षा है तो कई कथाए मनोरञ्जन मात्रके लिए लिखी गई है। शैलीकी दृष्टिसे भी राजस्थानी कथाओमे विभिन्नताओके दर्शन होते है, जिनका विशेष अध्ययन हमारे विद्वानोके लिये अपेक्षित है।

राजस्थानी कथा-साहित्यके विशेष महत्त्वको दृष्टिगत रखते हुये हमने प्रतिष्ठानकी प्रमुख प्रकाशन-श्रेणी राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामे राजस्थानी साहित्य-सग्रह भाग १के अन्तर्गत श्रीयुत प्रो नरोत्तमदास स्वामी एम ए द्वारा सम्पादित तीन वस्तुवर्णनात्मक राजस्थानी कथाओका प्रकाशन किया था।

"राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग २"के अन्तर्गत तीन विशेष राजस्थानी कथाओ—१ देवजी बगडावतारी वात, २ प्रतापसिंह म्होकमसिंघरी वात और ३ वीरमदे सोनीगरारी वातका प्रकाशन किया जा रहा है जिनका सम्पादन हमारे शोध-सहायक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम ए, साहित्यरत्नने परिश्रमपूर्वक किया है। पाठ सम्पादनमे यथासाध्य वार्त्ताओकी प्राप्त विविध प्रतियोका उपयोग किया गया है तथा पाठान्तर्गत टिप्पणियोमें आवश्यक ऐतिहासिक और भाषावैज्ञानिक ज्ञातव्य प्रस्तुत किये गये हैं, जिनसे सम्पादकके सम्बद्ध विषयोके

विशेष अध्ययन और योग्यताका परिचय मिलता है। साथ ही सम्पादकने वार्त्ताओसे सम्बद्ध प्रतियो और विषयो पर परिशिष्ट एव भूमिकामे अध्ययन-पूर्वक विस्तारसे लिखा है जिससे पाठकोको अध्ययनमे विशेष सुविधा प्राप्त होगी।

प्रस्तुत पुस्तकके प्रकाशन-व्ययका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रादेशिक भाषा-विकास-योजनाके अन्तर्गत प्रदान करना स्वीकार किया है तदर्थ हम आभार प्रदर्शित करते है।

आशा है कि राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके हमारे प्रिय पाठकोको प्रस्तुत प्रकाशन रुचिकर प्रतीत होगा।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर

जयपुर,
ता० १२ अक्टूबर '६० ई

सम्पादकीय प्रस्तावना

साहित्य, संगीत, चित्र, मूर्ति और वास्तु कला आदिके माध्यमसे आत्माभिव्यक्ति करना मानव प्रकृतिकी एक प्रधान विशेषता रही है। साथ ही आप बीती कहना और पर-बीती सुनना भी मानव समाजकी नैसर्गिक प्रवृत्ति है, जिसके परिणामस्वरूप कथा साहित्यका उदय और विकास हुआ है।

पूर्व पुरुषों और अनुभवी व्यक्तियोंके ज्ञानका लाभ प्राप्त कर अपने अनुभव एवं ज्ञानका लाभ आने वाली पीढ़ियोंको प्रदान करते रहनेकी परंपरासे मानव संस्कृति सदा ही विकासोन्मुख रही है। इस प्रक्रियाके लिये कथाओंका विशेष उपयोग हुआ है, क्योंकि कथाओंके माध्यमसे कोई भी विचार सुगम एवं सुबोध रूपमें प्रस्तुत किया जा सकता है। हमारे समाजमें साहित्य, दर्शन, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि अनेकानेक विषयोंका ज्ञान कथाओंके माध्यमसे करानेकी अति प्राचीन परम्परा है, जिसके परिणाम-स्वरूप सम्बद्ध विषयोंकी कथाएँ प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध होती हैं।

प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य

वैदिक कालसे ही भारतमें कथा साहित्य किसी न किसी रूपमें प्राप्त हो जाता है। साथ ही प्राचीन भारतीय कथाओंका प्रचार विदेशोंमें भी हुआ है। उदाहरणके लिए पञ्चतन्त्रका प्रथम विदेशी अनुवाद पहलवी अर्थात् प्राचीन ईरानी भाषामें ईरानके सम्राट नुशरोंके दरबारी हकीम बुजुए द्वारा सन ५३१ से ५७९ ई० के बीच किया गया था[1]। इसके पश्चात् पञ्चतंत्रके अनेक अनुवाद यूरोपीय और चीनी आदि भाषाओंमें हुए। पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, कथासरित्सागर आदिका प्रभाव मध्य एशिया, युरोप अरब, और चीन आदि देशोंके कथा साहित्य पर भी दृष्टिगत होता है।

ऋग्वेदके स्तुतिपरक सूक्तोंमें "अपालाकी कथा" प्राप्त होती है। हमारे उपनिषदोंमें भी कई कथाएं निगुम्फित हैं। उदाहरणके लिये केनोपनिषद्‌में देवताओंकी शक्ति परीक्षा, कठोपनिषद्‌में नचिकेताका साहस और छान्दोग्य उपनिषद्‌में सत्यकाम एवं जानश्रुता बृहदारण्यकमें गार्गी और याज्ञवल्क्य तैत्तिरीयमें आरुणी तथा मुण्डकोपनिषद्‌में महाशल्य, शौनक और अङ्गिराकी कथाएं कही गई हैं

रामायण और महाभारतमें इतिहास धर्म और कल्पनाके आधार पर अनेक कथाओंका समन्वय हुआ है। रामायण और महाभारत सम्बन्धी कथाओं द्वारा कालान्तरमें कितने ही कमनीय काव्योंका प्रणयन हुआ है।

---

१ आ० एजर्टन द्वारा सम्पादित पञ्चतन्त्र रिकन्स्ट्रक्टेड और डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का वक्तव्य (पञ्चतन्त्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली) पृष्ठ सं० ६।

जिसने सर्वप्रथम वीर बगड़ावत बन्धुओंके विषयमें कीर्ति-श्लोक लिखे जिनकी संख्या १५,००० बताई जाती है[1] ।

राजस्थानमें लोकमान्यतानुसार 'बगड़ावत' प्रति रात्रि तीन प्रहर गाया जाने पर ६ माहमें पूर्ण होता है। बगड़ावत काव्य वस्तुवर्णन, चरित्रचित्रण, इतिहास और काव्य-सौष्टवकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है किन्तु अब तक इसका संकलन, सम्पादन और प्रकाशन तो क्या किसी भी साहित्यिक-इतिहासमें उल्लेख तक नहीं हुआ है। अब तक पूर्णरूपेण लिपिबद्ध न होनेसे इसमें क्षेपकोंका होना भी स्वाभाविक है।

'देवजी बगड़ावतारी वात' के प्रारंभमें 'वीसलदे चहुवाण' के राज्य-कालमें बगड़ावतोंके मूल पुरुष "हरराम चहवाण" का उल्लेख है। वीसलदे चौहानको यदि अजमेरका विग्रहराज चतुर्थ मान लिया जावे तो उसका शासन-काल वि. सं. १२१० से वि. सं. १२२१ माना जाता है।[2] तदनुसार बगड़ावतका निर्माणकाल १३ वीं सदी विक्रमी ज्ञात होता है। मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई०में भी देवजीका जन्म संवत् १३०० होनेका उल्लेख है।[3] देवजीके जन्मसे पूर्व अवश्य ही बगड़ावत बन्धुओंकी वीरता और वैभवका प्रचार हो गया होगा, जिनके विषयमें प्रसिद्ध है—

माया माणी बगड़ावतां, कै लाखे फूलाणी।
रही सही सो माणगी, हर गोविंद नाटाणी॥

अर्थात् माया (धन-ऐश्वर्य) का उपभोग बगड़ावतोंने किया। तदुपरान्त लाखा-फूलाणीने भी आनन्दोपभोग किया। तत्पश्चात् जो धन अवशेष रहा उसका आनन्द हरगोविन्द नाटाणीने प्राप्त किया।

लाखा फूलाणी कच्छके प्रसिद्ध वीर और ऐश्वर्यशाली व्यक्ति थे[4]। हरगोविन्द नाटाणी जयपुर महाराजा सवाई ईश्वरीसिंहके दीवान थे[5]। उक्त दूहेमें 'कै लाखे फूलाणीके स्थान पर 'जग सार जाणी' पाठ भी मिलता है[6]।

देवजी बगड़ावतका एक मन्दिर महाराणा सांगाने चित्तोड़में निर्मित करवाया था। कहते हैं कि उक्त महाराणाको देवजीका इष्ट था।[7] राजस्थानमें 'बगड़ावत' और 'देवना-

---

1 Preliminary Report on the Operation in search of Mss. of Bardic Chronicals, Asiatic Society, Calcutta, Page 10

२ अजमेर हिस्टॉरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव (हरविलास शारदा) पृष्ठ १४८, १५३-१५४।

३ मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई भाग ३, पृष्ठ ४६।

४ श्रीयुत् पं. गोपालनारायणजी बहुरा, एम ए. द्वारा सम्पादित और अनुवादित फार्बस कृत रासमाला" भाग प्रथम पूर्वार्द्ध पृष्ठ १०२—१०४।

५ जयपुर राज्यका इतिहास, लेखक पं. हनुमान शर्मा पृष्ठ १८१।

६ "राजस्थानके लोक देवता" पं झाबरमलजी शर्मा, मरुभारती, पिलानी वर्ष ३, अङ्क ३।

७ मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ई भाग ३, पृष्ठ ४६।

रावण' सम्बन्धी लोक-नाटकोंका अभिनय होता रहा है, जिनका प्रकाशन भी हो चुका है[1]। देवजी बगडावतकी पूजा राजस्थानमें कई स्थानों पर होती है किन्तु इनकी पूजाका मुख्य केन्द्र आसीन्द मेवाडमें है। बगडावतों द्वारा निर्मित एक सरोवर फतहनगर (उदयपुर) के समीप गांव गवारडीमें है और एक बावडी बीलाडाके समीप है।

पाबूजीरा पवाड़ा, निहालदे सुल्तान आदि राजस्थानी लोक काव्योंकी भांति 'बगड़ावत' का पूर्ण सङ्कलन, सम्पादन और प्रकाशन भी अब तक संभव नहीं हो सका है। वास्तवमें इन काव्योंका सौष्ठव और ऐतिहासिक महत्त्व प्रसिद्ध 'पृथ्वीराज रासो' से न्यून नहीं है। यह कवि चन्द रचित 'रासो' भी 'बगड़ावत' आदि राजस्थानी काव्योंकी भांति प्रारंभमें मौखिक ही प्रचलित रहा और इस तथ्यकी ओर ध्यान नहीं जानेसे विद्वानोंने पृथ्वीराज रासोका निर्माण-काल १८ वीं शताब्दि तक निश्चित करनेका प्रयत्न किया है[2]। पृथ्वीराज रासोका निर्माण कवि चन्दने पृथ्वीराज चौहानकी वीरतासे प्रभावित होकर पृथ्वीराजके मृत्युकाल सं० १२४९ विक्रमीके लगभग ही किया होगा। कई वर्ष मौखिक रहनेसे ही पृथ्वीराज रासोमें परिवर्तन और परिवर्द्धन हो गये जिससे उस पर अप्रामाणिकताके आक्षेप किये गये[3]। इस कथनके प्रमाणमें निम्नलिखित तथ्य संक्षेपमें विद्वानोंके विचारार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं—

१ पृथ्वीराज रासोकी धारणोजमें लिखित प्रति संवत १६६४ वि० की उपलब्ध हो चुकी है जिससे इस कालसे पूर्व पृथ्वीराज रासोका निर्माण सर्वथा सिद्ध है। यह प्रति राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरमें सुरक्षित है।

२ रासो अथवा "रास" शब्द ही मूलतः गेय काव्यका प्रतिबोधक है। राजस्थान मध्यभारत और गुजरातमें "रास" नामोंमें गेय काव्य लिखनेकी प्राचीन परंपरा है जिसके अन्तर्गत सकड़ों ही "रास" कृतियां उपलब्ध होती हैं।

३ पृथ्वीराज रासोके मौखिक रहनेसे ही इसके लघुतम, लघु, वृहत् और वृहत्तर रूप प्रचलित हो गये।

४ भारतीय ही नहीं कई विदेशी भाषाओंमें भी प्राचीन प्रारंभिक साहित्य मुख्यतः मौखिक वीर काव्यों (Ballads) के रूपमें प्रचलित रहा है।

५ मुनि श्री जिनविजयजी पुरातत्त्वाचार्यके "पुरातन प्रबन्ध संग्रह" में प्राप्त हुए पृथ्वीराज रासोके छन्दोंसे चन्द कविके प्रस्तुत काव्यकी प्राचीनता और लोकप्रियता सिद्ध होती है।

---

१ राजस्थानके लोक-नाट्य, श्रीयुत श्यामलालजी शर्मा एम ए, पृष्ठ ५३ और "राजस्थानके लोक नाटक" श्रीयुत अगरचन्दजी नाहटा लोक कला भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर भाग १ अङ्क ३। श्री वंशीधर शर्मा किशनगढ़ने भी उक्त विषयमें दो ख्याल लिख कर प्रकाशित किये हैं।

२ श्रीयुत डॉ० मोतीलालजी मेनारिया, राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ ९।

३ श्रीयुत डॉ० गौरीशङ्करजी हीराचन्दजी ओझा—पृथ्वीराज रासोका निर्माणकाल (कोषोत्सव स्मारक ग्रन्थ काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी)।

संग्रह-ग्रन्थमें अधिकाधिक वार्ताओंको लिखनेके मोहसे प्रस्तुत वार्तामें चरित्र-चित्रण, घटना-विवरण और पृष्ठ-भूमि-अङ्कनका विस्तार नहीं दिया गया है। सम्भवतः लेखकने इनकी आवश्यकता कहावतोंके व्यापक प्रभावके कारण भी नहीं समझी है।

प्रस्तुत वार्तामें कई भारतीय कथानक रूढ़ियों और अभिप्रायों (Motives) का समावेश भी कलात्मक रूपमें हुआ है। जैसे दृष्टि-सम्पर्कसे गर्भ-धारण, नृसिंहरूपी बालकका जन्म, बालक-बालिकाओं द्वारा खेल हीमें विवाह कर लेना, उबलते हुए तेलमें गिरना और पारस होना, अन्यायको आंच शेष नागके लगना, देवीका अवतार ग्रहण करना, कमलसे बालकका उत्पन्न होना, होनहार व्यक्ति पर सर्प द्वारा छाया करना, बालकको सिंहनी द्वारा दूध पिलाना, गायोंकी रक्षाके लिये युद्ध करना, आदि। उक्त प्रसङ्ग अनेक भारतीय कथाओंमें मिल जाते हैं। प्रस्तुत वार्तामें भी इन चमत्कारिक घटनाओंका कलात्मक रूपमें समावेश हुआ है।

प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरीसिंघोतरी वात

पुस्तकमें ग्रहीत दूसरी कथा 'प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरीसिंघोतरी वात' एक ऐतिहासिक वार्ता है, जिसका उपयोग स्व. डॉ. गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझाने भी राजपूतानाका इतिहास लिखनेमें किया है[1]। प्रस्तुत वार्ताकी हमें पांच प्रतियां उपलब्ध हुई हैं, जिनमेंसे दो प्रतियां (क और ख) राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरके संग्रहालयसे, एक (ग प्रति) महाराजकुमार डॉ. रघुवीरसिंहजी एम. ए., डी. लिट्. एम. पी. के सौजन्यसे, श्री रघुवीर लायब्रेरी सीतामऊ द्वारा, एक (घ प्रति) श्रीयुत नारायणसिंहजी भाटी द्वारा राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनीसे और एक प्रति (ङ) श्रीयुत गोपालनारायणजी बहुरा एम. ए. उपसञ्चालक रा. प्रा. वि. प्र. के सौजन्यसे श्री लाधूरामजी दूधोड़िया द्वारा प्राप्त हुई है।

प्रतियोंका परिचय

प्रति – क

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरकी प्रति, ग्रन्थ संख्या ७८७४। आकार ८.६×६ इञ्च। गुटका, पत्र संख्या ३०। प्रति पत्रमें पंक्ति संख्या १६, १७ और प्रत्येक पंक्तिमें अक्षर संख्या १४ से १७। लिपिकाल संवत् १८६५ चैत्र वदि १३। लिपिस्थान-जयपुर। वार्ताके अन्तमें कर्ताका नाम इस प्रकार लिखित है—

"ईती श्रीरावत म्होकमसीघ हरीसींघोतरी वात म्हाराजधिराज म्हाराज श्री बहादुर-सीघजी कृत संपूर्ण किसनगढ राजस्थान।"

प्रतिके अन्तमें बहादुरसिंहजीके विषयमें तीन कवित्त, एक गीत और मुहणोत शिवदास कृत "सूर-सती-संवाद" एवं महाराज नागरीदास कृत चोसर दोहा है। तीनों कवित्तों और गीतोंसे बहादुरसिंहजीके विषयमें महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। प्राप्त प्रतियोंमें यह विशेष विश्वसनीय है इसलिये मुख्य पाठ इसी प्रतिका ग्रहण किया गया है।

प्रति – ख.

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरकी प्रति, ग्रन्थ संख्या ६७१६। आकार ४.५×२.६ इञ्च। गुटका पत्र संख्या ७०। प्रति पत्रमें पंक्ति संख्या ७ और प्रत्येक पंक्तिमें

१. प्रतापगढ राज्यका इतिहास, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर पृष्ठ १८५।

अक्षर संख्या १३ से १५। लिपिकाल अज्ञात है। प्रतिमें कर्ताके नाम आदिका उल्लेख नहीं है और पाठ भी अशुद्ध है।

प्रति–ग

श्री रघुवीर लायब्रेरी सीतामऊसे प्राप्त प्रतिलिपि। प्रतिलिपिके प्रारम्भमें निम्नलिखित उल्लेख हैं—

"श्री रघुवीर लायब्रेरी, सीतामऊके लिये प्रतापगढ़ राज्यमें प्राप्य प्रतिसे नकल करवाई गई।"

सम्भवतः स्व० डॉ० गौरीशङ्कर हीराचंद ओझाने भी "प्रतापगढ़ राज्यका इतिहास" लिखनेमें इसी प्रतिका उपयोग किया हो।[1] मूल प्रति २२ पत्रोंकी है जैसा कि प्रस्तुत प्रतिलिपिसे प्रकट होता है। प्रतिके प्रारम्भमें ही कर्ताका नाम इस प्रकार लिखित है—

"महाराज बाहदरसिंघजी किसनगढ़रा राजारी करी"

प्रतिमें लिपिकर्ता और लेखन-कालका उल्लेख इस प्रकार हैं—

"इति श्री वारता समपूरण लीषीत म ब्राह्मण ओदीच भगनेस दौलतराम श्री कल्याणरस्तु सुभ भवस्तु ॥ श्री श्री ॥ संवत १९८ असाढ सुद ३ त्रीतीया भोमवासर ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

॥ गाथा ॥

काठलघर कमनीये नगर प्रताप दुगजह नपती ॥
उदयसिंह अभिधान ॥ भानुवंस भूपन कुल रान ॥ १ ॥
या वार्ता भषाया भगनीरामरा हातसूं लिषीणी ॥

प्रतिमें उक्त ज्ञातव्य महत्त्वपूर्ण होते हुए भी पाठ शुद्ध नहीं है।

प्रति–घ

यह राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुरसे प्रतिलिपि रूपमें प्राप्त हुई है। प्रतिलिपिके अन्तमें निम्नलिखित उल्लेख है—

"लिखितं महडू राजूराम जोधनगर मध्ये मयराजा श्री मानसिंहजी पाचनाथ ॥ श्री ॥ समत् १९०२रा चत्र सुद ११ सोमवासुरे ॥ श्रीरस्तु ॥ सुभ भवत ॥ कल्याण मस्तु ॥ वाच गुण तिणांस राजूरामरा श्री राम रांम बांचसी।

राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके लिये भगवतीप्रसादसिंघ बीसेन। जोधपुर, कार्तिक सुद ३, बुधवार, संवत १९९२ वि ता ३० अक्टूबर, १९३५॥"

इस प्रतिलिपिकी मूल प्रति अप्राप्य है। प्रतिलिपिका मूलसे मिलान नहीं हुआ है और पाठ भी संदिग्ध है।

---

१ स्व० डॉ० गौ० ही० ओझाने उस बातका प्राप्त होनेका उल्लेख किया है। प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास वल्लभ [illegible] प्रकाशन अजमेर पृष्ठ सं १८४।

प्रति–ङ

यह प्रति श्रीलाधूरामजी दूधोड़ियासे प्राप्त हुई है। प्रतिकी पुष्पिका इस प्रकार है–
"ईति श्री रावत मोहकमसिंघ हरीसिंघोतरी वात सपूर्ण। मिति असाढ वदि १२ सवत्त १८६७रा फतेग [ढ] मध्येः लिखितं वैष्णवं मगनीरामः"

वार्ता ६॥×७ इन्च आकारके १२ पत्रोंमें पूर्ण हुई है। प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या २६ और प्रति पंक्ति अक्षर सं० २५, २६ है। प्राप्त प्रतियोंमें यह प्राचीनतम है किन्तु इसके पत्र स० ५, ६ और ६ अप्राप्त हैं। प्रति जीर्ण और तेलसे भरी हुई भी है।

उक्त कारणोसे पूर्ण पाठ केवल क प्रतिका ही ग्रहण किया गया है और विशेष पाठान्तर अन्य प्रतियोंके दिए गए हैं।

पाठकी दृष्टिसे अ वर्गकी क और ख प्रतिया एक मातासे और आ वर्गकी ग घ ङ. प्रतिया अन्य माताकी पुत्रिया ज्ञात होती हैं। अर्थात् क ख. सगी बहिनें और ग घ. ङ सगी बहिनें हैं। अ और आ प्रतिया एक दूसरे वर्गकी मोसेरी बहिनें है।

वार्ता–लेखक बहादुरसिंहजी

राजस्थानके राज-परिवारोंमे अनेक व्यक्ति साहित्यकारोंके आश्रयदाता और साहित्यके प्रेमी ही नहीं स्वय साहित्यकार भी हो गये हैं, जिनका रचित साहित्य प्रचुर परिमाणमें उपलब्ध होता है। ऐसे ही प्रतिष्ठित परिवारोंमें राजस्थानके मध्य भागमें स्थित किशनगढका राज-परिवार भी है, जिसमे प्रसिद्ध सन्त और साहित्यकार नागरिदास अपर नाम सावत-सिंहका नाम विशेष उल्लेखनीय है। सांवतसिंहका जन्म स० १७५६ वि० और मृत्यु-समय स० १८१४ वि० है। इनकी छोटी-बडी ७७ रचनाओंका सग्रह प्रकाशित भी हो चुका है।

सांवतसिंह अपने पिता महाराजा राजसिंहजीके देहान्तके समय (सं० १८०५ वि०) दिल्लीमें थे। किशनगढ राज्यके उत्तराधिकारी होनेके नाते बादशाह अहमदशाहने नागरि-दासको किशनगढका शासक घोषित कर दिया। इसी समय किशनगढमे नागरिदासकी अनु-पस्थितिमे इनके लघु-भ्राता बहादुरसिंह राज्य-सिंहासन पर आरूढ हो गये और अपने बल एव कौशलसे लगभग ३३ वर्ष (सन् १७४९ ई० से १७८२) ई० तक राज्य किया।[1]

उक्त बहादुरसिंह, किशनगढ महाराजा ही प्रस्तुत वार्ताके रचयिता थे, जो किशनगढ राज्यके सस्थापक किशनसिंह राठोडकी ५वी पीढीमें राज्यके उत्तराधिकारी बने। नागरि-दासकी सहायताके लिए आगत विशाल बादशाही सेनाको भी वीरवर बहादुरसिंहने पराङ्मुख कर दिया, जिससे इनके रण-कौशलका परिचय मिलता है। बहादुरसिंह ९ वर्ष तक अपने सिंहासनकी सुरक्षाके लिए सफल सघर्ष करते रहे। इसी बीच नागरिदासने राज्य-प्राप्तिकी आशा छोड़ कर वृन्दावनवास और साहित्य-सेवा स्वीकार की। तदुपरान्त नागरिदासके पुत्र सरदारसिंहकी सहायताके लिए चढाई कर आई हुई सेनासे बहादुरसिंहने नीतिपूर्वक सधि कर सरदारसिंहको मरवाड, फतहगढ और रूपनगरके परगने दे दिये और राज्यमे शान्ति स्थापित की। उक्त घटनाओसे बहादुरसिंहके उदात्त चरित्र पर विशेष प्रकाश पड़ता है।

---

१ मारवाडका इतिहास, भाग २, प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, पृष्ठ स० ६८६।

प्रतापसिंहसे शेरबुलंदखाको शरण देनेका आग्रह किया। रावत प्रतापसिंहने महोकर्मसिंहके विशेष आग्रहसे औरङ्गजेबके कुपित होनेकी चिन्ता छोड कर शेर बुलंदखाको अपने आश्रममें रख लिया। इस घटनासे रावत प्रतापसिंह और महोकर्मसिंहको विशेष ख्याति मिली प्रतीत होती है जिसका उल्लेख स्व० डा० गौरीशङ्करजी हीराचदजी ओझाने भी अपने इतिहासमें किया है।[1]

कथाकारने अन्तमें पीपलोदा गांवके उपद्रवी डोडिया राजपूतोसे हुए प्रतापसिंह और महोकर्मसिंहके सघर्षका वर्णन किया है। डोडिया राजपूताने प्रतापसिंहके दरबारसे दक्षिणाके रूपमें धन प्राप्त कर लौटते हुए एक पण्डितको मार दिया। रावत प्रतापसिंहके समझाने पर भी डोडियोंने विपरीत उत्तर ही दिया कि उदयपुरके महाराणा और मुगलशासक भी हमारा कुछ नहीं बिगाड सकते–

'राणजी अर सूबो अ भी म्हासु टालो दे छ। थारी धरतीम म्हे चाहा सो करां छा पण म्हांरो नाम न लै छे। रावतजीनु आवणो ■ तो बेगा कीज असवारी। भली भात मनवार करस्या'।

डोडियोंसे हुए सघर्षके प्रसगमें कथाकारने अपनी युद्ध-सम्बन्धी जानकारीका विस्तृत परिचय दिया है। प्रस्तुत प्रसगमें कथाकारके कविहृदयका परिचय भी भली भांति प्राप्त होता है। वार्तामें वीररसका परिपाक करने हेतु कथाकार वीररसमें उमङ्गित होकर अनेक गीत, दूहा और कवित्त लिख देता है।

उक्त युद्ध प्रसगमें उत्तर मुगलकालीन युद्धोंकी प्रणाली और पतनोन्मुखी स्थितिका भी वास्तविक परिचय प्राप्त होता है। तब युद्धक्षेत्रमें सेनाके साथ दास-दासियो और तवायफोंकी सख्या सैनिकोंसे भी अधिक होती थी। इस विषयमें वार्ताकारने लिखा है—

'एक हाथसू गळबांही घाल्या एक हाथसू ही गोळी बाहे छ। × × × बदुकां अर प्याला एकण साथ भर रह्या छ।'

अन्तमें कथाकारने महोकर्मसिंहकी युद्ध-क्षेत्रमें प्रकट हुई विशेष वीरता और विजयका सजीव चित्रण किया है।

वीरमदे सोनीगरारी वात

तीसरी कथा 'वीरमदे सोनीगरारी वात' अर्द्ध ऐतिहासिक है। मुसलमान इतिहासकारोंने अल्लाउद्दीन खिलजीकी जालोर विजयका सक्षिप्त उल्लेख मात्र किया है।[2] वास्तवमें जालोरका साका राजस्थान ही नहीं, समस्त पश्चिमोत्तरी भारतकी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक

---

१ प्रतापगढ़ राज्यका इतिहास (वैदिक यत्रालय, अजमेर) पृष्ठ स० १८५।

२ समकालीन मुख्य इतिहासकार जियाउद्दीन बर्नीने जालोर विजयका उल्लेख इन शब्दोंमें किया है—'रणथम्भोर, चित्तोड मण्डलगढ, धार, उज्जैन मांडूवर, अलाईपुर, चन्देरी एरिज, सिवाना तथा जालोर जिनकी गणना सुव्यवस्थित प्रदेशोंमें न होती थी वालियों तथा मुक्तों के सिपुर्द हो गए (तारीखे फीरोजशाही, पृष्ठ ८६ खलजीकालीन भारत स० अतहर अब्बास रिजवी द्वारा सम्पादित)। वालीसे तात्पर्य प्रांतीय अधिकारीसे और

घटना है। इस युद्धके अवसर पर हजारों ही वीराङ्गनाओंको जौहर व्रतका पालन करते हुए अग्निप्रवेश करना पड़ा था और कान्हड़दे, वीरमदे, राणकदे जैसे अगणित वीरोंको मातृभूमिकी रक्षाके लिये आत्मोत्सर्ग करना पड़ा था। इस युगके विषयमें परम आदरणीय श्रीमान् मुनि जिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्यने, अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए लिखा है–

'वह समय भारतके लिए बड़ा भयङ्कर प्रलयकाल सा था। भारतकी प्राचीन संस्कृति और समृद्धिका सर्वनाश करने वाला वह असाधारण विकराल काल था। उस कालदंत्यके कोपानलसे शताब्दियोंसे सञ्चित और सर्जित भारतकी उस संसार-मोहिनी संस्कृति, समृद्धि, सार्वभौमता और सुरक्षितताका बहुत बड़ा भाग, कुछ ही क्षणोंमें भस्मीभूत-सा हो गया। पूर्व-देशका पाल-साम्राज्य, मध्यदेशका गाहडवाल साम्राज्य, दिल्ली-लाहोरका तोमर-राज्य, अज-मेर-सपादलक्षका चाहमान राज्य, अणहिलपुरका चालुक्य महाराज्य, अवंती-मालवका प्रमार साम्राज्य, एवं दक्षिण-देवगिरिका यादव राज्य – इस प्रकार भारतके पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण जैसे चारों खण्डोंमें, कई शताब्दियोंसे अपनी बलवान सत्ता जमाये हुये बड़े बड़े राज्य और उनके शासक राजवंश इस दुष्ट दावानलकी दुर्दैवी ज्वालाओंसे कुछ ही दिनोंके अन्दर देखते देखते दग्ध हो गये। अपार समृद्धिसे भरे हुए उनके असंख्य रत्नभाण्डार घड़ियोंमें लुट गये।[1]

अलाउद्दीनने अपनी दूषित मनोवृत्तिसे प्रभावित होकर भारतमें अनेक युद्ध किये, जिनमें हुए रक्तपात, लूट और अत्याचार वर्णनातीत हैं। ऐसे भीषण संघर्षोंके अवसर पर भी राजस्थानमें चित्तोड़, रणथंभोर, सिवाना और जालोरके शूरवीरों तथा वीराङ्गनाओंने अनुपम आत्मोत्सर्ग कर अपनी मानमर्यादा एवं गौरवाभिमानकी रक्षा की थी। चित्तोड़, रण-थंभोर और सिवाना युद्धोंके विषयमें तो मुस्लिम इतिहासकारों और इनके अनुयायी अन्य यूरोपीय एवं भारतीय इतिहासकारोंने यत्किञ्चित् प्रकाश डाला है किन्तु जालोरयुद्धके विषयमें 'कान्हडदे प्रबन्ध' के अतिरिक्त इस पुस्तकमें प्रकाशित 'वीरमदे सोनीगरारी वात', मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १ (पृष्ठ सं० २१२ से २२६), बांकीदासरी ख्यात (पृष्ठ सं०

मुख्तारका अर्थ जागीरदार है। यह याहिन अहमद सरहिन्दी नामक एक अन्य इतिहासकारने भी अलाउद्दीनकी सेना द्वारा जालोर विजयका उल्लेख इन शब्दोंमें किया है—'उसी वर्ष [७०० हि०, १३००–१३०१ ई०] कमालुद्दीन गुर्गने [अलाउद्दीनका एक सेनापति] जालोर पर अधिकार जमा लिया और विद्रोही कस्तमरदेवको [कान्हडदेसे तात्पर्य है] नरक भेज दिया। [तारीखे मुबारकशाही, खल्जीकालीन भारत ले० अतहर अब्बास रिजवी, पृष्ठ २०४)। हमारे अन्य भारतीय और पश्चिमी इतिहासकारों ने भी भारतीय भाषाओंसे और मुख्यत. राजस्थानी भाषामें प्राप्त ऐतिहासिक सामग्रीकी उपेक्षा करते हुए उक्त विषयमें विशेष विवरण नहीं दिया है।

१. कान्हडदे प्रबन्धका (राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित) प्रास्ताविक वक्तव्य, पृष्ठ ५६।

१५० - १५१) जैसे राजस्थानी इतिहास ग्रंथोंमें वर्णित प्रसंगोंकी ओर अभी तक इतिहासकारोंका ध्यान नहीं आकर्षित हुआ है।[1]

उक्त संघर्षोंमें प्रकट किये गये राजस्थानी वीराङ्गनाओंके बलिदानसे प्रभावित होकर अनेक समय कवियोंने काव्य ग्रन्थोंके रूपमें अपने उदगार व्यक्त किये और अनेक गद्य लेखकोंने वार्ताओंकी रचना की। इनमेंसे प्रमुख उल्लेखनीय प्राचीन कृतियां इस प्रकार हैं —

विषय	रचना
चित्तौड़ युद्ध —	१ मुहम्मद जायसीकृत पदमावत (र का १५९७ वि० स०)
	२ हेमरतनकृत गोरा बादल पदमिणी चऊपई (र का १६४६ वि०)[2]
	३ लब्धोदयकृत पद्मिनीचरित (र का १७०२ वि० स०)
	४ जटमलकृत-गोराबादल वार्ता (ले का १८२८ वि० स०)[3]
	५ भाग्यविजयकृत गोराबादल चोपाई (ले का १८०३ वि० स०)
	६ अज्ञात कर्तृक—गोराबादळ कथा।
रणथंभोर युद्ध —	१ नयचन्द्रसूरिकृत—हमीर महाकाव्यम (ले का १५४२ वि० सं०)
	२ जोधराजकृत—हमीर रासो अपर नाम हमीरायण (र का १७८५ वि० स०)
	३ ग्वालकविकृत—हमीर हठ
	४ चन्द्रशेखरकृत— हमीर हठ

---

१ बांकीदासरी ख्यात (सम्पादक श्रीयुत नरोत्तमदासजी स्वामी) और मुहता नणसीरी ख्यात भाग १ (सम्पादक श्रीयुत बद्रीप्रसादजी साकरिया) नामक ग्रंथोंका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'के अन्तर्गत राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा श्रीमान मुनि जिनविजयजी, पुरातत्वाचार्यके प्रधान सम्पादकत्वमें किया जा चुका है।

२ श्री रत्नमाणिक्य प्रधान संपादक राजा बलदेवदास बिड़ला ग्रंथमाला', नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसीने इस कृतिका रचनाकाल अनुमानतः सं० १७६० दिया है (बिड़ला ग्रंथमालामें प्रकाशित छिताई वार्ता, परिचय पृष्ठ २०)। वास्तवमें इसकी रचना महाराणा प्रतापके सौतेले भाई शक्तिसिंहके लघु भ्राता ताराचन्द्र कावड़ियाकी आज्ञासे सादड़ी नामक स्थानमें वि० स० १६४६ में हुई थी। सं० १७६० प्रतिका लेखन काल हो सकता है। यह कृति राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला में प्रकाश्यमान है। बिड़ला ग्रंथमालामें प्रकाशित उक्त वार्ताको देखनेसे प्रकट होता है कि कान्हडदेप्रबन्ध और हम्मीर महाकाव्यम जैसे इस विषयके प्रसिद्ध ग्रंथोंकी जानकारी भी उक्त ग्रंथमालाके सम्पादकको नहीं है।

३ 'जटमलकृत गोरा बादळ वार्ता' को श्रीरामचन्द्र शुक्लने अनुमानतः वि स० १६८० का माना है। हिन्दी साहित्यका इतिहास पृष्ठ सं ४२३ नागरी प्रचारिणी सभा काशी, नवां संस्करण।

जालोर युद्ध – १ कवि पद्मनाभकृत–कान्हडदे प्रबन्ध (र का १५१२ वि० सं०)
२ अज्ञातकर्तृक—वीरमदे सोनीगरारी वात
(लि का वि० स० १७६१)

सिवाना युद्धके विषयमें अब तक कोई रचना प्रकाशमें नहीं आई है। अल्लाउद्दीनके उक्त युद्धोंके विषयमें राजस्थानी भाषामें अनेक वीर गीत, कवित्त, दूहादि भी प्रचुर मात्रामें प्राप्त होते हैं, जिनमेंसे अधिकाश अप्रकाशित हैं।

'वीरमदे सोनीगरारी वात' के हमें ४ पाठ उपलब्ध हुए हैं। इनका परिचय निम्न-लिखित है—

प्रति–क

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरके हस्तलिखित ग्रन्थसग्रहमें गुटका क्रमाङ्क ३५५५में पत्र सं० १६२से १६८ तक लिखित। लेखनकाल वि० सं० १८२६। आकार ११×६ ५ इन्च। प्रतिपृष्ठ पंक्ति सख्या ३२। प्रति पक्ति अक्षर सख्या २८–२६। यह पाठ प्राचीन कृतियोंके साथ शुद्ध रूपमें लिखित है अत. इसको आदर्श मानते हुए पूर्ण रूपमें लिया गया है।

प्रति–ख

राजस्थान प्राच्यविद्याप्रतिष्ठान. जोधपुरके हस्तलिखितग्रन्थसंग्रहमें गुटका क्रमांक १२७०६ में १३ पत्रोंमें लिखित। आकार ६×५ ४ इन्च। प्रति पृष्ठ पंक्ति सख्या १६। प्रति पक्ति अक्षर सख्या ३६–४०। इस गुटकेमें दो कृतियोंके अन्तमें लेखनकाल वि० स० १७६१ दिया हुआ है अत लिपि भिन्नता होते हुए भी 'वीरमदे सोनीगरारी वात' का लेखनकाल भी यही ज्ञात होता है। इसके विशेष पाठान्तर टिप्पणियोंमें दिये गये हैं।

प्रति–ग

राजस्थानी ग्रन्थमाला, पिलानीके, प्रथम ग्रन्थ स्व० श्रीसूर्यकरणजी पारीक द्वारा सम्पादित 'राजस्थानी वाता' में, सन् १६३४ ई० में प्रकाशित चतुर्थ वार्ता। यह पुस्तक अब अप्राप्य है। वार्तामें प्रतिलिपिकर्ताकी भूलसे कुछ अश छूट गये हैं। साथ ही वार्ता सम्बन्धी विशेष विवरण भी नहीं दिया गया है। यह पाठ किस हस्तलिखित प्रतिसे ग्रहण किया गया है, यह भी नहीं लिखा गया है। इसके विशेष पाठान्तर भी टिप्पणियोंमें ग्रहण किये गये हैं।

प्रति–घ

राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुरके हस्तलिखित ग्रन्थ-सग्रहमें क्रमाङ्क १२५ पर लिखित गुटका। आकार ६×५ इन्च। प्रतिपृष्ठ पक्ति सख्या १४। प्रतिपक्ति अक्षर सख्या १८–२०। लेखनकाल 'सवत १८३६ वर्षे फागुण वदि ११ बुधवासरे श्रीगुंदवच नगर मध्ये।' यह प्रति हमें श्रीयुत नारायणसिंहजी भाटीके सौजन्यसे प्राप्त हुई है। प्रयत्न करने पर भी यह प्रति हमें सम्पादनके समय नहीं मिल सकी अतएव इसका विशेष उपयोग नहीं किया जा सका।

प्रस्तुत वार्ता एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना पर आधारित है किन्तु इसके विकास क्रममें कल्पना एवं कथानक रूढ़ियोंका भी प्रचुर प्रयोग किया गया है। कथाके प्रारंभमें ही एक प्रस्तर पुत्तलिकाके अप्सरा रूप प्राप्त करने पर पाठक चमत्कृत हो जाते हैं। तदुपरान्त कान्हड़देके अप्सरासे विवाह और कुमार वीरमदे उत्पन्न होने, अप्सराके पुनः अन्तर्ध्यान होने, जसलमेरके भाटी रावल लाखणसीजी द्वारा सूचित होने पर कान्हड़देके विषपानसे बचने, कान्हड़दे द्वारा अपनी कुमारीका रावल लाखणसीजीसे विवाह करने आदि घटनाओंका वर्णन हुआ है।

रावल लाखणसीजी अपनी प्रथम रानी सोढ़ीके महलमें आ कर विवाहके समय सोनीगरोंको अपने अनुचित व्यवहारसे रुष्ट कर देते हैं। सोनीगरी राजकुमारी भी 'हुयोंको तो सोनीगरोंरो सपरो पीण सोढ़ीरो होड न कर।" सुन कर लाखणसीजीसे रुष्ट हो जाती है और श्वसुरालय जाते समय परम वीर नींबा सिवाल्योत द्वारा हरण कर ली जाती है। आगे लाखणसीजी द्वारा नोहाराको आज्ञा दी जाती है –

'ऐसो भालो घणो तिणसुं एक वठा सिवलात मारा।'

कहने मात्रके लिए भाला तयार होता है किन्तु एक आशङ्का रहती है कि रावलजी वृद्ध हैं और नींबा युवक है। यदि कई मील दूरीसे मार जाने वाले भालेको नींबा छीन कर पुनः वार कर देगा तो क्या उपाय होगा? पुनः लोहाराका पारिश्रमिक दिया जाता है और जो भाला बना ही नहीं है उसको बुझाये जानेकी आज्ञा दी जाती है। इस प्रकार—

रावलजी सोनिगरी गमाय वठा।

कथामें प्राप्त उक्त हास्य प्रसङ्गसे पाठकोंका अनायास ही मनोरञ्जन हो जाता है।

आगे बीजड़िया सेवक जिसका पिता राजड़िया नींबाजी द्वारा सोनीगरी-हरणके अवसर पर हुए संघर्षमें मारा जाता है नींबाजी पर प्राणान्तक प्रहार करता है और नींबाजी भी मरते मरते वीरतापूर्वक बीजड़ियाको मार गिराते हैं।

पाप डाव सिखान वाला पजू पायक वीरमदेका विश्वासपात्र सेवक था और इसके द्वारा ही नींबाजी कान्हड़देके यहां उनकी दूसरी राजकुमारीके विवाहमें सम्मिलित हुए थे जहां उनको विश्वासघात कर मार दिया गया था। इस घटनासे वीरमदेके वीरचरित्र पर कलङ्क ही नहीं लगता वरन यह घटना जालोर-पतन और सोनीगरोंके विनाशका मूल कारण भी बनती है। पंजू पायक रुष्ट होकर तत्कालीन दिल्ली सुलतान अलाउद्दीनके पास पहुंच जाता है और अपनी विद्याका प्रदर्शन करता है। वहीं अलाउद्दीन पजूसे प्रसन्न होकर पूछता है कि तेरे बराबर खेलने वाला कोई दूसरा भी है?

पजू उत्तर देता है कि जालोरके राव कान्हड़देका पुत्र वीरमदे मुझसे सीखा हुआ है किन्तु मुझसे भी बढ़कर है। यह सुनने पर अलाउद्दीन वीरमदे को दिल्ली आमन्त्रित करता है। वीरमदेसे खेलते हुए पजू पायक मारा जाता है। वीरमदेकी रण चातुरी प्रसिद्ध होती है। इसी अवसर पर अलाउद्दीनकी पत्री जिसका नाम नहीं दिया गया है वीरमदेसे अपना पूर्व भवका वर्षाहिक सम्बन्ध बतलाती हुई वीरमदेसे विवाहकी इच्छा प्रकट करती

है। इसी प्रसङ्गमें काशीके साहूकार पुत्रकी एक अन्तर्कथा भी दी गई है। विवश होकर अलाउद्दीनको भी उक्त विवाहके लिए अपनी सहमति देनी पड़ती है।

तदुपरान्त कान्हडदे और वीरमदे विवाह-खर्चके नामपर प्रचुर धन ले कर जालोर आते हैं और दुर्ग-निर्माणके साथ ही युद्धकी तैयारी करते हैं। थोड़े समय पश्चात् नगा मुगलको मारकर शाही नजरबन्दीसे अपने देववंशी घोड़े भौंथडे पर सवार हो जालोर भागता है। इसी बीच भौंथडेके मरनेकी और भैंसेकी अन्तर्कथाए दी गई हैं। बलखके बादशाहने दिल्ली एक मोटा भैंसा भेजा, जिसके सींग बढ कर पीठ तक आये हुए थे। वार्त्ताकी सूचनाओंके अनुसार दिल्लीका कोई भी अमीर उस भैंसेको झटकेसे नहीं मार सका। लौटते समय जालोरके निकट वीरमदेने अपने पराक्रमसे भैंसेको सींग सहित काट दिया।

तदुपरान्त अलाउद्दीनकी चढ़ाईका और जालोरमें युद्धकी तैयारीका वर्णन है। बारह वर्ष जालोरका घेरा रहा किन्तु दुर्ग अजेय रहा। दुर्ग वालोंने एक युक्ति की। वीरमदेकी कुतिया ब्याई थी, उसके दूधसे खीर बनवाई और पत्तोंके लगा कर नीचे शत्रुओंकी ओर गिराई। सुलतानने देख कर सोचा – अभी तक तो दुर्ग वाले खीर खाते हैं। यह दुर्ग नहीं जीता जा सकता। इस प्रकार अलाउद्दीन घेरा छोड कर पुनः दिल्लीकी ओर चल पड़ता है।

आगे कथा पुनः एक नवीन मोड ग्रहण करती है। वीरमदे और इसके बहनोई दहिया-राजपूतके प्रीतिभोजमें कहा-सुनी हो जाती है। भूल वीरमदेकी होती है, क्योंकि वह एक अपराधमें मार कर लटकाये हुए दो दहियोंकी ओर सङ्केत कर अपने बहनोई दहियासे व्यंग करता है। दहिया राजपूत जाकर अलाउद्दीनसे मिलता है और वह पुनः लौटकर दुर्ग घेर लेता है।

तदुपरान्त वाघा वानर आदि राजपूतोंके वीरतापूर्वक युद्ध और दुर्गके विजित होनेका वर्णन है। वीरमदे युद्धके अन्तमें पकडा जाता है किन्तु उसने अपना पेट काट लिया था, अतः मृत्युको प्राप्त करता है। शाहजादी हिन्दूरीतिसे वीरमदेके मस्तकको गोदमें ले कर सती होती है और इसके साथ ही कथा पूर्ण की जाती है।

उक्त जालोर-युद्धके विषयमें प्राप्त प्राचीनतम राजस्थानी-प्रबन्ध कवि पद्मनाभ-विरचित 'कान्हडदेप्रबन्ध' है। इस काव्यमें जालोर-युद्धका मुख्य कारण अलाउद्दीनकी सेना द्वारा गुजरात पर आक्रमण करना और सोमनाथ मन्दिरको तोडकर मूर्तिको दिल्ली लेजाना बताया गया है। इस सम्बन्धमें कान्हडदेकी प्रतिज्ञा इस प्रकार है—

करी प्रतग्या राउल कान्हडि - तउ जिमीसइ धान।
मारी मलेछ देव सोमईउ अनइ छोडाविस वान॥ १८२[1]

'मुहता नैणसी द्वारा भी उक्त मतकी पुष्टि होती है—

'पातसाहरो डेरो सकराणै जालोररै गाव जालोरसूं कोस ६ हुवो। आ खबर कानडदेनूं हुई जु महादेव सोमइयानूं बाधनै पातसाह सकराणै आय उतरियो; तरै पातसाह

१ कान्हडदे प्रबन्ध, पृष्ठ ३८।

कन्ह काथड़ आलेचो रजपूत ४ बीजा भेळा मेलिया । थे पातसाहजीनूं कहन आवो – जु अतरा हिंदुस्थान मार चक्कर महादेव सोमइयो बाधन म्हार गढ निजीक म्हार गाव उतरिया सु भली न की । मोनूं रजपूत न जाणियो ।'[1]

काधळ भी सोमनाथकी मूर्ति बंधी हुई देखकर प्रतिज्ञा करता है—

पाणी तो विगर पिय सर नहीं नै धान राज छूटा खासां ।'[2]

अलाउद्दीनकी सेनासे हुए कान्हडदेके प्रथम युद्धमें कान्हडदेकी विजय हुई । इस विषयमें नैणसी लिखता है—

पातसाहनूं जीतनै कानडदेजी सोमइया कने आया । महादेवजीरी पींडी हाथ घातनै उपाडिया सु तुरत उपडिया सु महादेवजीरो लिंग सकराण थापियो । ऊपर देहुरो करायो । कानडदेजी हिंदुस्थानरी बडी मरजाद राखी ।'[3]

उक्त विवरणसे ज्ञात होता है कि युद्धके कारणमें वार्ता-लेखकका मत कवि पद्मनाभ और नैणसीसे नहीं मिलता । सुलतान अलाउद्दीनके हरममें कमलदेवी जैसी कुछ हिन्दू बेगमें भी थीं, उनमेंसे किसीकी शाहजादीका वीरमदे जैसे वीरसे विवाह करनेकी इच्छा प्रकट करना अस्वाभाविक नहीं है ।

'फुतुहुस्सलातीन' नामक प्रसिद्ध खिलजीकालीन इतिहासग्रंथके लेखक 'एसामी' ने देवगिरीके राजा रामदेवकी पुत्री छिताईका अलाउद्दीनकी बेगमके रूपमें उल्लेख किया है ।[4] इसी छिताईके विषयमें नारायणदास और रतनरंगने 'छिताई वार्ता' लिखी है ।[5] छिताईका उल्लेख कवि केशवदास (१६१२–१६७४ वि० सं०) ने करते हुए लिखा है—

ताहि छिताईको स नाई ।'[6]

मलिक मुहम्मद जायसीने भी अपने पदमावतमहाकाव्यके बादशाहचढाई खण्डमें छिताईका उल्लेख किया है—

बालु न राजा आपु अनाई । लीन्ह उदगिरि ली ह छिताई ।'[7]

---

१ मुंहता नैणसीरी ख्यात भाग १ राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर पृष्ठ २१६-१७ ।

२ वही पृष्ठ २१८ ।

३ वही पृष्ठ २१६ ।

४ खिलजीकालीन भारत, सय्यद रिजवी पृष्ठ २०८ । चौहानकुलकल्पद्रुममें अलाउद्दीनकी पुत्रीका नाम 'सीताई' दिया गया है, जिसने वीरमदेसे विवाह करनेकी इच्छा प्रकट की ।

५ छिताई वार्ता राजा चन्द्रदेवदास बिड़ला ग्रंथमाला नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।

६ वीरसिंहदेवचरित ह० ग्रं० ३८,१ आर्यभाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा काशी ।

७ पद्मावत सं० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल साहित्यसदन चिरगाँव झाँसी, पृष्ठ ४१२ ।

इसीप्रकार मुस्लिमकवि जानने "कथा छीताकी" लिखी जिसमें उक्त विषयका विवेचन है[1]। चन्द्रशेखरकृत हम्मीरहठमे अलाउद्दीनकी एक हिन्दू बेगम मरहट्टीका उल्लेख है—

"बेगम महति मरहट्टी माहताब जैसी"
जागती जुन्हाई जाके जोबन तरगनें। (छन्द स २६)

कवि जोधराजने हमीररासोमे अलाउद्दीनकी "चिमना" बेगमका उल्लेख कया है—

"चिमना बेगम एक ओर चितामनि गाहो"[2]

अमीरखुसरोने भी गुजरातके राजा कर्णकी पुत्री देवलदेवी और अलाउद्दीनके शाहजादे खिज्रखा सम्बन्धी एक प्रेमाख्यानकी रचना की थी।[3]

आगे चल कर हिन्दू लेखकोंका यथार्थ अथवा कल्पनाके आश्रयमे अलाउद्दीनकी हिन्दू बेगमोकी पुत्रियोका सबध हिन्दू राजकुमारोंसे जोडना स्वाभाविक ही हुआ। अलाउद्दीन जैसे शासकोकी क्रूरता और नृशसताके वातावरणमें अनेक जैन और मलिक मुहम्मद जायसी[4] जैसे सूफी मतोने भारतीय प्रेमाख्यानोके आधार पर प्रेम और सौहार्दकी धारा प्रवाहित की, जिससे अन्य लेखक विशेष प्रभावित हुए और इन्होने स्वमतानुसार एतद्विषयक आख्यानो और काव्योकी रचनाए की। "वीरमदे सोनीगरारी वात" इसी प्रकारकी एक प्रमुख रचना है। इसका पूर्वार्द्ध कल्पना और यथार्थका मिश्रण है, जिसमें अनेक भारतीय कथानक रूढियोका समन्वय हुआ है किन्तु इसका उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक भित्ति पर आधारित है, जिसका समर्थन अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोसे होता है। उदाहरणार्थ बाकीदासरी ख्यात और नैणसीरी ख्यातको लिया जा सकता है। बाकीदासरी ख्यातका उल्लेख इस प्रकार है—

---

१. हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयागके सग्रहमे सुरक्षित।

२. हमीर रासो, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। नीलकण्ठ विरचित।
'चिमनीचरित्रम्' नामक एक सस्कृत प्रमाख्यान भी प्राप्त हुआ है, जिसका सम्बन्ध म्लेच्छाधीश अलावर्दी खानकी बेगम मानिकी और प० दयादेव शर्माके प्रेम-प्रसङ्गसे है। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान ग्रन्थ-सग्रह, ग्रन्थाङ्क १२२६४।

३. फार्बसने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ रासमालामे लिखा है कि देवगढके (देवगिरिके) राजा शकरदेवसे कर्ण वाघेलाकी पुत्री देवलदेवीका विवाह निश्चित हो गया था किन्तु वह अलाउद्दीनके सेनापति अलफखा द्वारा हरली गई और बादमे इसका विवाह खिज्रखासे कर दिया गया। भाग प्रथम, उत्तरार्द्ध, सम्पादक श्रीयुत् गोपाल नारायणजी बहुरा, मगल प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ ३६३-३६६।

४ 'हिस्ट्री आफ दी खिलजीज' के लेखक डॉ० किशोरीशरण और श्री रामचन्द्र शुक्ल आदिने चित्तोडकी पद्मिनी सम्बन्धी कथाकी कल्पनाका श्रेय जायसीको दिया है जो सत्य नही जान पडता। वास्तवमे चित्तोडके वीरो और वीराङ्गनाओके सघर्षकी कथा जनतामे प्रचलित हो गई थी जिसका आधार जैन, सूफी और अन्य अनेक लेखकोंने लिया। इसकी पूरी जानकारी श्री शुक्ल आदिको नही रही।

"१७७८ – चहुवाण काहड़दे सावतसिघरो बेटो जिण सवत १३६८ वसाख सुद ५ बुदवार आठोगढ़ साको कियो ।

१७८० – साचोर १, थिराद २, काकरणधर ३, वाराही ४, कच्छ ५ गेहड़ो ६, ऊमर कोट ७ धीरमपुर ८ जसलमेर ९ वधनोर १०, पारकर ११, पूगळ १२ मारोठ १३ साळकोट १४, जांगळू १५ जाजासहर १६, तारण १७, हातेर १८, थावरो १९, सोजत २०, डोडियाळ २१, रोणक २२, माढ़ैन २३, निसोंगडो २४, आबू २५, भीलडी २६, सिवाणो २७, तारगो २८, राडद्रह २९, सूधो ३०, मेहवो ३१, भाद्राजण ३२, मडोवर ३३ सूराचद ३४ इत्यादिक ठिकाणांसु काहड़दे भड तेडाया ।

१७८१ – सोनगरा काहड़देसू जाळोररा महाजना अरज कीयी । रामो साकडियो बोलियो – मूग चोपा जव काठा गेहू साठ बरस ताई हू पूरीस । जतसी दोसी कहे – कपडा साठ बरस हू पूरीस । भोळ साह कहयो – असी बरस तेल हू पूरीस । सोलहण साह बोलियो – तीस बरस इधण हू पूरीस । भीम साह कहयो– म्हार हता गुड़ है, अठार बरस ताई छाक्सी गुडरा हीज गोळा बनायो । सादू साह कहे – म्हार दहीरा पहल भरिया है ।

१७८२ – जाळोररो गढ़ वहिय बीक भेळायो अलाउद्दीनरा नायवासू मिळन ।

१७८३ – सोनगरा काहड़दरा भड– भाई मानदे १, बेटो वीरमदे २, जत वाघेलो ३, जल दवडो ४, लूणकरण माल्हण ५ सोभित देवडो ६ अर्जसी ७, सहजपाळ ८ इत्यादिक ।"[1]

मुहता नणसीरी ख्यातसे भी वार्ताके उत्तरार्द्धका पूर्णरूपण समर्थन होता है । साथ ही जालोर टूटनेकी तिथि 'स० १३६८ वसाख सुदि ५ बुधवार' दी गई है । युद्धमें मारे जाने वाले प्रमुख योद्धाओंके नाम भी 'सोनगरा जाळोररा धणियारी ख्यातवार्ता' के आधार पर दिये गये हैं ।[2]

इस वार्तामें अलाउद्दीनको बहुत उदार और हिन्दुओंके प्रति सहानुभूति रखने वाला लिखा गया है । वास्तवमें वार्ताका लेखक मुगल सम्राट अकबर अथवा जहांगीरके उदार रुखसे प्रभावित है । इसीलिये अलाउद्दीनके लिये 'पातसाहिजी' जसा सम्बोधन है और उसके 'सिरोपाव' देनेका तथा काहड़दे द्वारा उसके सम्मुख 'पातिसाह रौन ग्नीरा छो । हू पाघरियो घररो धणी रजपूत छू' आदिका उल्लेख है । प्रस्तुत वार्तासे स्पष्ट होता है कि मुगलकालके आरंभमें हमारे अनेक लेखक अलाउद्दीनके अत्याचारोंको भूल चुके थे और हिन्दुओं एव मुसलमानोंके बीच पारस्परिक सौहार्द सम्बन्धोंको दृढ़तर करनेमें संलग्न थे ।

---

१ नागरीप्रचारिणी सभा सपादक श्रीयुत नरोत्तमदासजी स्वामी, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर पृष्ठ १५ ।

२ मुहता नणसीरी ख्यात भाग १ सपादक श्रीयुत बद्रीप्रसादजी साकरिया राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर पृष्ठ २१९ से २२६ ।

हमारे लेखकोका यह प्रयत्न किसी सीमा तक सफल भी हुआ था और तब हमारे देशमे हिन्दू – मुस्लिम सघर्षका अन्त हो गया था ।

अन्तमे हम पुस्तकमें प्रकाशित वार्ताओकी प्रमुख विशेषताओकी ओर पाठकोका ध्यान आकर्षित करना चाहते है—

१ कथाओका प्रारभ परम आकर्षक रूपमें हुआ है। "देवजी बगडावतारी" और "वीरमदे सोनीगरारी' वार्ताओके प्रारभमे क्रमश. दृष्टि-दोषसे तदगिदिनीके गर्भ रहने और पाषाण पुत्तलिकाके सजीव अप्सरा रूप होनेके प्रसङ्ग है तो "प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी" वातमें वर्णनात्मक राजस्थानी दूहे और अन्य सरस प्रयोग है ।

२ इन कथाओमे लौकिक और अलौकिक घटनाओका प्रसङ्गानुसार सफल सामञ्जस्य हुआ है। "देवजी बगडावतारी" और "वीरमदे सोनीगरारी" वातमे अलौकिक घटनाओका बाहुल्य है जिसका प्रधान कारण सम्बद्ध कथा-वस्तुओकी प्राचीनता है। परम्परित कथानक – रूढियोका सफल प्रयोग एव सामञ्जस्य भारतीय कथाओकी प्रधान विशेषता रही है। तदनुसार सम्बद्ध कथा-लेखकोके लिये "असंभव" जैसी कोई घटना नही है प्रसङ्गानुसार ऐसी घटनाओका औचित्य सिद्ध कर पाठको अथवा श्रोताओका विश्वास प्राप्त करना कठिन होता है। उक्त दोनो ही कथाओके अज्ञात लेखकोको इस कार्यमे पूर्ण सफलता मिली है।

३ तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक एव धार्मिक परिस्थितियोका नग्न, सरल एव स्वाभाविक यथातथ्य चित्रण भी इन वार्ताओमे मिलता है और सम्बद्ध विषयोके अध्ययनमें इनसे पूर्ण सहायता प्राप्त होती है ।

४ तीनो ही वार्ताए मूलत. राजस्थानके भिन्न-भिन्न भागोमे लिखी गई है। जैसे– "देवजी बगडावतारी वात" पर बीकानेर क्षेत्रका, "प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी" वात पर जयपुर-किशनगढ़ क्षेत्रका और "वीरमदे सोनीगरारी वात' पर जैसलमेरका प्रभाव लक्षित होता है किन्तु इससे इन वार्ताओके राजस्थानी भाषा-सौन्दर्यमे कोई अभाव नहीं परिलक्षित होता और न अनेकताके ही दर्शन होते हैं।

५ वास्तवमे तीनो ही वार्ताओकी भाषा पूर्ण साहित्यिक राजस्थानी है और कुशल लेखको द्वारा लिखित है। 'प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात' तो राजस्थानी भाषाकी एक परम उत्कृष्ट कृति है। इस वार्ताकी ग और घ प्रतियोके अनुसार इसमे सर्वत्र दवावैतका प्रयोग हुआ है। रघुनाथ रूपक[1] और रघुवरजसप्रकास[2] जैसे ग्रन्थोमे गद्यबध और पद्यबध नामक दो प्रकारके दवावैतोका विवरण मिलता है। हमारी रायमें राजस्थानी भाषामें दवावैतका प्रयोग फारसी 'दुवेती' के प्रभावसे हुआ है। गद्यमें तुक मिलानेकी प्रवृत्ति इस्लामी साहित्यके प्रभावको भी सूचित करती है।[1] वार्तामें अथसे इति तक दवावैतका स्वाभाविक निर्वाह कुशल कलाकारका ही कार्य होता है।

६ प्रस्तुत कथाओमें विशुद्ध भारतीय कथा-शैलीके दर्शन होते है। कालान्तरमें भारतीय कथा साहित्यका विकास राजस्थानी भाषामें लिखित ऐसी सहस्रो विभिन्न विषयक

१ विशेष देखिये – दवावैत सज्ञक हिन्दी रचनाओकी परपरा, श्रीयुत् अगरचन्दजी नाहटा, भारतीय साहित्य, विश्वविद्यालय, आगरा, अप्रेल १९५६, पृष्ठ २१७। तारीख फिरोजशाहीमे भी उल्लेख है कि दिल्ली सुलतान जलालुद्दीन खिलजी "दुवेती" लिखता था। खिलजीकालीन भारत, पृष्ठ १५।

कथाओंमें ही परिलक्षित होता है। भारतीय कथा लेखकोंको पश्चिमी कथा शैलीके अन्धानुकरणको छोड़ कर ऐसी ही भारतीय कथाओंसे मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए जिससे वे भारतीय मौलिकताकी रक्षा करते हुए अपनी रचनाओंको अनपेक्षित विदेशी प्रहारसे रक्षा कर सकें।

७ पश्चिमी शैलीमें लिखित कथाएं ८-१० वर्षोंमें ही समयके विपरीत 'असामयिक' हो जाती हैं किन्तु ऐसी राजस्थानी कथाओंका सौन्दर्य एवं आकर्षण सदियोंसे ही वर्षोंसे बना हुआ है। आधुनिक युगकी सर्वकालिक तत्कालीन परिस्थिति एवं चकाचौंधमें भी प्रस्तुत कथाएं पाठकोंका मनोरञ्जन कर उन्हें उद्देश्यके अनुरूप प्रभावित करनेकी क्षमता रखती हैं। श्रेष्ठ कलाकृति सदा ही प्रभावशाली बनी रहती है।[1] ऐसी कथाओंकी श्रेष्ठताका इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता है ?

८ इन कथाओंसे पाठकोंका कोरा मनोरञ्जन ही नहीं होता वरन् जीवन क्षेत्रमें कर्तव्य परायणता, कष्टसहिष्णुता, आत्मत्याग एवं बलिदान, सत्यनिष्ठा, वीरता, वचननिर्वाह, विद्याप्रेम, नीतिमत्ता, कौशल, कलाप्रेम और न्यायप्रियता आदि सद्गुणोंकी सहज प्रेरणा भी प्राप्त होती है। आधुनिक पश्चिमी शैलीकी कथाओंमें प्रायः ऐसे तत्त्वोंका अभाव होता है।

९ राजस्थानी कथाओंमें प्रसङ्गानुसार पद्यांश देनेकी प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है। प्रस्तुत कथाओंमें भी यथाप्रसङ्ग एवं यथास्थान पद्यांश लिये गए हैं और इनसे कथा प्रवाहमें अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करनेमें लेखकोंको सहायता मिली है।

१० इन कथाओंमें पात्रोंका चरित्र चित्रण और घटना संगठन पूर्ण मनोवैज्ञानिक रीतिसे हुआ है। घटना विकास अथवा चरित्र-विकासके पूर्व कारण स्पष्ट हो जाते हैं जिनसे पाठकोंको किसी प्रकारकी अस्वाभाविकताका बोध नहीं होता।

११ रूप-वर्णन और दृश्य चित्रणमें लेखकोंको विशेष सफलता मिली है। ऐसे प्रसङ्गोंके अवसर पर लेखकोंने चित्रकार जैसी सूक्ष्म अभिव्यक्तिका अवलम्बन लिया है। वस्तु-नाम परिगणनासे कहीं-कहीं ऐसे शब्द चित्र बोझिल अवश्य बन गये हैं किन्तु परम्परानुसार ऐसे प्रयोग पाठकोंको अरुचिकर नहीं प्रतीत होते।

१२ कथा अथवा कहानीकी प्रमुख विशेषता यह है कि उसको सुन कर भी आनन्द प्राप्त किया जा सके। कहानीसे तात्पर्य यही है कि वह कही जा सके। प्रस्तुत राजस्थानी कथाएं इस कसौटी पर भी खरी उतरती हैं क्योंकि इनको मौखिक परम्परासे ही हमारे लेखकोंने प्राप्त किया है। ऐसी हजारों कथाएं हमारे विद्याप्रेमी पूर्वजोंके प्रशंसनीय प्रयत्नोंसे लिपिबद्ध हुई थीं और हजारों कथाएं अब तक मौखिक परंपरासे प्रचलित हैं।

राजस्थानी कथा साहित्यमें भारतीय ज्ञान विज्ञानका अखण्ड कोष आज भी सुरक्षित है और यह इस वैज्ञानिक युगमें प्रकाशनकी प्रतीक्षा करता हुआ धीरे धीरे कराल कालके गालमें समाता जा रहा है इसलिए सम्बद्ध समस्त व्यक्तियोंको तुरन्त ही तत्परतासे प्रयत्नशील हो जाना चाहिए।

---

१ क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। —कालिदास अभिज्ञान शाकुन्तल।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके अन्तर्गत राजस्थान सरकार और केन्द्रीय शासनकी संयुक्त सहायतासे चालू आर्थिक वर्षमें ही प्रस्तुत पुस्तकका प्रकाशन किया जा रहा है। पाठान्तर्गत शब्दार्थ, टिप्पणियाँ और परिशिष्टमें आवश्यक ज्ञातव्य पाठकोंकी सुविधाके लिए प्रस्तुत किये गये हैं।

प्रतिष्ठानके सम्मान्य सञ्चालक परम श्रद्धेय पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजीने राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ के अन्तर्गत प्रस्तुत पुस्तकको प्रकाशित करनेकी अनुमति प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया है जिसके लिए मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही प्रतिष्ठानके उपसञ्चालक श्री गोपालनारायणजी बहुरा, एम. ए. ने इस कार्यमें मेरा मार्ग-प्रदर्शन किया है तदर्थ मैं उनका विशेष आभारी हूँ। पुस्तक-सम्बन्धी सामग्री प्रदान कर सम्पादनमें सहयोग देने वाले सज्जनोंके प्रति भी मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर, दशहरा पर्व, सं० २०१७ वि०

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया,
एम. ए., साहित्यरत्न

वात देवजी बगडावतांरी

अथ वात[1] देवजी[2] बगडावतांरी[3]

सहर अजमेर वडो गढ। तेथ राजा वीसलदे चहुवाण[4] राज्य करे। वीसलदेरे वास[5] हरराम चहुवाण रहै। सु वडो सिकारी, शबदवेधी[6]। सु सिकार नित्य खेलै।

तिण नगर माहे कोको साह रहै। तिणरै बेटी नाम लीला। सु बालरंड[7]। तिका तपस्या करै पोहकररा पाहुडा माहे[8]। सु इसडी[9] तपस्या करै। मास मास अन्न न खावै। निरवस्त्र रहै। धूप सीत वरषा माथै[10] सहे।

एक दिन पाछिलो राति लीला पोहकरजीमे स्नान करि नीसरी।

---

१ वात – स वार्ता कथा राजस्थानी गद्य साहित्यका एक प्रकार। राजस्थानी साहित्यमें हजारों हा वार्ताए लिपिबद्ध और मौलिक रूपमे प्राप्त होती हैं।

२ देवजी – देवनारायण, राजस्थानके एक लोक-देवता जिनकी उपासना मुख्यत राजस्थान मध्यभारत और गुजरातके गूजर जातिके स्त्री-पुरुष करते हैं। देवजी बगडावतोंमें प्रमुख भोजाकी गूजर स्त्री सढूके पुत्र थे। देवजीका विवाह परमार क्षत्रिय कन्यासे हुआ था।

३ बगडावतांरी – बगडावतोंकी अजमेरके हरराम चोहानका एक पुत्र बाघा हुआ। बाघाके २४ पुत्र स बाघापुत्र >बाघापुत्त> बाघाउत> बाघावत> बगडावत नामसे प्रसिद्ध हुए। बाघका पुत्रसे अथवा बाघ रावत' से बगडावत कहे गये। बगडावत बन्धुओंके वीर चरित्रसे सम्बन्धित एक महाकाव्य राजस्थानमें आज भी गाया जाता है।

४ वीसलदे चहवाण – अजमेरका प्रसिद्ध चोहान शासक विग्रहराज जो वीसलदे रासका नायक भी है।

५ वास – स निवास यहां सरक्षणमे रहनेसे तात्पर्य है।

६ शबदवेधी – शब्द ध्वनि सम्बन्धी स्थान पर अचूक निशाना लगाने वाला।

७ बालरंड – बालविधवा।

८ पोहकररा पाहडां माहे – पुष्करके पहाडोंमें।

९ इसडो – एसी।

१० माथ – मस्तक पर।

आगै हररांम सीह मारि माथौ वाढि[1] ले सांम्हौ विपरीत रूप आयो। ईयैरी[2] नजर पडीयो। ईयैरै पेट गरभ रह्यौ। परमेश्वरजीरी आग्या हुई ताहरा[3] पेट वधीयौ[4]। ताहरा लोका मांहे वात हुई। कथ-कथ हुई[5]।

यूं करता राजा वीसलदेनुं खवरि हुई। ताहरां कहै—राजा आ वात किसी जु लीलानु गरभ छै। जिका इसडी तपसिण तिकेनु गरभसु कासूं जांणीजै।

ताहरां राजा लीलानुं वोलाई[6]। वोलाइ नै वात पूछो। थारी तपस्यामे भंग क्यु हुवौ। मोनु[7] साच कहि। ताहरा लीला कहै। महाराज जो होणी हुती सो हुई पिण मोनुं दोप नही लागै छै। श्री परमेसरजी रची सु क्यु मिटै।

ताहरां राजा कहै छै। कहौ। ताहरा लीलां कहै। हुं पाछिली राति उठि नै श्री पोहकरजी स्नांन करी नै तीर्थ महा नीसरी। तिण समईयैं[8] एक पुरुप विपरीत रूप हुयौ सीहरो माथो लीयैं मोनु मिलीयौ। तीयेरे दरसणसु[9] मोनुं गरभ रह्यौ।

राजा विचारी जु कासू रूप औ। लोक हजूर[10] कहण लागा। माहाराजा परमेस्वरजीरां लीला कौण जांणे। कीयैं[11] ठाकुरांरी गति पाई छै। ताहरां राजा कहै। खवर करो जु कुंण मरद हुतौ। ताहरा सिगळांनु[12] खवर हुती जु सीह एक हररांम चहवांण मारीयौ

---

१. वाढि – काट कर।

२ ईयैरी – इसकी।

३ ताहरां – तव, तदुपरान्त।

४. वधीयौ – वर्द्धित हुआ, वढा।

५. कथ-कथ हुई – वार-वार चर्चा होने लगी।

६ वोलाई – वुलाई।

७. मोनु – मुझे।

८ तिण समईयैं – उस समय।

९ तीयेरे दरसणसु – उसके दर्शनसे।

१० लोक हजूर – दरबारी लोग।

११. कीयैं – किसने।

१२. सिगळांनु – सबको।

हुतौ । मास ५-६ हूवा । आ वात सरव[1] लोक जाणै छै ।

ताहरा राजा कह्यौ जु हरराम चहवाणनु बुलावौ । ताहरा हरराम‌नु बुलाय ल्याया । हरराम आय राजारो मुजरो कीयो[2] । ताहरा राजा हररामनु पूछीयो जु हरराम तैं सीहरो सिकार कीया कितरा मास हूवा । कह्यौ माहाराजा मास ५।६ हुवा । कह्यौ माहाराजा हु सिकार रोज करू छु । दिन ऊगतैं मु सिकार करि अपूठो आऊ छु[3] । ताहरा राजा कहै । सीह मारीयौ तीयैं दिन तैं कयु दीठो । ताहरा हरराम कहै । माहाराजा लीला तपस्विण स्नान करि तीथ महा नीसरतो दीठी । सीहरो मार्यो लीयैं हु दीठो ।

ताहरा राजा विचारीया जु हररामसु लीलानु गरभ रह्यौ । ताहरा राजा हररामनु कहै । हरराम तु आ घरे वास[4] । घरे ले जाह ज्यु थारो दुहुवारी पण रहै[5] ।

ताहरा हरराम कहै । माहाराजा मोमें[6] दोष कोई छै नही । श्री परमेश्वरजी जाणै छै । हु किसै वासते ईयैंनु ले जाऊ । ताहरा राजा कहै म्हाहरो कह्यो मानि ईयैंनु घरे ले जाह । ताहरा हरराम घरे ले गयो । हिव[7] लीला ग्रूणै[8] बैठी रह ।

पूरा दिन हूया ज्यु बेटो जायो । ज्यु छोर[9] दीठो मुहडो[10] सीहरो पिंड[11] मनुष्यरो । ताहरा दाया नाठधा[12] । कह्यौ औ कौण सरूप । ताहरा सिगळा सुणायो । कह्यौ जी कपडै लपेटि नाखि द्यो[13] । ताहरा लपेटि नैं

१ सरव – सब सभी ।
२ मुजरो कीयो – अभिवादन किया ।
३ अपूठो आऊ छु – उलटे मुड़ आता हूं ।
४ आ घरे वास – इसको घरमें बसा इसके साथ घर-वास कर ।
५ थारो रह – तुम दोनोंका प्रण रहे ।
६ मोम – मुझमें ।
७ हिव – अब ।
८ ग्रूण – कोनमें ।
९ छोर – बालक ।
१० मुहडो – मुह, मुख ।
११ पिंड – शरीर ।
१२ नाठधा – भागी ।
१३ नाखि द्यो – डाल दो ।

जांगलमैं नाखि आया। ईयै ऊपरि समली[1] छाया कीधी। नाग आय माथै छत्र करीयो। अंगूठो चूसण लागो।

तितरै लोके दीठो। गांव माहे खबर हुई। लोक देख-देख आवै। सीह जायौ सहर माहे। लोक सरब कहण लागा। राजानु खबरि हुई। अस्त्री सीह जायो[2]।

ताहरां राजा हररामनु बोलायो। पूछीयो। हरराम हकीकत कही। ताहरा राजा कहै। हरराम टाबर[3] ले आवौ। नांखौ नां। ताहरा हरराम अरज की। महाराजा औ मोटो हुसी। सवारे खून करिसी। ताहरा महाराजा मारिस्यां। नाहरा म्हाहरो वास छूटि[4]। सीहिवारु काची व्याधि छे[5]। परहौ मरो। म्हांनु कोई दुख न सुख।

ताहरां राजा बीसलदे कहै। म्हांनु देखणो छै। देखां औ कासूं ऊपजे। किसड़ौ हुवे। तरै वास्तै राखा छां। थे निसक पालो। थानु ईयैनु तीन गुनह[6] रोज माफ छै।

ताहरां हरराम बांह बोल[7] लेनै घरे आयौ। आयनै बात कही। जायनै जंगळ महासु ले आयौ। धाय राखी। ईयंनु पाळीयौ। मोटो हूवौ। रमै-खेलै[8]। छोकरां नास जाय[9]। कोई बीहतौ[10] बोलै नही।

वरस १०।११ रो हूवौ। सावणरी तीज आई। छोकर्‌यां रमण नीसरीया[11]। आगं हींडा[12] हुता सु वाधै ऊंचा नांखि दीया[13]।

---

१ समली – सावली, चील।
२ अस्त्री सीह जायो – स्त्रीने सिंह उत्पन्न किया।
३ टाबर – बालक।
४ वास छूटि – निवास, घर छूट जावेगा।
५ सीहिवारु काची व्याधि छै – सिंहका बालक अभी कच्ची व्याधि है।
६ गुनह – गुनाह, अपराध।
७ बाह बोल – प्रण, वचन, प्रतिज्ञा।
८ रमै-खेलै – खेलता है।
९ नास जाय – भाग जाते हैं।
१० बीहतौ – डरता हुआ, भयसे।
११ छोकर्‌या रमण नीसरीया – लडकियां खेलने निकली।
१२. हींडा – झूले।
१३ नाखि दीया – डाल दिये।

दावड्या[1] आया ईयनु कहै । बाघा म्हानु हींडण दे । दात काढै । निहोरा करै[2] ।

ओ कहै आडे आक[3] हींडण न देऊ । ताहरा छोकरचा सलामा करै । वह हींडण दे । ताहरा कहै हींडण कह्यो देंही । ताहरा ओ कहै मो दोला फेरा ल्यो[4] तौ हु हींडण देऊ । ताहरा छोकरचा कह्यौ । लेल्या । अर कह्यौ घरे जायनै बात मत कह्या । तौ कह्यौ जिके परणिया छै तिके पसवाडे[5] हठो । कंवारचा छै तिके जुदा हुवौ ।

ताहरा छोकरचा बाघै दोला फेरा च्यार लीया । ताहरा बाभण १ पागुलो ओथ पटीयौ हुतौ[6] तिकेनु बाघै कह्यौ । रे तू बाभण छै । जे भणीयौ[7] छै तौ तू वेद पढ । का मागीम । ताहरा बाभण बीहतै[8] क्यु भणीयौ ।

ताहरा हीड उतारि दी । छोकरचा हींडण लाग्या । रमण पेलण लाग्या । रम पेल घरे गया ।

हिवै ईयारा माहा सूझै नही[9] । घणु ही[10] ढूढि थाया । बरस १।२ हूवा । छोकरचारा साहा ऊघडै नही[11] । ताहरा लोक चिंतातुर हूवा । लोकानु वडा सोच हूवो । साहो सूझै नही ।

ताहरा वडेरा[12] लोक एकठा हूवा । दावड्या तेडीया[13] । बात

---

१ दावड्यां – लड़कियां ।
२ निहोरा करै – आग्रह करती हैं, गरज करती हैं ।
३ आडे आक – कभी नहीं, किसी भी अवस्थामें, 'आंक' से तात्पर्य विधाताके लेखोंसे है अर्थात विधाताके लेख विरुद्ध होने पर भी ।
४ मो … ल्यो – मेरे चारों ओर फेरे लो । फेरा-परिक्रमा, विवाह सम्बन्धी एक प्रथा ।
५ पसवाडे – पीछे ।
६ पांगुलो … हुतौ – परोंसे क्षीण उस स्थान पर पड़ा था ।
७ भणीयो – पढ़ा हुआ ।
८ बीहतै – डरते हुए ।
९ ईयारा … माहा – इनके विवाह-लग्न नहीं दिखाई देते ।
१० घणु ही – बहुत ही ।
११ ऊघडै नहीं – निकलते नहीं, प्रकट नहीं होते ।
१२ वडेरा – बड़े ।
१३ तेडीयां – बुलाया ।

पूछी । घणौ आग्रह कीयौ । ताहरा दावड्या कहै । एक दिन म्हांनु चीता आवै छै[1] । जु ईयै वाघलै डाकिण पावै[2] म्हांनु कह्यौ जे झाडपौ दोळा फेरा ल्यो तो थानु हीडण देऊ । ताहरा मैं भोल्यां समझ्या नही । ओ झाडपौ पकड़ि ऊभौ । म्हानु कह्यौ फेरा ल्यो । ताहरां म्हा फेरा लीया । पछै हीड उतारि दी । म्हे हीडं हींडीयां । एक उ वात चीता आवै छै । वीजी[3] काई जाणा नही ।

ताहरा लोक एकठा हूवा । जाइनै[4] राजा वीसलदे आगै पुकारीया । राजा तो तीन गुनहा[5] माफ कीया हुता सु राजा कासू कहै । ताहरा राजा कहै ईयारै भागरी वात । एक टावर[6] मर जाह छै । जाणीया मरि गया । अै टावर ईयैनु द्यौ ।

ताहरां हररामनु तेड़ीयौ । तेडाइनै कह्यौ । थारै वेटै ईयारच्या[7] वेटच्यां दोला फेरा लीया । हिवै हुवणहार । अै दावड्यां थारै वेटैनु परणाय[8] नै ईयारौ भरण पोपण तू कर । ताहरा हररांम सोच कीयौ जु राजा तौ आ वात कही । हिवै हरराम घरे आयौ । आइनै चिता करण लागौ । इतरच्यांनु पवाडीजै कठा[9] । कपडा कठा दीजै । वैठौ सोच करै छै ।

ताहरा वाघो आयौ । कहण लागो । चिता न करौ । हु भलां करीस । म्हारी दाइ आइसी[10] तितरच्यां परिणीजीस । वाकी रया छोडि देईस । कुवारी सौ वरां ।

ताहरा अै राजी हूवा । भली कही । ताहरां सरव लोक जाइ

---

१ म्हानु　छै – हमें याद आती है, हमें स्मरण होता है ।

२ डाकिण खावै – दुष्ट, डायन द्वारा खाये गये, अपशब्दोके रूप में एक प्रयोग ।

३ वीजी – दूसरी, द्वितीय स　>वेय>वीजो ।

४ जाइनै – जा करके ।

५ गुनहा – अपराध ।

६ टावर – बालक ।

७ ईयारच्या – इनकी ।

८. परणाय नै – विवाह करके, परिणय सं –परणवो राज ।

९ खवाडीजै कठा – भोजन कहासे दिया जावे ?

१० दाइ आइसी – सुविधा होगी, इच्छा होगी ।

आपरचा दावडचा ले आया। आणि ऊभ्या कीया[1] । ताहरा इयै उवा छोकरचा महा १३ टाळिया । बीज्यानु मूगा पुसी भराय न[2] छोटि दीया । कह्यौ जावौ । मै थामु काम कोई नही ।

ताहरा बामण दौडीयौ । कह्यौ मै वेद भणीयौ हुतो । सु मोनु ही काई दे । ताहरा वाघो बोलीयौ । कह्यौ श्रै १३ छै । ईया महा एक तू लै टाळिनै । ताहरा ईयै बाभण एक जाइनै फूटरी[3] देषिनै टाळि लीधी। बाभण पोडो हुतौ तिकै आणिनै घर वासी[4]। पछै उवा जातरी ढेढणी[5] हुई । तीयैरै पेटरा गरुडा हूवा । ढेढारा गुरु हूवा । ईयै बारह १२ परणी । तीयारा बेटा २४ हूवा । श्रै वधीया घणा हूवा ।

हिवै ईयै वाघेरा बेटा २४ हूवा छ । मु ईयारी सगाई कोई न करै । ताहरा राजा कन्है[6] गया । जाइ राजासु श्ररज की । महाराजा म्हासु सगाई कोई न करै । ताहरा राजा सिगळानु[7] पूछीयौ । सु कहै । ईयासु सगाई कहै न करा । ताहरा राजा गूजर[8] तेडीया । कह्यौ ईयानु बेटया द्यौ । ताहरा श्रै बेटी न दे । ताहरा राजा जोर घालीयौ[9] । कह्यौ इयानु परणावौ छोडु नही ।

ताहरा गूजरा हाकारो भणीयौ[10] । कह्यौ रे एक छोरू[11] मरि जावै छै । राजा कहै छै तो परणावौ । ताहरा कह्यौ जी परणाविस्या । ताहरा राजा गूजर छाडीया । पछै वघडावतासु गूजरा सगाया[12]

---

१ ऊभ्या कीया — खडी की ।

२ मूगा भराय न — मूग (एक प्रकारका रत्न) हाथोंमें दे कर ।

३ फूटरी — सुन्दर ।

४ घर वासी — घरमें बसाया ।

५ ढेढणी — एक प्रकारकी पिछडी जातिकी ।

६ कन्है — पास, समीप ।

७ सिगळानु — सभीको ।

८ गूजर — गूजर एक जाति जो मुख्यत कृषि और पशुपालनका काम करती है ।

९ जोर घालीयो — जोर डाला दबाव डाला ।

१० हाकारो भणीयो — स्वीकार किया ।

११ छोरू — बालक ।

१२ सगाया — विवाह सम्बन्ध ।

कीयां। साहौ[1] थापि परणाया। औ परणिया। हिवै वधीया[2]।

आदमी घणा हूवा। अजमेर माहि मावैं नही। ताहरां वास करणनु ठोड जोवण लागा[3]। ताहरा गाण भणाय[4] गणो वाघट पडिहार[5] राज करैं। ऊवंनु जाय मिळीया। कह्यौ म्हांनु वास करणनु २४ ठाम[6] द्यौ। म्हे थाहरी चाकरी करिस्या नं हासिल[7] ही देस्या।

ताहरा राणेजी दीठौ। आ वात भली। चाकरी करैं नै हासल पिण देवैं। औ रजपूत भला वासीजै। ताहरा रांणै घणी दिलासा[8] देनै सिरपाव देनै वासीया। २४ सांनु चौवीस थंडा मडाइ दीया[9]। ईया २४ गांम वसाया। तिके २४ से वघडावतांरा गोठ[10] कहीजै। ईयारैं घणी भेसि घणी गाइ वडौ वधारी साहिवी करैं छै।

हिवै एक अतीत[11] पाहडां माहे तपस्या करैं। वडौ सिध। ईयैरी सेवा भोजौ करैं। सिगळा भाईयां माहे वडैरौ[12] भोजौ छै। सु अतीतरी सेवा करैं। एक दिन अतीत कह्यौ। भोजा "मै चलुगा। तु परभाते का आए।"

औ सवारो ही ऊठिनै अतीतरैं दरसणनु गयौ। आगै अतीत ऊभौ छै[13]। कडाहे माहे तेल ऊकळै छै[14]। तेल लाल रंग हूवौ छै। आगै अतीतरे पगे लागै। अतीत कह्यौ। बाबा भोज आव। कह्यौ नाथ

---

१ साहौ – लग्न।
२. हिवै वधीया – अब बढे।
३ ठोड...लागा – जगह देखने लगे।
४. भणाय – भिनाय, अजमेरके समीप एक प्राचीन जागीरी ठिकाना।
५ पडिहार – परिहार, एक क्षत्रिय जाति।
६ ठाम – स्थान स >थाण>ठांम।
७ हासिल – कृषि कर।
८. दिलासा – तसल्ली।
९. थडा' दीया – निवास-स्थान बनवा दिये।
१० गोठ – सं गोष्ठि, यहा समूह या मिलनसे तात्पर्य है।
११. अतीत – तपस्वी।
१२. वडैरै – वडा।
१३. ऊभौ छै – खड़ा है।
१४ ऊकळै छै – उबलता है।

"मै आया।" ताहरा जोगी कहै। भोज तीन फरा ले ज्यु मै 'तुभकु' विद्या देऊ।

ताहरा भोज कहै "नाथजी पहली फेरा गुरु लै नै मुझकु दिखावै तौ मे लेऊ।" ताहरा जोगी फेरा लेण लागौ। ताहरा भोज जोगीनु कडाह माहे नापि दीयौ[1]। पडतौ जोगी कहै छै मैं तौ तोनु घात घाली हुतौ[2] पिण तू समझो (ह्यौ) पिण म्हारो मायौ सावतौ रापे[3]। हाथ पग बाढे[4]। फेर आइ जासी थारा वडा भाग। हु सोनैरो पोरसौ[5] हुईस।

जोगी तेल माहे पडीयौ। सोनैरौ पोरसौ हूवौ। हिवै ईया पोरसौ घरमे आणि रापियो। सोनो वेचीजे। खाईजै विद्रवीजै[6]। हिवै दारू काढीजै[7]। भठया राति दिन तपता रहै[8]। अध्रम[9] कीजै। वाकरा मारीजै[10]। दारू पीजे। आठ पहर छकीया रहै। डूम गावै। आडा हूवा हाले। राणी ही पातरमें आणै नहीं[11]। ईया निपट अन्याव माडीयो। समरै माथै जाल्ने अगनि लागी[12]।

ताहरा परमेश्वरजी आगै पुकार हुई। जु मृतलोक माहा वघडावत बुरी चाल चालै। ईयानु सभा दोजै। ताहरा बीडो फिरीयौ। ताहरा माताजी बीडो झालीयौ[13]। हु ईयानु छेतरीस[14]। पिण ईयारो

१ नापि दीयौ – डाल दिया।
२ तोनु ... हुतौ – तुझे मारना निश्चित किया था।
३ मायौ सावतौ रापे – साबित, पूरा सुरक्षित रखना।
४ बाढे – का ना।
५ पोरसौ – पारस पत्थर। लोक-मान्यतानुसार पारसके लगनसे लोहा भी सोना हो जाता है।
६ विद्रवीजै – बाँटते।
७ दारू काढीजै – मदिरा तयार करते।
८ भठया ... तपता रहै – मदिरा तयार करनेकी भट्टियां रात दिन गरम रहती।
९ अध्रम – अधर्म।
१० वाकरा मारीजै – बकरे मारते।
११ राणी ही ... नहीं – रानियोंको (भिनायक सामकरा) भी अनुशासन नहीं रखते।
१२ समरै ... लागी – नाथ जोगीके मस्तक पर आकर अग्नि लगी।
१३ बीडो झालीयौ – बीड़ा ग्रहण किया काम करना स्वीकार किया।
१४ हुं ... छेतरीस – मैं इनको ठगूंगी।

वैर कुण लेसी । ताहरा ठाकुरां फुरमायी हु लेईस । ताहरां मानाजी ईहड सोलंकीरै घरे अवतार लीयौ ।

यु करतां माहे वरस १२ री हुई । ताहरां सगाईरी अटकळ माडी[1] । ताहरां राणे भणायरे धणीनु नाळेर मेल्हीयौ[2] । रांणे नाळेर झालीयौ । हिवै वीमाह साहो थापि मेल्हीयौ[3] ।

ताहरां रांणे जान[4] करि परणीजणनु चाल्यौ । ताहरा वगडा-वतांनु आदमी मेल्हीयौ जु रांणैजी परणीजणनु चढीया छै । थे वैगा[5] आवौ । ताहरां ईया कहायौ म्हे आविस्या पिण म्हाहरो मभाव छै । वीजी तरहरौ छै । म्हे परचिस्यां । दारू पीस्यां । थे सांसहिस्यौ नही[6] । म्हांनु मता ले जावौ । ताहरां रांणे कहाडीयौ[7] जे थे खर-चिस्यौ तौ सोभा म्हांनु हुसी । थे वेगा आयौ ।

ताहरां अै वणाव करि आपरौ साथ लेनै हालिया[8] । आइनै रांणैजीरो मुजरौ कीयौ । मु ईयै भातर[9] आया मु राणैरौ साथ छिप गयौ । नजर आवै नही । अै हीज दीसै । आपरो साथ पसवाडै[10] चालै । डेरा पिण जुदा करै[11] । क्यु रांणै विच ईयांरी साथ भली दीसै । ईयु करता ईहडरै गाम जाय पहुता[12] ।

सांमेहळो[13] पिण आयौ सांम्हा । इतरैमै जेलू[14] पिण दीठौ ।

---

१. अटकळ माडी – युक्ति की ।
२ भणायरे ''मेल्हीयौ – भिनायके स्वामीको नारियल भेजा ।
३ हिवै' मेल्हीयौ – अव विवाह-लग्न निश्चत कर भेजे ।
४. जान – वरात, सं यान ।
५ वैगा – वेगसे, तुरन्त ।
६ सांमहिस्यौ नही – सहन नही करोगे ।
७ कहाटीयौ – कहलाया ।
८ हालीया – चले ।
९ ईयै भांतर – इस भातिसे ।
१० पसवाडै – पीछे ।
११ डेरा ' करै – ठहरनेका स्थान भी अलग करते ।
१२. जाय पहुता – जा पहुँचे ।
१३. सामेहळो – सामने जाकर स्वागत करनेकी प्रथा ।
१४. जेलू – ईहड सोलकीकी पुत्री जो देवीका अवतार मानी गई है । जेलू अथवा जेळ आगे वगड़ावतोके विनाशका कारण वनी जिससे कहावत प्रचलित है—'जेळू थें तो घणा वगडावत खपाया' जेळू ! तुमने बहुत वगडावतोंका विनाश कर दिया ।

भोज वावळी[1] घोडी चढीयो दीठो। ईया माथ दीठो ताहरा जेलू कहै। हु भोजेंनु परणीजीस।

इयु करता ग्राग तोरण वादीयो[2]। सु जेलू परणीजणमैं राणेंनु नही जाणें। भोजनु परणीजु। ताहरा हठ घणो ही हूवो।

ताहरा भोजें जेलूनु कहायो। थे हठ न करो। राणेनु परणीजो। परणीया पछै हु थानु ले जाईस। ताहरा जेलूरी छोकरी होम्र तिका विच फिरै। वाता करै। ताहरा भोजें वाह बोल दीया[3]। हु थानु पछै ले जाईस। वचन दीयो। ताहरा जेलू राणेनु परणीया। यु करता भोजो परवाह[4] राणेंमु तूणी दिन्ही।

हिवै हालीया। राण भणाय ग्राय पहुता। हिवै पैमारो[5] करि राणो घरे गया। हिवै जेलू भोजेंसु परधाना[6] करै। थारे बोलीयेंनु पाल करि। ताहरा भोजें भाइ पूछिया। ताहरा भाइ रहै जे जेनू ग्रावै छै तो ग्रावण द्यो। ग्रापे ग्रपूठी नही फेरा[7]।

ताहरा ईया वाह बोल दीया। जेलू इयार घडी भरि[8] ग्राई। इया ग्राधी[9] लीधी। राणो फौज करि ग्रायो। लडाइ हुइ। २३ भाइ राम ग्राया[10]। एक भाइ तेज नामैं तिको नायो। बीजा सरब राम ग्राया।

दूहो—वूढा हूवा हो तेजा जेठजी, थाहरै सल पडीया गालें।
रदे न ग्राया पाहुणा, ढलपती ए ढालें॥ १

भोजो पढीयो ताहरा जेलू भोजरो माथो नेनै ऊडी। ले जाइनै

---

१ वावळी—बाई घोरली (?)
२ तोरण वांदीयो—तोरण बांधा विवाह सम्बन्धी एक प्रथा।
३ वाह बाल दीया—प्रतिज्ञारो वचन दिय।
४ परवाह—हार।
५ पमारा—सं प्रसार यहां विवाहके बाद गृहप्रवेश सम्बन्धी प्रथासे तात्पर्य है।
६ परधाना—परामर्श, बातचीत।
७ ग्रपूठी नहा फेरां—विमुख नहीं करने।
८ घडी भरि—घड़ा भर कर।
९ ग्राधा—ग्राप।
१० राम ग्राया—मारे गये।

ठाकुरां आगै मेल्हीयो। कह्यौ हुं काम करि आई छूं।

ताहरा भोजै लारै सेढू[1] सती होवण आई। मत कीयी हुती। ताहरां जेलू आयनै कह्यौ। तु सती मता हुए। थारै बेटौ हुसी। ताहरा सेढू कहै। म्हारै बेटौ कठा होसी। हु तो जनमरी वाझ। सु ताहरां जेलू कहै तू बाग माहे धूप दीप ले जाए। कमलरो फूल लेनै एकैनुं तले रापे। एक फूल उपरह तू बैसे। जाहरां बाळसद[2] हवे ताहरा तू उठिनै उरहौ लेई[3]। तू पाळे। थारो बेटौ हुसी। सपरो[4] हुसी। वैर लेसी।

ताहरा आ जायनै बाग माहे बयठी। ज्यु जेलू कह्यौ हुतौ त्यु कीयौ। आप आयनै धूप दीप कीयौ। घड़ी १ हुई। त्यु बाळकरो साद[5] हूवौ। ईंरै आंचले पान्हौ[6] आयौ। ईंयै उठिनै उरहो लीयौ। फूल महा बाळक नीसरीयौ। नांम उदेराव काढीयौ। साढू माता लेनै घरे आई। एथ[7] अै ईयेनु पाळै। मोटौ करै।

जीयै घडी उदैरावरो जनम हूवौ तीयै घडी प्रोळिरा कांगरा गिड पड्या[8]। ढोलीयैरा साल ४ भागा[9]। ताहरां राणै पूछीयौ। औ किसो उपद्रव। ताहरां पडित तेडाया। कह्यौ औ किसौ उपद्रव। ताहरां पडिता कह्यौ बघडावतांरै भोजेरै बेटो जायौ[10]। ताहरां बाभण मेल्हीयौ। पवर कराई। कह्यौ जावौ मारौ।

ताहरा बांमण आइनै साढूनू पूछीयौ। माता बघडावतांरै बेटौ

---

१ सेढू – भोजकी गुर्जर जातिकी स्त्री। यही देवनारायणकी मां हुई।
२ बालमद – बाल शब्द, नवजात शिशुका रुदन।
३ उरही लेई – पासमें लेना।
४ सपरो – श्रेष्ठ, अच्छा।
५ साद – रुदन।
६ पान्हौ – वात्सल्यके कारण स्तनोंमें होने वाला दुग्ध-प्रवाह।
७. एथ – यहां।
८ प्रोळिरा... पड्या – द्वार परके कंगूरे गिर पडे। प्रतापी शिशुके जन्म पर बातोंमे ऐसा कहने की प्रथा है।
९. ढोलीयैरा... भागा – पलग के पायोके छिद्रमेंका भाग टूट गया।
१०. जायौ – उत्पन्न हुआ।

जायौ छै। नाम कढाय[1]। म्हानु दिपाय। माता साढू कहै। म्हारै बेटो काह[2]। हु जनमरी वाझ छु। बेटो काह। ताहरा बाभण रसोई मागै। द्यौ। ताहरा कहै माता रसोई देसु। तहरा बाभण कहै। म्हे यु रसोई न रया। ये आप जाय जळ आणो[3] तो रसोई करा।

आप छोकरया[4] लेनै पाणीनु गया। औ बाभण घर सोभण गया[5]। आगै माहे पैस[6] देपै तो पालणैमै बाळक हीडै छै[7]। ऊपर नाग छत्र करिनै बैठो छै। पालणै दोळा[8] सरप लपटाणा छै। ताहरा ईया सरप छेडीयो। ताहरा सरपे बाभण पाधा।

इतरैम माता आई। रै ठाला भूला[9]। था बाळकनु कामू कीयौ। ताहरा ईयौ कह्यौ। म्हा म्हाहरी कमाई पाई। हिवै म्हानु बचावो[10]। ताहरा बाळक हसीयो। बाभण छुडाया। बाभण परहा गया[11]। जाय राणैनु बात कही। ओ बाळक न मरै।

ताहरा माता साढू मालवेनु कासीद हलायौ[12]। पीहरसु आया। आइनै ले गया। ओथ[13] जाइ बसीया। गाया ग्वाळ सरब ले गया। माळवै जावता ऊवा[14] विचारीयौ बाळक नापि द्यौ[15]। आपे माल बैठा पामा। ताहरा पालणो नापि टावर मेल्हि परहा गया।

---

१ नाम कढाय – नाम निकलवाओ नामकरण संस्कार करवाओ।
२ काह – कहाँ।
३ आणो – लाओ।
४ छोकरया – दासियां।
५ सोभण गया – देखने लिए गये।
६ मांहे पस – भीतर प्रवेश करके।
७ पालणमैं बाळक हीडै छै – पालनेमें बालक झूलता है।
८ पालण दोळा – पालनके चारों ओर।
९ ठाला भूला – निकम्मे और भूल हुए।
१० बचावो – बचाओ।
११ परहा गया – चल गये परे, दूर चल गये।
१२ मालवेनु हलायो – मालवेमें [illegible] भेजा। माता सांढूका पीहर मालवेमें था।
१३ ओथ – वहाँ।
१४ ऊवां – उन्होंने।
१५ नापि द्यो – डाल दो।

जाहरां मातारै हाचलै पान्ही आयौ[1]। कह्यौ बाळक ल्यावो ज्यु चूघावां[2]। ताहरा कहै माता वाळक म्हा नापि दीयौ। ताहरां माता साढू पाछी घिरी। आगै देपै तौ छवरे हेठै[3] पालणो रापीयौ तांसु सीहणी[4] आय चूघावण लागी। ताहरा माता साढू दीठौ। ताहरा कहै हे सीहणी तै म्हारो वाळक विनासीयौ। ताहरां सीहणी अळगी हुई[5] ऊभी रही। ईये जाय टावर उरहो लीयौ। पालणो भीलारै[6] कावे दीयौ। आघा हालीया। पीहर गई। उथ सुपसु रहै।

एक दिन वांभणनुं टोघडा[7] दीया। पछै भाटानु दान दीयो। मोटो हूवो। वरस १० रो हूवौ। ताहरा अपूठा ठिकाणै आया। आवतो पमारे परणीयो[8]। हिवै अठै रहै। यु करता गायां चरै। सु जगळमै गाया घास चरै। सु लोक पुकारै म्हांहरो घास सरव[9] चरि गया।

ताहरां गाया राणेरै आदमीए रातै कोटमै रोकीयां[10]। ताहरां देवधरम राजा चढीया। ताहरां लडाई हुई। राणेरा लोक मारीया। गाया छुडाया। राणो भागौ।

ताहरा आप तौ भागौ पाछै न जावै। ताहरा भुणेनु[11] कह्यौ। भुणा ईयेनु पकडि ल्याव। ताहरां भोणो रांणैनु पकडि ल्यायौ। रांणैनु मारीयो। आप पाछा आया।

---

१. हाचले पान्हो आयो – आंचलमें दूध आया।

२ चूघावा – दूध पिलावें। बालकको स्तन-पान करावें।

३. छवरे हेठे – पेड़ की छायाके (?) नीचे।

४. सीहणी – सिंहनी।

५. अळगी हुई – दूर हुई।

६. भीलारै – भीलोके, भील=जाति विशेष।

७. टोघडा – गायके वछडे (?)

८. आवतो पमारे परणीयो – लौटता हुआ परमार क्षत्रियकी कन्यासे विवाह किया।

९ सरव – सर्व (स), सब, सारा।

१० राणेरै ' रोकीया – राणाके अर्थात् भिनाय शासकके आदमियोंने रातमें गढ़में रोक ली।

११. भुणेनु – भूणेको। भूणा, रावत भोजाका पहली स्त्रीका पुत्र।

दडावट राजथान[1] तेथ आया। नीलावर[2] घोडे चढीया आया। आईनै घोडे चढीया आलोप हूवा[3]। देव धरम राजा आज लोक पूजा हुवै छे। वडो देव छे।

---

१ दडावट राजथान—दडावत या मडावट मेवाड़में आसींदके निकट एक गांव है। दडावट नामक स्थान बगड़ावतोंकी राजधानीके रूपमें प्रसिद्ध रहा है (मरु भारती पिलानी : वर्ष ३ अङ्क ३ में 'राजस्थानके लोक देवता' नामक श्री झाबरमल्ल शर्माका निबन्ध)।

२ नीलावर—एक रंग विशेषका घोड़ा।

३ अलोप हूवा—लुप्त हुए।

प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ[1] रावत प्रतापसिघ[2] म्होकमसिघ[3] हरीसिघोतरी[4] वात लिप्यत

वात[5]

देवगढ[6] रावत प्रतापसिघ हरीसीघोत राज करै। जिको किसोहेक[7]।

---

१. ख प्रतिके जीर्ण होनेमे प्रारभका पाठ स्पष्ट पढनेमें नहीं आता। सभवत. "अथ रावत प्रतापसिंघरी वात" है। "रावत प्रातपसिंघ ने म मोहोकमसिघ हरीसिघोत देवगढरा धणीरी महाराज बादरसिघजी किसनगढ़रा राजारी करी"। "अथ रावत प्रतापसिघ मोहकमसिघरी घ [हरी] सिघोत देवगढरा धणीरी बात लिप्यते"।

२. रावत प्रतापसिंघ – राजस्थानकी एक पूर्व रियासत देवलिया-प्रतापगढके वि. स १७३० (ई.स. १६७३) से स. १७६५ (ई.स. १७०८) तक शासक रहे। इन्होंने अपने नाम पर वि. स १७५५ (ई. स १६९९) में प्रतापगढ नामक नवीन नगरकी स्थापना की, जिससे प्रतापगढ देवलिया-प्रतापगढ रियासतकी राजधानीके रूपमे प्रसिद्ध हुआ। "रावत" अथवा "महारावत" प्रतापगढ-नरेशोकी उपाधि है। रावत शब्द संस्कृतके "राजपुत्र" शब्दसे विकसित हुआ है। जैसे–राजपुत्र>राजपुत्त> राजउत>रावउतसे रावत।

३ म्होकमसिंघ – रावत प्रतापसिंघका भाई जिसकी वीरताका प्रस्तुत वार्तामें विशेष वर्णन किया गया है। प्रतापगढका सालिमगढ नामक ठिकाना म्होकमसिंघ और उसके वंशजोके ही अधिकारमे रहा है (प्रतापगढ राज्यका इतिहास, स्व डॉ गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, पृष्ठ स १६५)।

४. हरीसिंघोतरी – हरिसिंघके पुत्रोकी। हरिसिंघ-पुत्र>हरिसिंघउतसे हरिसिंघोत बना है। हरिसिंह वि स १६८५ (ई. स. १६२८) से वि. स १७३० (ई स. १६७३) तक देवलियाके शासक रहे। (वही)।

५ वात – वातके स्थान पर सर्वत्र ग घ में दवावैत पाठ है। दवावैत–रघुनाथरूपक (सपादक–श्री महताबचन्द्र खारेड, काशी ना प्र स) और रघुवरजसप्रकास (सम्पादक–श्री सीताराम लाळस, राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) के अनुसार—दवावैतके गद्यबध और पद्यबंध दो भेद हैं। प्रस्तुत वार्ता में गद्यबन्ध दवावैत का प्रयोग हुआ है।

६ देवगढ – प्रतापगढ राज्यकी प्राचीन राजधानी देवलियासे तात्पर्य है। यह देवगढ मेवाड़के प्रसिद्ध ठिकाने देवगढसे भिन्न है जहाके शासकोकी उपाधि भी "रावत" ही रही है।

७ जिको किसोहेक – इसके स्थान पर ग और घ प्रतिमे "तिको षटदरसणरा दाळद्र हरे" पाठ है। षटदरसणसे यहां तात्पर्य, षड्दर्शनाचार्यों आदिसे है।

पातसाहासू आडो[1] । कवारी घडारो लाडो[2] । अड सग्रामरो नाटसाल[3] । चक्रवर्ती जिसडी चाल । आथरो माणीगर[4] । षट भाषारो जाणीगर[5] । दातार सूर । जलाहल नूर[6] । वीराधिवीर । आजाने वाहु[7] । सरणाई सधीर[8] । नारारो नाह[9] । गज घडा मोडण[10] । थाका मैवासा तोडण[11] । जिण प्रथ्वीरै ऊपरै वडा वडा जुद्ध कीधा । रिणखेत[12] माहे आय चवदल हुवा[13] तिकानू मार लीधा । जिणारै कनै साख साखरा[14] रजपूत रहै । जिके पडतै आसमाननू भुजा सहै । स्यामरा[15] सहायक धरारा किवाड[16] । भावतारा भावता । अण

---

१ आडो – मार्ग रोकने वाला विरोधी । रावत प्रतापसिंह वास्तवमें मुगल शासकोंका सहायक रहा है । प्रतापसिंहके नाम लिखे गये बादशाही फरमानोंसे इस मतकी पुष्टि होती है । (विशेष देखिये–प्रतापगढ़ राज्यका इतिहास, स्व डॉ गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा)

२ कवारी घडारो लाडो – कुमारी सेनाओंका अर्थात जिस सेनासे युद्ध नहीं किया गया हो, उनका प्यारा । राजस्थानी कथाओंमें इस विशेषणका कई बार प्रयोग हुआ है ।

३ अड सग्रामरो नाटसाल – वीरता-पूर्वक युद्ध करने वाला ।

४ आथरा माणीगर – अर्थ धन-वैभवका उपभोग करने वाला ।

५ षट भाषारा जाणीगर – षट भाषाओंका ज्ञाता । षट भाषाओंमें संस्कृत प्राकृत मागधी शौरसेनी, पैशाची और अपभ्रंशका समावेश किया जाता है (षड्भाषा चन्द्रिका)

६ जलाहल नूर – सूर्यकी भाँति कांतिमान ।

७ आजाने वाहु – आजानुबाहु । घुटनो तक लम्बी बाहों वाला ।

८ सरणाई सधीर – शरणागतोंकी धीरतापूर्वक रक्षा करने वाला ।

९ नाह – नाथ, स्वामी ।

१० गज घटा मोडण – हाथियोंके समूहको मोड देने वाला ।

११ थाका मवासा तोडण – शत्रु पक्षके सुरक्षित स्थानोंको तोड देने वाला ।

१२ रिणखेत – रणक्षेत्र, युद्ध भूमि ।

१३ चवदल हुवा – प्रसिद्ध हो गया ।

१४ साख साखरा – शाखा-शाखाके । राजपूतोंकी मुख्य शाखाएं ३६ मानी गई हैं (मुहता नैणसीकी ख्यात भाग २ नागरी प्रचारिणी सभा, काशी पृष्ठ ४८१) ।

१५ स्यामरा – स्वामीके ।

१६ धरारा किवाड – धरतीके रक्षक ।

भावतारा जडा उपाड़[1] । इण भांतरा तो कनै[2] रजपूत । इसड़ो ही आप पिडा[3] मजवूत ।

दोहा[4]—धर बंकी बंको धणी, बंका भड़ बरहास[5] ।
अरि बंका सूधा करै, बंका रिण बाणास[6] ॥ १

अड़ियो रांणा असरसूं, अंण गंज[7] रहियो आप ।
तड़िता[8] सिर त्रिजड़ां जड़ी[9], वो रावत परताप ॥ २

अरि धंम[10] भाला उधमैं, अंग षत्रवाट अमाप[11] ।
अनड़[12] षगां वगां[13] अचल, वो रावत परताप ॥ ३

मरद छतो[14] आपह मतो[15], थप्पै[16] मोटी थाप ।
रावत वट रतो रहै, वो रावत परताप ॥ ४

संक मनावै सत्रुवां, असंक सदा रिण आंप ।
वयण अटंका[17] बोलणो, वो रावत परताप ॥ ५

---

१. उपाड़ – उखाड़ने वाला ।
२. कनै–पासमें, समीप ।
३. पिंडा – स्वय । ग घ. "आप पिंडा" के स्थान पर "आपै" पाठ है ।
४. दोहा – ग घ दुहा । राजस्थानीमें दोहा छन्दके लिये एक वचन दूहो और बहु. वचन दूहा या दुहा प्रचलित है ।
५. वरहास – घोड़ा ।
६ वाणास – तलवार ।
७ अण गंज – अजेय ।
८. तडिता – बिजली ।
९ त्रिजडा जडी – तलवार मारी, तलवारसे प्रहार किया ।
१०. धम – धर्म ।
११ षत्रवाट अमाप – अतुल क्षत्रियत्व, वड़ी वीरता ।
१२. अनड – अनम्र, नहीं झुकने वाला ।
१३. वगा – वाग, घोड़ेकी लगाम, यहां सवारी करनेसे तात्पर्य है ।
१४. छतो – क्षिति, पृथ्वी या छत्रधारीसे तात्पर्य है ।
१५. आपह मतो – अपने ही मतसे चलने वाला ।
१६. थप्पै – स्थापित करता ।
१७. अटका – विना तोलके, वीरतापूर्ण ।

वात[1]

ईण भातरो रावत परतापसिंघ। जिणरे छोटो भाइ म्हौकमसिंघ। जिको किसटोहेक रजपूत। श्राग श्रजाग[2]। तापो[3] नाग। पाग नै त्याग विधै[4] जगहीमो वढती वाग। रीज[5] पर सारो ही त्याग। कई वार निकल्यौ कटारी घडाम वढि। समहर[6] भडासू वढि। टारो धणी पण कई वार श्रकेलो ही लोहा मिल्यौ[7]। सोरमें पण रजक[8]। तिण भात रजपूतीरी तीपरो तप भप[9]। तिणरो रजपूतीरी तीप। तिको धणी तीपानें[10] पण मीप। रेवणनै राड श्राया थका वधाई वटै। श्रर विलकुल नै घणो तातो मिलै। प्रिथिमें घडी पिलनरो[11] मिजमान[12] हुवो थको भिलै[13]।

दोहा—मरण गिणै तिल मान[14], हाथ जीव हाजर रहे[15]।
श्रो घट[16] घाट[17] श्रताल, निराताल[18] न्हाषै[19] निडर ॥ १

१ वात — ग घ प्रतियोंमें क्यावत।
२ श्राग श्रजाग — श्रागोंमें वज्रकी भांति तेज धारण करने वाला।
३ तापो — तीक्ष्ण, तेज।
४ पाग न त्याग विध — शस्त्र सञ्चालन और दान सम्बन्धमें। ग प्रतिमें 'पागनै त्यागर विध तापो नाग' पाठ है।
५ रीज — रीझ प्रसन्नता।
६ समहर — समान।
७ लोहा मिल्यो — शस्त्र धारण कर श्रथवा शस्त्रधारियोंसे युद्ध किया। लोहेसे तात्पर्य शस्त्र है।
८ सोरम पण रजक — युद्धमें भी आनन्द लेने वाला।
९ तप भप — सज धज।
१० तीपान — तेज लोगोंको बीरोंको।
११ घडी पलरो — घडी पलका, थोडे समयका।
१२ मिजमान — मेहमान।
१३ भिल — शोभित होता है।
१४ तिल मान — तिल मात्र, तिल बराबर सामान्य।
१५ हाथ जीव हाजर रहे — प्राण सदा हाथमें लिये रहता है, मरनेके लिए सदा प्रस्तुत रहता है।
१६ घट — शरीर।
१७ घाट — स्थान।
१८ श्रताल निराताल — शीघ्र बहुत।
१९ न्हाप — डाल देता है।

झोकै झाझी झाल[1], काल चाल झटकै कमो[2]।
भटकै क्रोध भुजाल[3], षटकै उर षूंदालमौ[4] ॥ २

समहर बागां सार[5], आंम्हा सांम्हां आहुड़ै[6]।
बधि[7] म्होकम जिण वार, षाग झटां[8] षेलै षलां[9] ॥ ३

चष[10] मुष अरुण सचोल[11], बिलकुलतो[12] वाकारतो[13]।
धीबभड़ां[14] धमरोल[15], अरि दल ढाहै हरिंदउत[16] ॥ ४

वात

ईसडो[17] तो भाई म्होकमसिंघ। अर ओर भी भाई भतीजा वडा वडा रजपूतवटरा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघरी हजूर रहै। वडी वडी रीझां मोजां हमेसा लहे[18]। तिके किसडा हेक।

---

१ झाझी झाल – अधिक ज्वाला।
२. कमो – महोकमसिंह।
३. भुजाल – भुजाओ वाला, वीर।
४. षूदालमौ – खूंदने वाला, उपद्रवी।
५. समहर वागा सार – समान व्यक्तिसे तलवार बजने पर, समान व्यक्तिसे लड़ाई होने पर।
६. आहुड़ै – पलटते, युद्ध करते।
७. वधि – वर्द्धमान हो, बढ़ कर।
८. झटा – प्रहार।
९ पला – शत्रु।
१० चष – नेत्र।
११ सचोल – लाल।
१२. बिलकुलतो – शीघ्रता करता हुआ।
१३. वाकारतो – पुकारता हुआ।
१४. धीवभडा – प्रहार।
१५. धमरोल – युद्ध।
१६. हरिंदउत – हरीन्द्रपुत्र, हरिसिंहका पुत्र।
१७. ईसडो – ऐसा।
१८. लहे – लेते।

दोहा–सोहा हृदा छावडा[1], धसँ समुष पग धार ।
वाहै[2] लजरा विटिया[3], सोस गयदा[4] सार[5] ॥

वात

तिण समै[6] भीलामै एक भील मुदायत[7] । तिको घणारो आटायत[8] । सो देवगढरी धरतीरो विगाड करै । तद रावतजी वंनु[9] मारणरो हुकम कीधो । सो ओ भी एक जायगा न रहै जिण आटै[10] न मरै । जे फोजवधी कर चढै तदि तो ओ भाखारामै[11] पैठै[12] । जे दगो विचारै जदि ओ भी सावधान होय वैठै । भील तीस चालीसेकमु घणी अगम[13] विषम जायगा रहै । मायरा भील पण वडा आटा पेटारा[14] करणहार। निसक हुवा थका दोडे अरु मुलकरा[15] धन लहै।

दोहा–पग छूटा[16] पैरू[17] निसा, धरिया कर धानख[18] ।
रखवाला मैवासका[19], येहा भील असंक ॥

---

१ छावडा – पुत्र ।
२ वाहै – चलाते ।
३ लजरा विटिया – आवेष्ठित ।
४ गयदां – हाथियोंपै ।
५ सार – तलवार
६ तिण सम – उस समय ।
७ मुदायत – मुखिया ।
८ घणारो आटायत – बहुतोंको कष्ट देन वाला ।
९ वनुं – उसको ।
१० जिण आट – जिसके कारण ।
११ भाखराम – पहाडोंमें ।
१२ पठ – प्रविष्ट हो चला जावे ।
१३ अगम – अगम्य, कठिनाईसे पहुचनेकी ।
१४ पेटारा – आलटोंपै, प्रहारपै ।
१५ मुलकरा – मुल्कका देशका ।
१६ पग छूटा – छूटे हुए परोंपै, चल हुए ।
१७ परू – पहरेदार सावधान रहन वाले ।
१८ धानख – धनुष ।
१९ मवासका – जगलके ।

वात

ईण भांत घणा तापडा पणांसु[1] रहै अर टणकापणरी[2] वातां चोडै[3] कहै।

एक रजपूत रावतजीकी हजूर रहै। जको आदमी तो पाधरो सो[4]। पण मोटियार पगछंटो सो। रावतजी उणनु देप पोतारियो[5]। किण वास्तै। ईणनु पोतारतां ओर भी किणीनु चोप[6] तीप[7] लागै तो उण भीलनु अगो अग[8] मारै। दूज्यू ओ मरै नही। अर मारणौ सही।

एकण दिन रावतजी दरवार किया वैठा था। तद भीलरी वात चाली। जद उण रजपूतनू पौतार कहियो। ओर तो कोई दीसै नही[9] जिकौ उण भीलनू मारै। जे मारै तो ओहीज[10] रजपूत मारै।

जिण वेला सीसौदियौ जसकरण जौगीदासोत[11] वैठौ थो सौ जसकरण वडो वीराधवीर[12]। जिसडो धीर पंडीर[13]।

दोहो—केई वेलां[14] धसियो[15], कल रसियो घग रंग[16]।
अरिहां[17] उर वसियो रहै, वो जसियो[18] अण भंग[19]॥

---

१. तापडापणांसु – बल लिये हुए।
२. टणकापणरी – सामर्थ्यपूर्ण।
३ चोडै – खुलेआम, स्पष्ट।
४. पाधरो सो – सीधा-सा, सरल।
५. पोतारियो – बढावा दिया।
६. चोप – श्रेष्ठता, भलाई।
७. तीप – तीक्ष्णता, तेजी।
८. अगो अग – द्वन्दमें, स्वयं युद्ध कर।
९. दीसै नही – दिखाई नहीं देता।
१०. ओहीज – यही।
११. जसकरण जौगीदासोत – जोगीदासका पुत्र जसकरण।
१२. वीराधवीर – वीराधिवीर, वीरोंमें भी वीर।
१३. धीर पडीर – शरीरका धीरजवान, धीर पुंडरि नामक सामन्त जैसा।
१४. वेला – समय।
१५ धसियो – प्रविष्ट हुआ।
१६. कल रग – असि-चालनमें आनन्द प्राप्त करने वाला श्रेष्ठ रसिक।
१७. अरिहा – शत्रुओंके।
१८. जसियो – यशस्वी, जसकरणसे तात्पर्य है।
१९. अण भग – अभंग, नहीं भग्न होने वाला, वीर।

वात

सो जसकरण बोलियो। दीवाण[1] ईसडी काइ कहो छो। किण ही रजपूतरी परप[2] भी लहो छो। रावत हरीसिंघरा घर माहे इसडो रजपूत नही जको उण भीलडैनु मारै। सो दीवाण तो छत्रपती छो। पण हरीसिंघरा घर माहे ओर भी सपरा[3] रजपूत छै जिके उणनु अकेलो पैठ अगो अग मारै। अर वात उवारै[4]। जिणसू दीवाण ईसडी किण वाय[5] कहणी आवै। आ वात सुणी थकी किणनु भावै। इण भीलडारो बूतो[6] कासू[7]। सो नजर चढिया अडै म्हासू। जिण परे आप इतरी फुरमावो। इणनु मारणो होय तो किण ही एकणनु[8] कहीजे। थे ओ काम करि आवो। रावला[9] घर माहे छै एक एक इसा रजपूत। जिको बाधै दिली नै चीतोडसू लडवारो[10] सूत[11]। जिणसू किणहीनै फरमाय[12] हाथ देपीजै[13]। कै तो मारि आवा कै पकड लावा तो रजपूत लेपीजै[14]।

---

१ दीवाण – मेवाडके महाराणाओंकी उपाधि 'दीवाण' कही जाती है क्योंकि मेवाडका राज्य एकलिंग महादेवका और महाराणा उनके दीवान माने जाते हैं। देवलिया प्रतापगढ़का राज्यवंश भी मेवाडके महाराणा मोकलके पुत्र और महाराणा कुंभाके भाई क्षेमकर्ण (अपर नाम क्षेमसिंह, खेमा या खींवा) से प्रारंभ होता है। इस प्रकार प्रतापसिंहको भी दीवाण कहा गया है।

२ परप – परीक्षा।

३ सपरा – श्रेष्ठ।

४ उवार – उद्धार करे, पालन करे।

५ किण वाय – किस प्रकार।

६ बूतो – आधार।

७ कासू – किससे क्या।

८ एकणनु – एकको।

९ रावला – आपके सरकारमें।

१० लडवारो – लडनेका।

११ सूत – सूत बांधनेका यहां तात्पर्य युद्ध करनेके विचार या उपक्रम करनेसे है।

१२ फरमाय – फरमा कर कह कर।

१३ देपीजे – देखिये।

१४ लपीजे – जानिये।

ईण तरै ईंणरो रोस देष साचवट पेप[1] रावतजी वोलिया। ठाकुर थेई सदा छो। हू पातसाह किना दीवाणसू पेटो धारू[2]। ईण भीलड़ैरै उपरा थांनू कामू पोतारू[3]। हूं तो म्हारै रावत हरीसीघरा घरकी वात कहूं छु। अर ईण भीलरी वात सुण मन मांहि रोस धार रहूं छू। सो हरीसीघरो नाव सुणता ही भांई म्हौकमसिघ वैंठौ थो सो ईसो[4] भभकियो। जाणे दारूरा गज[5] माहे आगरी चिणगी[6] पडै। किनां बलती[7] आग माहै घ्रत न्हाषियो झांल आकास जाय ऊड़ै। रुकिये[8] हाथीनु रोस चड़ै किना उकलता[9] तेल मांहे पांणीरी वूद पडै। जिण भांत षिजाये[10] नागरी[11] नै दकालियै[12] वाघरी नांई[13] बोलियो। नै मन माहि रोसरो नै जोसरो ताव हूंतो सो चौड़ै षोलियो।

दोहा—कथ[14] इम सुण कोपे कमों[15], अंग अंग प्रगटी आग।
बांणी ईण बिध बोलियो, जांण षिजायो नाग॥

वात

कहियो दीवाण ईसडी[16] काह[17] कहो छो। किण ही रजपूतरी

---

१. साचवट पेप – सचाई देख कर।
२. पेटो धारु – युद्धका, संघर्षका विचार रखता हूं।
३ पोतारु – बढावा दूं, प्रोत्साहित करू।
४. ईसो – ऐसा।
५. दारुरा गज – मदिराके संग्रहमें।
६. चिणगी – चिनगारी।
७. वलती – प्रज्वलित होती हुई, जलती हुई।
८. रुकिये – बलात रोक रक्खे गये।
९. उकलता – उबलते हुए।
१० षिजाये – चिढाये हुए।
११ नागरी – सांपकी।
१२. दकालियै – ललकारे हुए।
१३. नाई – तरह।
१४ कथ – कथन।
१५. कमो – महोकर्मसिंह।
१६. ईसडी – ऐसी।
१७ काह – क्या

परख[1] भी लहो छो। कहो छो रावत हगीसिंघरा घर माहे ईसडो रजपूत नही सौ उण भीलरैनु मारै। सो दीवाण तो छत्रपती छो पण उणरा घर माहे वी सपरा[2] सपरा रजपूत छै जिके उणने अकेलो पैठ अर अगो अग मारे। अर बात उवारे।

ईण तरै सुणनै जिण वेळारो[3] म्होकमसिंघरो जोम नै रोम देय रावतजी बोलिया। वाप वाप हू थानु तो न कहू छू। हू तो म्हारा पिंडनै[4] कहू छू।

इनरी वह मोहकमसिंघनु थयोपियो[5]। पण ओ तो कोपियो सो कोपियो। मुहडै[6] अण मापरो रोस व्यापियो[7]। मन माहि भीलडैनु मारणरो दाव रोपियो[8]। ईण सकोचसू बोलियो तो नही। जाणियो दीवाण जावण न देसी[9]। हर[10] जाणसी जाय छै तो ही गया थका पाछो बुलाय लेसी। ईण भात दिन पाच सात आडा घातनै[11] एक तो साथ रजपूत अर येक चाकर सो भी मजबूत। दोय आदमी साथ लेनै जिण मवासामै[12] भील रहता तठै ही[13] आप जाय पहोतो[14]।

पछै रावतजीनु पवर हुई सौ पाछो बुलावणरी तलास तो घणो ही कीयो। पण ईणरो सोध[15] किण ही न लीधो।

---

१ परख – परीक्षा। परख<परक्ख परीक्खा <परीक्षा।
२ सपरा – श्रेष्ठ।
३ जिण वेळारा – जिस समयका।
४ म्हारा पिंडरी – मेरे शरीरकी स्वयंकी।
५ थथोपियो – स्थिर किया शान्त किया।
६ मुहडै – मुह पर।
७ व्यापियो – व्याप्त हुआ फला।
८ रोपियो – निश्चित किया।
९ जावण न देसी – जाने नहीं देंगे।
१० हर – और।
११ आडा घातन – सामने डाल कर व्यतीत कर।
१२ मवासाम – वन प्रान्तमें, जंगलमें।
१३ तठ ही – वहीं।
१४ पहोतो – पहुचा।
१५ सोध – शोध खोज।

अर भीलनै पवर हुई । म्होकमसिंघ इण वंनीमैं[1] आदमी दोयसूं[2] आयो छै। सो ओग तो कांम कोय दीसै नहीं[3] मोनै ही मारणनुं ध्यायो छै[4] । पण अवरकै[5] पवर पड़सी । देपा किण वाय[6] मोसूं अडसी[7] । तीन आदम्यारी कासू वात । जिके मो मारीसा[8] छळ बळ दाव जाणै जिकणसूं[9] करै घात ।

ईतरी वात धार रावत प्रतापसिंघनु कहायो । ईसा दावांसूं[10] तो हू न मरस्यू । ओ म्होकमसिंघ जीकु हांसीमैं[11] जहर चापै छै[12] । ओ तो मोटा सिरदार छै । पण ठीकरी घडानु फोड़ न्हापै[13] छै । सो म्होकमसिंघ तो वडी धक[14] अर तलासमैं लाग रह्यो छै । झाड झाड पहाड पहाड़ हेरता थकां[15] रात दिन एक सौ कोधमैं जाग रह्यो छै। पण एक दिन ईसडो दईव सजोग[16] हुवो सो म्होकमसिंघ तो हिरणरी सिकार मूळ[17] बैठो थौ । अर साथरो रजपूत हिरण टोळवानै[18] वन

---

१ वनीमैं – वनमे ।

२. आदमी दोयसू – दो आदमियोके साथ ।

३ कोय दीसै नही – कोई दिखाई नही देता ।

४. मारणनु ध्यायो छै – मारनेको दौडा है ।

५. अवरकै – अवकी बार ।

६ वाय – भांति, तरह ।

७. मोसू अडसी – मुझसे अडेगा, मुझसे लडेगा ।

८. मारीसा – जैसे ।

९ जिकणसू – जिससे ।

१० दावासू – दावो से, चालोसे ।

११. हासीमैं – हंसीमें ।

१२ चापै छै – चखता है ।

१३ ठीकरी ' न्हापै – मिट्टीके बर्तनका एक छोटा टुकडा भी घडेको तोड देता है । एक कहावत है, जिसका तात्पर्य है कि सामान्य व्यक्ति बलवानको हरा सकता है ।

१४ धक – जोश, उत्साह ।

१५ हेरता थका – ढूढते हुए ।

१६ दईव सजोग – दैवयोग ।

१७ मूळ – शिकारगाह, शिकार करनेका स्थान ।

१८ टोळवानै – घेरनेके लिये । शिकारमे जानवरको घेरा डाल कर या आवाज कर शिकारगाहके पास लाया जाता है ।

माहि पैठो थो। चाकर कनै[1] थो जिकण कना जामगी[2] कळरै[3] लागी थी। अर भीलरी काळरी घडी आय वागी[4] थी। इतरामें वो भील अचाणचको[5] उण हीज गैलै[6] आयो। चाकर देखियो अर मन भायो। चाकर कन बदूक थी। अर जामगी कलरे लागी थी। सो रोसरी धकधार[7] अर कही। रावतजी सलामत ओ भीलडो हरामखोर। प्रथीरो चोर। काळगे पादो। मोतरी जेवडीरो बाधो[8]। ओ आवै। ईणनू देखीजे। अर हुकम होय तो गोळीरी दीजे। तद वा देखनै कहियो। गोळीरी तो न देणी। इण लौडरी[9] भी मजबूती देखणी। साचवटमू[10] अगो अग[11] वाकारन[12] मारणो। अरु प्रथी[13] प्रतीप चोपको[14] वचन उचारणो।

---

१ कनै – निकट।

२ जामगी – मध्यकालीन तोप या बन्दूकको चलानेके लिये उसमें भरी हुई बारूदको बारूद लगे हुए धागेसे जलाया जाता था। ऐसे बारूद लगे हुए धागेको जामगी कहा जाता है।

३ कळरै – कलके बन्दूकके चलने वाले भागके।

४ वागी – बजी।

५ अचाणचको – अचानक। अचानक शब्दका सम्बन्ध 'अज्ञान' से जोड़ा जाता है जैसे अचानक<अजाणक<अज्ञानक<अज्ञान। एक मतसे अचानकका सम्बन्ध 'अचाणक्य' से भी माना जाता है अर्थात ऐसा कार्य जिसकी सूचना चाणक्य जैसे तीव्र बुद्धि व्यक्तिको भी न हो। वास्तवमें 'अचानक' उर्दू शब्द है।

६ गैल – मार्गमें।

७ रोसरी धकधार – क्रोधके आवेगमें।

८ मोतरी ... बाधो – मौतकी रस्सीसे बंधा हुआ। मूंज या सण की बनी रस्सीको जेवड़ी कहते हैं।

९ लौडरी – लौंडकी सामान्य लड़केके लिये तिरस्कारयुक्त अभिव्यक्ति।

१० साचवटमू – सफाईसे।

११ अगा अग – अंगसे अंग भिड़ा कर शरीर-युद्धमें।

१२ वाकारन – ललकार कर सचेत कर।

१३ प्रथी – पृथ्वी।

१४ प्रतीप चोपको – प्रत्यक्ष सफाईका।

दोहा–चित जिण मोटी चूक[1], अरि विन वाकारे अड़ै।
बिढियो[2] म्हाष[3] वंदूक, इण आंटै हरियद तण[4]॥ १
असमर[5] वोड़ण साह[6], मारण पिसणां[7] मळफियो[8]।
म्होकमरा मन मांह, चोप तणी अति चटपटी॥ २

वात

ईण भांत वंदूक न्हाप ढाल तरवार लेनै भीलरै सांम्हो हीज धायो नै पांवडा बीस तीससूं वाकारियो। रोसरो रूप परतप[9] धारियो। सो वाकारतां ही भीलड़ो भी पर मालारो पाणहार[10]। उधारा आंटारो लेणहार[11]। देस देसरा आटा पेटा[12] जारिया[13] बैठो थो सो जोमरो मारियो[14] नै रावतरो अध्रियावणं रूप[15] होय सामोहीज आयो। नै वाह चढाय धणी चठठाय[16] रावत साम्हो तीर चलायो। सो अछटरो[17] रावतरा पगरै फूट पार जाय पडियो। अर तीर चलाय सांम्हो ही पडियो[18] तीर पगरै फूटा थका जिण भात आकाससूं बीज तूटै[19] तिण

१. चूक – भूल, अपराध।
२. बिढियो – बढियो, आगे बढा, लड़ा।
३. न्हापे – डाल कर, गिरा कर।
४. हरियंदतण – हरिसिंहतनय म्होकमसिंह।
५. असमर – तलवार।
६. वोडण साह – बादशाहको, भी हरा देनें वाला।
७. पिसणा – पिशुनोंको, शत्रुओंको।
८. मळफियो – उछला।
९ परतप – प्रत्यक्ष।
१० पर मालारो पाणहार – पराये मालका खाने वाला।
११. आटारो लेणहार – वैरका बदला लेने वाला।
१२ पेटा – लड़ाई।
१३ जारिया – किये हुए।
१४. जोमरो मारियो – गर्वसे भरा हुआ।
१५ अध्रियावणं रूप – भयङ्कर रूप।
१६ धणी चठठाय – धनुष पर तीर चढानेकी ध्वनि कर।
१७. अछटरो – छूटते ही।
१८ पडियो – चला।
१९ बीज तूटै – बिजली गिरे।

भात भीलरै माथै[1] तूटि पड़ियो। जिण वेळा[2] आईहो[3] म्होकमसिंघ आसमान जाय अडियो। भील तरवार वाही[4]। सो तो ढाल उपर लीधी अर भीलरै माथै तरवाररी वाह कीधी[5]।

दोहा—अति पोरस धरि[6] घण उमग[7], पग बाहो कर पीज।
अरो तणा[8] सिर उपरै, वज्ज[9] पडे किना वीज[10] ॥ १

अणचग असमर आछटी[11], हरियद सुतन हटाल[12]।
पिसण तणाँ[13] सिर पाधरो[14], तूट पड्यो तिण ताल[15] ॥ २

मटका जेहो मूंडडो[16], पड्यो पाछटे पाग[17]।
तोड उछटे तूवडो[18], दडो कि दोटे लाग[19] ॥ ३

वात

इण भात भीलनू मार भीलरी साथ दोय च्यार आदमी था जिकानू भी जाय अडिया। जिये भीलटा भी टूकडा टकडा होय पडिया।

---

१ माथै – मस्तक पर, सर पर।
२ जिण वेळा – जिस समय।
३ आईहो – अहिहो एमा।
४ वाही – चलाई।
५ वाह कीधी – प्रहार किया।
६ पोरस धरि – वीरता धारण कर।
७ घण उमग – उमगमें भर कर।
८ अरो तणा – शत्रुओंके।
९ वज्ज – वज्र, इन्द्रका शस्त्र।
१० किना वीज – अथवा बिजली।
११ अणचग असमर आछटी – तलवारका अचूक प्रहार किया।
१२ हरियद सुतन हटाल – हरिसिंहके हठी पुत्र।
१३ पिसण तणाँ – शत्रुका।
१४ पाधरो – सीधा।
१५ तिण ताल – उस समय।
१६ मटका जेहो मूंडडो – मटके, जिसके गोल बड़ा जैसा सर।
१७ पाछटे पाग – तलवारके लगने पर।
१८ तोड उछटे तूवडो – जो कि तुम्बेकी तरह बड़ उछलता है।
१९ दडो कि दोटे लाग – जैसे गेंद प्रहार होने पर उछलता है।

तिका भीलांरा माथा काटि रावत प्रतापसिंघरा हाथ्यारा मूढा आगै[1] नपाय दीया[2]। सो ईसडा तो चोप तीपरा तमासा म्होकमसिंघ किताई कीधा। अर ईण भीलडारा प्रवाडारी[3] वात म्होकमसिंघरी जिताई[4] सो तो एक चोप तीपरी वात याद आई। दूज्यू[5] उणरी रजपूती दीठां[6] ओ तो कांसू[7] प्रवाडो। उणांरा तो असंक प्रवाड़ा पण ईण वात मांहे येक ही चाव। ज्यू माठारै वागै चामठी तातारै लागै घाव[8]। ईण भांत उण रजपूतनू पोतारतां[9] नै तीप चोपरो वचन उचारता[10] ईणरै तीपरो वचन जाय लागो। तिणसूं अगो अंग जाय वागो।

दूज्यू ओ तो वडी वडी वातानू वाथ मारै[11]। जे आकास षड़हडै[12] तौ एक वार तो आधारै[13]। जिणरै वडै भाई वीजनु कटारी वाई[14] ईणरी मनमै तो उणसू ही तीप सवाई। तिण समै पातसाह अवरंगजेव पातसाही करै। तिण दोय तीन पातसाहानु तो पकड़ लीधा। अर कितराहेकनु पकड़ण अर मारणरा दाव दीधा। तिणरी धाक ईरांन तूरांन रूम स्यांम फिरग रूस चीन्ह म्हाचीन्ह[15] ईण देसादेसारा पातसाह ईणरा हुकमरा आधीन सारा डरै। परहरै[16]। डड भरै[17]।

---

१ हाथ्यारा...आगै – हाथियोके मुंह आगे।

२. नपाय दीया – गिरवा दिया।

३ प्रवाडारी – प्रवादकी, युद्धकी।

४. जिताई – विजितकी, जताई, वताई।

५ दूज्यू – यो फिर, दूसरी वातयह है कि ...।

६. दीठा – देखने पर।

७. कासू – क्या, कौनसा।

८ माठारै...घाव – एक कहावत, जिसका तात्पर्य है कि व्यंग्यपूर्ण वात शान्त व्यक्तिको छड़ीकी भांति लगती है किन्तु तेज व्यक्तिके उससे घाव हो जाता है।

९. पोतारता – प्रोत्साहित करते हुए, 'हाथियो को पोतारना' प्रसिद्ध है।

१० उचारता – उच्चारण करते हुए, वोलते हुए।

११. वाथ मारै – हाथमें लेना, सर पर लेना।

१२ पटहडै – टूट पड़े।

१३. आधारै – आधारित कर ले, रोक ले।

१४. वीजनुं वाई – विजली पर भी प्रहार किया।

१५. म्हाचीन्ह – लेखकका तात्पर्य संभवतः हिन्द चीनसे है जो दक्षिण-पूर्वी एशियामें है।

१६ परहरै – भागते हैं।

१७. डड भरै – जुर्माना देते हैं।

ईणनू रुसाय[1] कुण आगवण करै। ईणसू आदमी कुण जो अडै। जिणसू देव दाणव ही विमुहा पडै[2]।

दोहा–सके बका सात्रुहर[3], सूर पराक्रम सेर।
अवरग साह अवलिया, जग सहो कीधो जेर[4] ॥ १
राह दला रखे रजा[5], पहो मनह पेपाण[6]।
अभग नवू पड[7] उपरा, अवरग फेरी आण ॥ २

वात

ईसडो अवरगसाह पातसाह। तिणरो पोतो[8] अजीमसाह[9]। नरनाह। बिजाई[10] पातसाह।

दोहा–भारथ पारथ ज्यू भिडै[11], सकजापणरी सीम[12]।
गुमर न दूजाचो गिणै[13], एहो स्याह अजीम ॥

वात

जिकण अजीमसाहनु बगालारो सोबो[14] दे विदा कीधो। जिण बगालामे साठ हजार पठाणारो फसाद उठियो तिकणनू मार लीधो। तिकणरी तईनातीमे नाजर[15] १ पातसाह कीधो। जिका पातसाहरो

---

१ रुसाय – क्रोधित कर।
२ विमुहा पड – मुँह फेर कर भागते हैं।
३ बका सात्रुहर – बांके शत्रु।
४ जग जेर – जिसने सारे जगतको व्यथित कर दिया है।
५ रखे रजा – सेनाको अपनी आज्ञासे रास्ते पर अर्थात व्यवस्थित रखता है।
६ पोह पेपाण – मन में जबरदस्त मान करने वाला।
७ नवू पड – पृथ्वीके नव खण्ड भारत इलावृत किंपुरुष, भद्र केतुमाल, हरि हिरण्य रम्य और कुरु।
८ पोतो – प्रपौत्र।
९ अजीमसाह – औरंगजेबके शाहजादे मुअज्जमका द्वितीय पुत्र अजीमुश्शानसे तात्पर्य है।
१० बिजाई – दूसरा ही।
११ भारथ भिडै – युद्धमें अर्जुनकी तरह लड़ता।
१२ सकजापणरी सीम – परम पराक्रमी।
१३ गुमर गिणै – किसी दूसरेका गर्व नहीं मानता।
१४ बगालारो सोबो – बंगालका सूबा।
१५ नाजर – शाही महलों में प्रायः नपुंसक नाजिरका (निरीक्षकका) काम करते थे।

दसतूर जिकाही वसत[1] वा आदमी दोढीमे[2] जाय जिणांनू देखनैं जावा देवै। घणों हाजर रहै। किणहीसू स्याहजादो छांनौ[3] वात करै तद ओ भी आय कान देवै। स्याहजादाकी दोढी प्र घणो तकरार करै[4]। स्याहजादो ईणनू तकरार कर कहै। थे तकरार करो छो पिण कैदी पातसाह वा कैदी स्याहजादारो दसतूर छै। हू मोवो साधु नै सरहद वांधू। तिणरी दोढी पर तकरार न पटावै[5]। अठै तो केई तरैका जुवाव साल[6] आवै।

इण तरह मनै कीधो[7] तो भी न मांनी। ओ तो रापै अवरगजेवकी मरजीदानी[8]। तरा[9] स्याहजादै उकीलांनै[10] लिप तलास कर इणनू तगीर करायो[11]। सो पातसाह कनें जाय वहाल होय वाहीज षिजमत[12] लेर फेर उठै हीज आयो। तिणनु आवतो सुण स्याहजादै माथौ धूण्यो[13] नै सिरविलदपानू[14] कहियो। ओ नाजर आवै छै। ईणनु मारो। पण पातसाह न जाणै तिका तरह विचारो। तरै स्याहजादारो हुकम माथै धारियो। नै धीर जमीदार हुतो तिणरी नाव[15]

---

१. वसत – वस्तु, चीज।

२ दोढीमै – ड्योढीमें, द्वारमें। महल अथवा घरके मुख्य प्रवेश द्वारको ड्योढी कहा जाता है। क्योंकि इनमें मुड कर भीतर जाते हैं, सीधे नहीं।

३ छानी – छिप कर, गोपनीय।

४ दोढी प्र[पर] घणो तकरार करै – ड्योढ़ी पर बहुत तकरार करता है।

५. न पटावै – नहीं निभती।

६ जुवाव साल – जवाव-सवाल, प्रश्नोत्तर।

७ मनै कीधो – मना किया।

८. मरजीदानी – कृपापात्रता।

९. तरा – तब।

१० उकीलानै – वकीलोको।

११ तगीर करायो – वुलाया।

१२. वाहीज पिजमत – वही खिदमत, वही सेवा।

१३ माथौ धूण्यौ – सिर धुना।

१४ सिरविलदपानु – शेर वुलदखाको। यह औरगजेवके शाहजादे मुअज्जमके द्वितीय पुत्र अजीमुश्शानका एक सेवक था।

१५ नाव – नाम।

ले उण नाजरनू राहमें हीज मारियो। पण वो तो पातसाह अवरंगजेव। जिणसू छिपै नही किणहीरा मनरो फरेव। किणहीरा मनमें जिकोई काम आवै जिको औ अवलिया थकौ पहली हो पाय जावै। अर हलकारा[1] घडी घडीरी खबर हजूर गुजरावै[2]। तिकासू किण भात छिपै आ वात। हलकारा, वाकानवीस, कुफियानवीस, डाक चौक्या[3] अरज लिखै दिन रात। सो पातसाहसु छिपी अरज पहोती[4]। सिरबिलदखासू रीस ठाणी[5]। अर कैद कर किलै चढावणरी मन माहि आणी। पण अजीमसाह आ मरजी पिछाण सोच कीधो अप्रमाण[6]। स्याहजादो ईणनू किणरै सरणै म्हेलै[7]। अवरंगजेबरी क्रोधानळ कुण सीस झेलै। ईण भात विचार करनै कहियो। पातसाहरो पूनी आगै भी म्होवतपा देवगढ हीज सरणै रहियो। दूजा राजा राणा राव सो तो पातसाहासू कोई न रोपै पाव[8]। आ वात स्याहजादारै मन भाई। तद देवगढनै सारी हकीकत लिख चलाई। तिको देवगढरो धर किसो हेक ?

दोहा—सवज दिली चितोडसू, आडो सदा अभग[9]।
रिण गहलो धर रावता[10], जद तद मडै जग[11]॥

वात

सो देवगढनू हकीकत लीपी। सरबुलदनै सरणै रापीजै। अर

---

१ हलकारा—हरकारा खबरनवीस।
२ गुजराव—विदित करें।
३ वाकानवीस डाक चौक्या—मुगलकालमें समाचार वाकयानवीस खुफियानवीस (गुप्तचर) और डाक चौकियों द्वारा प्राप्त किये जाते थ।
४ पहोती—पहुची।
५ ठाणी—ठानी निश्चित की। ठाणी, ठाण थाण थानक आदि शब्दोंका विकास संस्कृत शब्द स्थान' से हुआ है।
६ सोच अप्रमाण—असीम चिन्ता की।
७ किणरै म्हेल—किसकी शरणमें रक्खे।
८ पातसाहासू रोप पाव—बादशाहके विरोधमें कोई खडे नहीं होते।
९ सवज अभग—सदा ही अपने कामके लिये दिल्ली और चित्तोडका विरोध करने वाला।
१० रिण रावता—युद्धके लिये उन्मत्त रावतोंका घर (प्रतापगढ)।
११ जद जग—जब तब, बार-बार युद्ध करता है।

मोसू ईतरो आसान दाषीजै[1] ।

आ हकीकत देवगढ आई । तरा कितराहेक तो विचार सोच कीधो । अर म्होकमसिंघ सुणनै पहरिया[2] वैठो थो सो सरपाव[3] अर घोडो घणो[4] धन पवरदारनू दीधो । सो आ तो म्होकमसिंघ उधारा आंटांरो लेणहार[5] । सरणै आयांरो साधार ।

दोहा—मंडै रिणथट मेलवै[6], कांटा काढणहार[7] ।
कल सिर उपरा टांकसौ[8], आंटा लेय उधार[9] ॥ १

राव राजा सरणै रषै, महि असहां घड़ मोड़[10] ।
अभंग झिलै जग उपरां[11], अईवो कमां अरोड़[12] ॥ २

वात

सो म्होकमसिघ जाय नै उणहीज वेळा[13] रावत प्रतापसिघनु कहियो ।

श्री दीवाण[14] हू घणां दिनासू मनमै वाछतो[15] थो तिको मनरो मनोरथ हमै[16] लहिये । मन मांहि आधप[17] थी सो अवरंगजेवसू हर

---

१. मोसू'' दाषीजै — मुझ पर इतना अहसान प्रकट कीजिये ।
२ पहरिया — पहिने हुए ।
३ सरपाव — शिरोपाव, वस्त्राभूषण । 'सरपाव' की भेंट आदरसूचक मानी जाती है ।
४ घणो — बहुत ।
५ उधारा आटारो लेणहार — शत्रुताका बदला लेने वाला ।
६. मडै ' मेलवै — युद्ध आयोजित कर मेल कराता है ।
७ काटा काढणहार — कांटे निकालने वाला अर्थात् खटकने वाली शत्रुताको नष्ट करने वाला ।
८ कळ'''टाकसौ — सिर पर युद्धको धारण किये रहने वाला ।
९. आटा' 'उवार — उधार शत्रुता लेने वाला ।
१० महि'''मोड — संसारमें शत्रुओंकी सेनाको पराजित करने वाला ।
११ अभग ' उपरा — धरती पर अखण्ड रूपमें सुशोभित होता है ।
१२ अईवो'' अरोड — महोकमसिंह ऐसा वीर है ।
१३. उणहीज वेळा — उसी समय ।
१४. श्रीदीवाण — हे शिशोदिया रावत प्रतापसिंह ।
१५ वाछतो — वाञ्छना करता, इच्छा करता ।
१६ हमै — अब ।
१७. आवप — प्रवल इच्छा ।

भात चकमाली कर अडा लडा[1] तो कै तो सुरगनु पटा[2] कै पड विहड होय पतमै पडा[3] । हर रजपूतीरा जवाहरानू रूपकामै जडा[4] । तिका परमेसुर अणचीती[5] थकी कीवी । मन माहे चाहै छा जिका ही आज आण वधाई दीवी । अवै मरवुलदपानु हू जायनै त्याउ । उणनै सरणै रापीज । अरु मौनै हरोल कीज[6] नै अवरगजेवसू लडाई अर आटारी वात दापीजै[7] । जिण वेळारो म्होकमसिंघरो तेज अरु उछाह[8] ईसडो दरसावै तिणरा कवेसुर वापाण करै[9] तो ही उछाह अरु प्राक्रमरो[10] पार न पावै ।

कवित–कथ साभल[11] ईम[12] क्रमो, विहद उछाह वधारे[13] ।
वरण अरुण बिलकुले[14], सूरपण सरण सधारे[15] ॥
वण नव जोवन बनौं[16], चौंप वीवाह करण चित[17] ।
किना जीत सग्राम बले, पल भाज लीध पित[18] ॥

---

१ चकमाली लडा – छडछाड कर भिडें और लडें ।
२ पडा – जावें चलें ।
३ पड पडा – टुकड-टुकड हो कर रण-क्षत्रमें पडें ।
४ हर जडा – और राजपूती शूरवीरता रूपी रत्नोंको काव्य रूपी आभूषणोंमें सुशोभित करें ।
५ अणचीत – बिना सोची हुई कल्पनातीत ।
६ मौन कीज – मुझे युद्धके अग्रभागमें रखिये ।
७ दापीज – कहिये ।
८ उछाह – उत्साह ।
९ कवेसुर कर – कवीश्वर बखान करें ।
१० प्राक्रमरो – पराक्रमका ।
११ साभळ – सुन कर ।
१२ ईम – ऐसे ।
१३ विहद वधारे – बेहद बहुत उत्साह बढाता है ।
१४ वरण बिलकुले – लाल वर्ण, दैदीप्यमान होता ।
१५ सूरपण सधारे – शरणमें आए हुएकी रक्षा करे ।
१६ वण बनौं – नवयौवनसे युक्त दूल्हा बन कर ।
१७ चौंप चित – चित्तमें विवाहकी आकांक्षा धारण कर ।
१८ किना पित – अथवा युद्धमें विजयी बन कर और अपने बलसे शत्रुओंको नष्ट कर धरतीको लेता है ।

उगियो बदन बारह अरक[1], बीर रूप सोभा बरण[2] ।
देषियां हीज आवै बणे[3], तिण वेलां हरियंद तण[4] ॥ १
अंग रोम ऊल्हसै[5] तेज, चप मुष रातवर[6] ।
मूंछ भुहारां मिळै[7], पांव नह लगै धरा पर[8] ॥
भुजा कंध उभार, उवर उछाह न मावै[9] ।
अधर हास वोपवै[10], छोह छक[11] अति दरसावै ॥
उफणै उमंग गहमह[12] अनत, बीर रूप सोभा वरण[13] ।
बे[दे]षियां हीज आवै बणे[14], तिण वेला हरियंद तण ॥ २
पताहू त पाधरै, अरज कोधी तिण ओसर[15] ।
चित सदा चाहतो, मिल्यौ तिसड़ो हीज मोसर[16] ॥
अवरंगसूं करि आंट[17], अड़ण पागां दाषीजै[18] ।

---

१. उगियो'' अरक – बारह सूर्योंके तेजसे समता वाला उसके मुंहका तेज उदित हुआ।
२ ग घ प्रतियोमे 'बीर साद वोले वयण' पाठ है।
३. देषिया' वणे – देखते ही बनता है।
ग. घ. प्रतियोमें 'इळ वीच ऊीत रावण अमर' पाठ है।
४ हरियद तण – हरीन्द्र तनय–हरिसिंहके पुत्र महोकमसिंहका।
ग. घ प्रतियोमे यह पाठ है–'गमर सीस लागौ गयण।'
५ ऊल्हसै – उल्लसित होता, सुशोभित होता।
६ चप रातवर – लाल नेत्र और मुह।
७ मूंछ'' मिळै – मूछें भोहोसे मिलती हैं।
८. पाव' पर – उत्साहमे पैर पृथ्वी पर नहीं टिकते हैं।
९ उवर ' मावै – उरमे अर्थात् हृदयमें उत्साह नहीं समाता।
१०. अधर ' वोपवै – ओठो पर हास्य सुशोभित होता है।
ग घ. प्रतियोमे 'वोपवैके' स्थान पर 'ओपवे' पाठ है।
११ छोह छक – पूर्ण उत्साह।
१२. उफणै गहमह – समूहमें उत्साह उफनता दिखाई देता है।
१३ अनत वरण – अद्वितीय वीरता, रूप और वर्णकी शोभा।
१४ ग. और घ. प्रतियोमें 'आवै वणे' के स्थान पर 'वण आवहो' पाठ है।
१५. पताहू त'' ओसर – उस अवसर पर सीधा प्रतापसिंहसे निवेदन किया।
१६. तिसडो हीज मोसर – वैसा ही अवसर।
१७ आट – वैर।
१८ अडण पागा दाषीजै – तलवारोसे लड़ना देखिये।
ग घ प्रतियोमे 'दाखीजै' के स्थान पर 'आषीजै' पाठ है।

बिलद जिसो बरयाम[1], राज सरस रापीजै[2] ॥
ससार की न रहसी सियर[3], सत्रा दहण रिण साररी[4] ।
जावसी नहीं जाता जुगा, श्रै बाता ईण वाररी[5] ॥ ३

वात[6]

सौ म्होकमसिंघ इसी मोटी वातानू वाय[7] मारै । नित धारणा आहीज धारै । कलिमैं[8] वात उवारै । जिण तिण वेढमैं[9] ईणरी हीज पहल होय । इणरी जा जळ न आवै कोय ।

एक दिनरै समे जोग रावत प्रतापसिंघ कनै[10] एक पडित पुराणीक[11] आयो जिकण वडा वडा ग्रथारो समुद्रको सो[12] पार दरसायो । तिणसू रावत धरम मास्त्र पुराण विद्या पडिताईकी चरचा कराई ।

---

१ बिलद जिमो बरयाम – शेरबुलदसा जसे धीरयो ।
ग प्रतिमे कीरत धर उर धोच' पाठ है ।

२ ग प्रतिमें 'रसा कीरत रावोज पाठ है ।

३ मसार सियर – ससारमें कुछ भी स्थिर नहीं रहेगा ।
की न' के स्थान पर ग में कीत' और घ में माभ' पाठ है ।

४ सत्रा मारी – युद्धमें तलवार चलाने और शत्रुओंको मारनेकी ।
ग में रिण सार' के स्थान पर उरसाल' पाठ है और घ में सत्रा सारी' के स्थान पर प्रभग सार आचाररी' पाठ है ।

५ ईण वाररी – इस बारकी, इस समयकी ।

६ ग घ प्रतियोंमें बातसे पूर्व निम्नलिखित सोरठा दूहा हैं—

कवियां दाळद काय लाखां लाख पसाव दे ।
उ रावत परताप हुव वाता हरियदतण ॥ १
के केवी सिर काप, देवी हूता भय दिया ।
ऊ रावत परताप सायजादां सरण रय ॥ २
जग रायण जस वास जु गम पता मोहकम निसा ।
ईहणां पूरण आस हद झोपा हरियदतणा ॥ ३

७ वाय – बान प्रवृत्ति । वायके स्थान पर "बाय" (बाहु) पाठ अधिक उपयुक्त है ।

८ कलिम – कलहमें युद्धमें ।

९ वेढमें – युद्धमें ।

१० कन – पास समीप ।

११ पुराणीक – पौराणिक, पुराणोंका जानकार ।

१२ समुद्रको सो – समुद्रकी भांति गहन ।

जिका सारी ही सभाकै अर पडिताकै दाय आई[1]। कितराहेक दिना पडतनु राप घणौ धन दांन दिषणा[2] दे विदा कीधौ। पडित भी राजी होय आसीरवाद[3] दीधो। मन माहे घणो सिहायो[4]। विदा होय आपरा घरानु धायो।

जठे येक पीपलोद गाव मैवासा माहे[5]। जठै रहै डोडिया[6] रज-पूत। जिकारै गढ नै मैवासो भी मजबूत। जिके मैवासी हुवा थका दोड धाडा[7] करै। जिण किणहीसूं न डरै। टणकापणामै[8] तो भला रजपूत। पण मैवासारै सबब करै चोरी गोहरीरो पण सूत[9]। तिके छत्री धरम[10] तो न विचारियो। उण पडतनु मारियो। घणो धन देग लेणरो लोभ धारियो।

आ बात रावत प्रतापसिघ कनै आई। सो सारा हीनू न सुहाई। तद रावत वानू कहायो थे ओ कासू[11] कर्म कीयो। ईसा पडतानु मार धन लीयो। आ रजपूतीकी रीत नही जको या लोगानै लूटै अर मारै। यानै तो दान दिषणा देबो ही विचारै। थे मैवासी छो तो ओर जायगां दोडा-धाड़ो करो। म्हारै कनै आवै जावै जिकणसू तो डरो। याको[12] धन तो परो दिरावो[13]। अरु ब्रह्महित्याको प्राछत करावो[14]। नही तो पछै ही पिछतावस्यौ[15]। निदान मारचा जावस्यौ[16]।

---

१. दाय आई – समझमे आई, स्वीकार की गई।
२ दिषणा – दक्षिणा।
३ आसीरवाद – आशीर्वाद।
४ सिहायो – सराहना की।
५. मैवासा माहे – जगलमे, पहाडोमे।
६. डोडिया – राजपूतोकी एक शाखा।
७ धाडा – डाका, चोरी।
८. टणकापणामे – सामर्थ्यमें।
९ चोरी · सूत – चोरी-डाकेका कार्य भी।
१० छत्री धरम – क्षत्रिय-धर्म।
१२ कासू – कैसा।
१२. याको – इनका।
१३ परो दिरावो – दे दो।
१४ अरु करावो – और ब्रह्म-हत्याका प्रायश्चित कराओ।
१५ पिछतावस्यौ – पछताओगे।
१६ निदान 'जावस्यौ – अन्तमें मारे जाओगे।

जिका तो कयो[1] न कीनो। हर करडो ही उतर पाछो दीनो[2]। कह्यो रावतजी म्हारै उपरै आयनै कासू पाटसी[3]। म्हारी राड छै कालरी भाट सी[4]। राणौजी अर मूवो[5] अै भी म्हासु टाळो दे छै[6]। वारी[7] धरतीमै म्हे चाहा सो करा छा पण म्हारो नाव[8] न ले छै। रावतजीनु आवणो छै तो वेगा[9] कीजै असवारी। भली भात मनवार करस्या[10]। अठै तो सदाई रहै छै जिण तिणसू गोठरी तयारी[11]। इण भात उतर दे मेलियो[12]। रावतजीरो हुकम माथै न झेलियो[13]।

सो सुण रावतनु अपरती रीस[14] चढी। तिका रावतनु तो आगै ही रीस चढी थी। ईण आगै कासू मैवासो नै कासू गढ गढी थी। पण मोटारी[15] आ ही रीत। चालै मारग होकी रीत। जिणनु मारणौ होय तिणनु[16] एक वार तो कहावै। समझ जाय तो भलाई नही तो सज्या[17] तो पावै ही पावै। ईण रीतरे वासते कहायो। न्ही तो उणनु तो उणहीज वेळा रोस आयो। आ वात सुणता ही डेरा

---

१ कयो — कहा हुआ।
२ हर ... दीनो — और फिर कठोर उत्तर ही दिया।
३ पाटसी — कमायेंगे प्राप्त करेंगे।
४ म्हारी राड ... भाट सी — हमारी लड़ाई कालक झपकेकी भाँति है।
५ राणौजी अर मूवो — उदयपुरके महाराणा और मुगल-साम्राज्यके सूबेदार।
६ टाळो दे छै — टलते हैं, बचते हैं।
७ वारी — उनकी।
८ नांव — नाम।
९ वेगा — तुरन्त जल्दी।
१० मनवार करस्यां — मनुहार करेंगे, युद्ध करेंगे।
११ गोठरी तयारी — गोष्ठिकी तयारी। सम्मिलित आनन्द भोजको राजस्थानमें गोठ कहा जाता है। यहां युद्धसे तात्पर्य है।
१२ मेलियो — भेजा।
१३ न झेलियो — नहीं रखा, नहीं स्वीकार किया।
१४ अपरती रीस — तेज क्रोध।
१५ मोटारी — बड़ोंकी।
१६ तिणनु — उसको।
१७ सज्या — सजा दंड।

वारै कीधा[1]। अर गढ तोडवाका[2] सारा ही सामांन साथ लीधा। वडी वडी तोपा घणा जूटां स्त्री [थी] पीची हालै[3]। जिकारै पाछै मस्त हाथी टला[4] देणनू चालै। वाणारा ऊट ठाठड्यांका थाट[5]। जिकांमै वडी छोटी केई घाट[6]। वडा ऊंचा रिण गढ। निकांमू गढरै लगायनै घणा छछोहा[7] रजपूत होय जिके तुरत ही जाय चढ। नीसरणिया[8] गाडा ऊटां उपरा धराई। दारु[9] सीसा[10] लोह सिणरी[11] गाडियां ऊपरतै भार[12] भराई। वेलदार अर कुहाड़ी वरदार[13] जिकारी जमात दस हजार। जिके वनकटी[14] करै अर मोरचा वणावै। सुरगां पोदै अरु दमदमा[15] चुणावै। रुईरी वरकियांरा[16] गाडा। जिके पढक भरवानू आवै आडा[17]। लकड़ियांरा तिवाव[18]। तिकांसू भुरजा[19] षोदवारा दाव। छकडा भरिया जालियां[20] फेर देणी कितराहेक

---

१ डेरा वारै कीधा – तम्बुओंको बाहर निकाला।

२. तोडवाका – तोडनेके।

३. घणा…हालै – बहुत समूहोंमे खींचने पर चिने।

४ टला – धक्का।

५. वाणाका…थाट – वाणोमे लदे हुए ऊंट और ठाठडियोंके समूह। ठाठडियोमें तीर भरे जाते थे।

६. केई घाट – कई प्रकारकी।

७. छछोहा – तेज, चचल।

८ नीसरणिया – सीढियां।

९. दारु – वारूद (दारुका अर्थ मदिरा भी होता है किन्तु यहा बारूदसे तात्पर्य है)।

१०. सीसा – शीशे अर्थात् जस्तसे वनी गोलियोसे तात्पर्य है।

११ सिणरी – सनकी, जूटकी। तोपो और बन्दूकोको भरने आदिके लिये इसकी आवश्यकता होती है।

१२. ऊपरतै भार – निकलते हुए वोझेमें, वहुत।

१३. वेलदार वरदार – मजदूर और भारवाही आदि।

१४ वनकटी करे – जगलोकी कटाई आदि।

१५. दमदमा – एक प्रकारकी तोपें।

१६ वरकियारा – रुईके जमे हुए परत।

१७ आवै आडा – सहायक वनें।

१८ तिवाव – तिपाये।

१९ भुरजा – वुर्जे।

२० जालिया – सामान लादने, वांधने आदिके लिए जालियोकी (वकरीके बालोकी अथवा खीपकी वुनी पट्टी) आवश्यकता होती है।

वणसटियारा ढोल[1] । महतावा छीकादार अर चोरमार[2] । जिका पर आदमी तईनात पयादा अर असवार[3] । गोफणियारी[4] देणी च्यार तरफासू भाट भोट[5] । जिकारै वीच वीच फिरंगी हुकारी[6] पण चोट । सुरंगा उडावणरो मुसालो[7] । तिका लीन्हा हाजर फिरंगी रसालो[8] । जिका फिरंगी हीज गोलंदाज । ज्या आगै गढ तोडवारा केई ईलाज । गढ तोडवारा जूना न नवा उपाव[9] । तिकारी तयारी करै रावत लागो थको चाव । घणा समर-पडित तिके नवा नवा अपरा[10] करै । त्यानू देपिया नै सुणया बडा बडा गढपती थरहरै । भात भातरा ईलाज साजरी नवी नवी उपगा[11] उठावै । जके उणहीज वेळा नवी नवी रीभा मोजा पावै । जको म्होकमसिंघ सारो सरजाम आणनै दीठो[12] । सो ओ तो सदाई रोपातो नै निरकुरतो दीठो[13] । तिका देपनै मन माहि इण भात आणी । रावतजी तो ईतरो[14] घाट कीधो पण म्हे तो देपता ही गढ उड पडस्या । जिण भात उड पडै वेदाणी[15] । ओ तो थाट सारो पड्यौ हीज रहसी । उठै तो कूद पडिया पछै कोरडी तरवार हीज वहसी[16] ।

---

१ वणसटियारा ढोल – वणके (कपासके पौधोंके) डठलोंके भार । स० वणयष्टि ।
२ महतावा चोरमार – महतावें जिनको लटका कर प्रकाशित किया जाता और चोरोंको मारा जाता ।
३ पयादा अर असवार – पैदल और घुडसवार ।
४ गोफणियारी – गोफनोंकी पत्थर फेंकनेका एक साधन ।
५ भाट भोट – बहुत लगातार, तडाभडी ।
६ फिरंगी हुकारी – हुक्केकी आकृतिक विलायती शस्त्रकी ।
७ मुसालो – मसाला बारूद आदि ।
८ फिरंगी रसालो – विलायती अश्वारोही सैनिक टुकडी ।
९ गढ उपाव – गढ तोडनेके प्राचीन और नये उपाय । तब तक कई यूरोपीय शस्त्र और अन्य युद्धके साधन भी भारतमें प्रचलित हो गये थे ।
१० अपरा – अपर लिखित योजनासे अथवा अखाडा या व्यूह रचनासे तात्पर्य है ।
११ उपगा – उपाङ्ग युद्ध-सज्जाके विभिन्न अङ्गोंसे तात्पर्य है ।
१२ सरजाम आणन दीठो – सरजाम अर्थात सामान और प्रबन्ध आकर देखा ।
१३ रोपातो दीठो – रोपावत क्रोधी, बडबडाने वाला और हठी ।
१४ ईतरो – इतना ।
१५ वेदाणी – बाज पक्षी ।
१६ कोरडी वहसी – केवल तेज तलवार ही चलेगी ।

इण भात म्होकमसिंघ देप हमनं चल्यो गयो। मूढासूं[1] तो काई वात न कही। पण मरजीदान[2] था जिकां मनरी लही। म्होकमसिंघ गढ देपता ही उड पडसी। अर ईणरै माथै घणो असामां सीरोहीयांरो फूलधारारो वाढ भ्रडसी[3]। म्होकमसिंघ डेरे जाय जांगड्या अर ढाढी[4] गवाया। जकी मरजीदान जिका केयक पमायची अर केयक सीधूरा दूहा सुणाया[5]। तिण वेळा माथ्यारै छक[6] आवै छै। तोणानु दूणा त्यांणा अमल करावै छै[7] अर म्होकमसिंघरा मनकी उमग न मावै छै। उण वेळांरो रूप अर चोप देष्या ही बणि आवै छै। ज्यौ छकियौ छैल पर गैलग साथियानु चौंप चाव चितावै छै[8]। ईण भात हंसतो हसावतो उमग उफणावतो थको निपट ताता भ्रांप पाता टापा उपर टापा देता काछ्या पर चढ्या[9]। अरु फोजसू वढ्या जिका घोडा असवारारो रग ईसो नजर आवै। आगै गढ तो किनेक वात पण दावागीरनै तो उरसमै जाय भ्रपट ल्यावै[10]। तिको उरसरा खेल्लण-हार। गढारा भेळणहार[11]। अणपूछिया ही दीसैं[12]। राडरा म्होरी अैहीज होय विसवा वीसै[13]। तिको औ नो सदाई कवांरी घड़ारो[14] भेळणहार। रिणरो रिझवार। चवरी उपर वींद जाय जिण भांत

---

१ मूढासू – मुंहसे।

२ मरजीदान – कृपा-पात्र।

३ घणो ' भ्रडसी – अनेक तलवारोंका असीम प्रहार होगा। सीरोही और फूलधारा तलवारोके भेद हैं।

४ जागड्या अर ढाढी – जागड और ढाढी, राजस्थानकी विशेष गायक जातिया हैं।

५ केयक सुणाया – कई समायची और कई सिंधू रागके दोहे सुनाये।

६ छक – तृप्ति।

७ अमल करावै छै – अफीम खिलाते हैं।

८. पर गैलरा ' चितावै छै – पीछे रहने वाले अर्थात् निरुत्साही साथियोमें उत्साह और चाव प्रकट करते हैं।

९ निपट ताता चढ्या – निपट तेज, भ्राप खाने वाले और टापोंका प्रहार करने वाले कच्छी घोडो पर सवार हुए।

१० पण'''भ्रपट ल्यावै – किन्तु विरोधीको तो आकाशमें जाकर भी भ्रपट लावें।

११ भेळणहार – नष्ट करने वाले।

१२. दीसैं – दिखाई दें।

१३ राडरा वीसैं – मानो युद्धमें अग्रणी वास्तवमें यही हो।

१४ कवारी घडारो – नहीं लडी हुई, अछूती सेनाको।

विहसतो विळकुळतो अळवळियो भवर[1] हुवो थको तापडो[2] कवरारा साथनू लेन तुरी तोरिया[3] । जका पैलारा घणा थाटमैं ओघाट घाट जिकण उपर ओरिया[4] । जठै पडणहार पडिया । अर सिरोहियारा सार झडिया । चढिया घोडा गाव भेळ दीधो[5] । नीसाण[6] आपरो पडो कीधो ।

पाछामू लोपपानो नै हरोळरो साथ[7] आयो, तिका गाव तो भेळयो हीज पायो । रावत प्रतापसिंघ वडा सामान नैं वडी फौजारा घसार[8] लीधा थका गढ आण लागा। अर विसररा त्रिवागल्ल ठोड ठोड वागा[9]।

दोहा–पगा उलधा कर पिवँ[10], चीत असगा चाय[11] ।
वागा सीधू बीर डक[12], लग्गा रावत आय ।। १
चडिया छोह[13] बहादुरा, जडिया जरद[14] जवान ।
रूडिया अचक राडरा[15], अडिया भुज असमान[16] ।। २

---

१ अळयळियो भवर – अलबेला युवक ।
२ तापडो – पुष्ट तेज, तगड़ा ।
३ तुरी तोरिया – घोड़े चलाये ।
४ पलारा मारिया – विरोधियोंकी भारी सेनामें जो विशेष वीर थे उन पर आक्रमण किया ।
५ गाव भेळ दाधो – गाव नष्ट कर दिया ।
६ नीसाण – निशान, चिह्न ध्वजा ।
७ हरोळरो साथ – हरावल अर्थात सेनाके अग्रभागका साथ ।
८ घसार – समूह ।
९ बिसररा वागा – युद्धके नगारे स्थान-स्थान पर बजे ।
१० पगा पिव – अपार वीरतासे तलवारें चमकाते हैं ।
११ चीत चाय – चित्तमें शत्रुओंसे लड़नेकी चाहना करते हैं ।
१२ वागा डक – सिंधूराग होने पर और युद्धके नगारे बजने पर ।
१३ छोह – क्षोभ क्रोध ।
१४ जरद – जब रक्त वर्णके तमतमाते हुए रंगके ।
१५ रुडिया अवक राडरा – युद्धके नगारे बजे ।
१६ अडिया भुज असमान – भुजाएं आसमानके (आकाशके) जा लगीं ।

हर गीतडा[1] गवावणा ।

दोहा—उतर घोडा आविया, उछाछला अरीठ[2] ।
अगा चाक चहोडिया[3], धिपती तोडा ढीठ[4] ॥ १

वात

ईण भात वात कहता तो वार लागै। रजक जागी[5] । कना तोप-पानारी ईक पलीती दागी[6] । हर गोळा छूटी । अर अै पण तोपारा आगोळा । किना भूपा नाहरारा सा टोला[7] । दागिया बाण किना आकासरा सिचाणरी नाई तूटा[8] । जिण समै बीरहाक किलकार बागी[9] अर महा प्रळै काळरी सी घडी जागी । जठै माहिली बदूका छूटै छै । जको येक येक गाळी दस दस आदम्यामैं फूटै छै । लोथ पर लोथ पडै छै । अर मोतियाकी सी माळा भडै छै । जका लोथियाग पगथिया[10] कर कर घणा हेतू भाई भतीजा बाप बेटा उपरा पग धरता अर घणो हरप[11] करता कोटमै पडणनु धावै छै। त्या उपरा अपछरारा विमाण घणा साघणा अडबडाव छै[12] । यारो छछोहापण[13] इसो सो अपछरारा

---

१ गीतडा—गीत राजस्थानी भाषामें काव्य सम्बन्धी छन्द विशेष जिसके कई रूप होते हैं। कहावत है कि 'नाम गीतडांस् होय।'
२ उछाछला अरीठ—चञ्चल शूरवीर।
३ अगा चाक चहोडिया—अंगोंमें वीरता धारण कर।
४ धिपती तोडा ढीठ—वीरता और दृढता प्रकट होती थी (?)
५ रजक जागी—बत्ती जलाई गई (?)
६ ईक पलीती दागी—एक पलीता दागा गया, पलीता=तोप चलानेके लिए जलाया जाने वाला कपडेका टुकडा।
७ नाहरांरा सा टोला—शेरोंके से झुण्ड।
८ सिचाणरी नाई तूटा—बाजकी तरह टूट। सिचाण शब्द स सचानका अपभ्रंश रूप है।
९ बागी—बजी   ई।
१० पगथिया—सीढियां सोपान।
११ घणा हरप—बहुत प्रसन्नता।
१२ अपछरारा विमाण अडबडाव है—अप्सराओंके विमान बहुत समीप आवाज करते हुए उडते हैं।
१३ छछोहापण—तेजी।

विमांण ही पाछै रहै छै। अर यारी कटारियां हंस हालिया पछै[1] कोटनू जाय जाय वहै छै। तिको अपछरा माळा पकडिया चक्रत चित[2] होय रही छै। मन माहि आधारै छै[3]। म्हे तो ईणनु अठै वरियो[4] पण ईणरी कटारी तो कोटनु जाय जाय वहै छै। ईण भात पड़ता लड़ता लडपडता नीसरणीया लगायनै चढै छै। कितराहेक पाछै छै तिके आगै होयनं चढै छै। तिके आगै चढ्या तिकांरां कांधा पीठ उपरा पग दे दे नै आगानु परहरै छै[5]। तठै यारो चाव नै धाव देप जमराण[6] पिण डरै छे। मन माहि ओ उसवास[7] धरै छै। कोटकासू मलफनै[8] मो उपर वाहै[9] आय। अै तो आदमी नही कोई महा प्रलयकाळरी लाय[10]। अै तो ईसडा ई वलाय। जिकासू जम ही टाळौ दे जाय[11]।

ईण भांत नीसरणिया चढै छै। अर चढता थका गोळिआं लागै छै सो उलट उलट पडै छै।

दोहा—पिंड[12] गोळी लगीया पड़ै, भड़ आछा ऊछाह[13]।
जांणक[14] नट उलटिया, पट हुता पछाह[15] ॥ १

---

१ हस हालिया पछै – प्राण निकलनेके पश्चात। हंस=प्राणको भी कहा जाता है।
२. चक्रत चित – चकित चित्त, भ्रमित चित्त (वीरोके युद्ध-कौशलसे)।
३. आधारै छै – निश्चय करती है। धारणा करती हैं।
४ वरियो – वरण किया।
५. परहरै छै – बढते हैं, चलते हैं।
६. जमराण – यमराज।
७. उसवास – डर, चिन्ता, उच्छ्वास।
८. मलफनै – कूद कर।
९ वाहै – चलावे।
१०. लाय – लपट।
११ टाळौ दे जाय – बच कर जावे।
१२ पिंड – शरीर।
१३ भड आछा अछाह – श्रेष्ठ और उत्साही वीर।
१४. जाणक – जानो, मानो।
१५ पछाह –पीछे।

वात

तिको बारनातू[1] तो रटा तक दीजे दाद[2] । पण माहिलारी[3] भी रजपूती हूदसूं ज्याद । जिके इण गजबनु चाहनै पाहुणा करै[4] । जिके पिण इसड़ा ईज होय जिको पाणीरो लोटचो रूड़ाहीज भरै । जिको बारला तो निपट अमामी अनाघात अदभुत अछूती रजपूती करै छै । पण माहिला तो इणरो भै[5] तिल मात्र भी न धरै छै । घणो गुमर[6] नै बोझ लीधा थका बाका वचन वरवरै छै[7] । अर घणी मनवारियां[8] करै छै ।

नठै गोळियांरी पड़ै छै ताड़[9] । तिको गडारी मणक[10] विना घणा मेहरी बोछाड़ । इण भात घणी साघणी मार दे छै। अर दारूरा प्याला ले छै[11] । घणा वउ[12] सवाय रस विनासमैं ठाउ हुवा थका[13] आलधा[14] भतर । एकसूं एक चढ़ता डोडियारा चतर[15] । घणा नेठाव[16] अर घणा चावसूं वादो वाद[17] गोळिया चलाव छै । चोटरी रीभ पर गोठरी होड़[18] लगाय छै । मा[ह]ारिया कर कर दूणा दोढा

---

१ बारनातू — बाहर वालोंको गढ़ पर आक्रमण करने वालोंको ।
२ [illegible] — प्रशंसा ।
३ माहिलारी — भीतर वालोंको, गढ़वासियोंको ।
४ चाहनै पाहुणा करै — चाह कर मेहमान बनाते हैं अर्थात् जानबूझ कर लड़ते हैं ।
५ भै — भय ।
६ गुमर — गर्व ।
७ वरवरै छै — बोलते हैं ।
८ मनवारियां — मनुहारें ।
९ ताड़ — तड़ातड़ बौछार ।
१० गडारी मणक — गोलोंकी वर्षा ।
११ दारूरा प्याला ले छै — मदिराके प्याले पाते हैं ।
१२ वउ — दूसरी बार घोटाई हुई तेज मदिरा ।
१३ ठाउ हुवा थका — तृप्त हुए मस्त हुए ।
१४ आलधा — आलस्य लोभी ।
१५ डोडियारा चतर — डोडिया राजपूतोंके पुत्र ।
१६ नेठाव — दृढ़ ।
१७ वादो वाद — बड़ा बड़ी प्रतिस्पर्धा ।
१८ गोठरी होड़ — गोठरी अर्थात् प्रीतिभोज देनेकी बराबरीकी बाजी ।

अमल करावै छै। अर अमामा[1] तीरंदाजानै चोप चढावणरी वातां वतळावै छै जिणांरी चोट अमांमी लागै छै। निणानुं हाथसूं प्याला दीजै छै अर रीझा कीजै छै। घणा मीह[2] जामा अतरमैं तिलवाय कीधा[3] तिकारा वध छाती उपरासुं पोल्ल दीधा छै। जिके पुल रया छै। घणां मोतियारी माळा नै जवाहरारा जाळ उर उपर रुळ रह्या छै[4]। माहो माह गुलाव छिड़कीजै छै। चनण अरगजा गाता उपर लगाईजे छै। अपछरा वरणनु अर मुरग माहै ववर करणनुं चोप जगाईजै छै[5]। तिको अणपूछिया ही विसडोहिक दीसै। अँ तो अपछरा परणै ही विसवा वीसै[6]। कै तो नवल बना आलीजा पनां[7] सेजसूं रस भीजिया थका अबारू ही[8] उठ धाया छै। कै चोप रीझ ठाणवानु[9] महल रग माणवानू[10] अवैं उठ धाया छै। जरकसी वादळारी पाघां जिकांरा ढीला पेच उपरा लावा पटारा पेच वडा पेचासूं वाध राख्या छै। जिकामैं उळझिया थका मोतियारी लडारा पेच केया केया न्हापिया छै[11]।

तिके ईण भात वणिया थका छैल नजर आवै छै तिकौ अँ सारा ही मगरूररा फैल[12]। वेपरवाह हुवा थका वाह करै छै[13]। जिण भात वाग माहि हदफरी चोट धारै[14] ईण भात ईण वेळामैं चोप

---

१. अमामा – तेज, कुशल।
२ घणा मीह – बहुत महीन।
३ तिलवाय कीधा – तर किये।
४ रुळ रह्या छै – बिखर रहे हैं।
५. चोप जगाईजै छै – इच्छा प्रकट की जा रही है।
६ विसवा वीसै – पूरी तरहसे, अवश्य ही।
७ आलीजा पना – आली जहाँपनाह, आदरसूचक प्रयोग।
८ अवारू ही – अभी ही।
९ ठाणवानु – निश्चयके लिये।
१० महल रग माणवानु – महलमें आनन्दोपभोगके लिये।
११. न्हापिया छै – डाले हैं।
१२. मगरूररा फैल – मगरूरके तुफैल।
१३ वाह करै छै – प्रहार करते हैं।
१४ हदफरी चोट धारै – चादमारीका, गोली चलानेके अभ्यासका प्रहार करते हैं।

धारै छै । हाथा पास वदका नवनामी[1] ज्यौ लीधा फिरै छै[2] । जिवा वदूकारै म्होरीयारै[3] फूलारा हार नै मोतियारा तुररा नाग बाध दीधा छै । जिके जाणीजै क कद्रप[4] कोटेक[5] रूप कीया छै । ग्रर ग्राप ग्रापरा नीसाण हाथ लीधा छै । वठै कठै ही पिलवतरी रवासा माहै तीरवारा[6] । तठै खबर रहै त्यारा त्यारा । जिव गायणया पातरिया तवायफारौ थाट[7] ।

तिरानू होलीरा दिनामैं होलीरा ख्याल[8] गावै छै । तिवारै पण ख्यालरा पाव छै । ग्रर गोळियारी नागा थका रजपूत नट मुळट[9] खेलै छै । तिरानू तमासा दिखावै छै । केई केई तायफ[10] लोग न डर छै । वे पण गोलिया वावणरी हाम धरै छै[11] । तिको यासू ईण भात ख्यालामैं रगमे हम रह्या छै । महा मगरूरीसु वीरमै ग्रर ग्रगमै फस रह्या छै । केई केई मोटियार घणा दारूरा माता[12] । रगमे राता । पटा-छूट[13] हुवा । ग्रापरा महलामैं जुवा जुवा[14] । ऐक हाथसू गळवारी न्हाया[15] ग्र हाथसू ही गोळी वाहै छ । माहो माहु मोतियारी माळा

---

१ नवनामी – सब प्रकारकी ।
२ लीधां फिर छ – लिए फिरते हैं ।
३ म्होरीयार – म्याणके सामीने ।
४ कद्रप – कंदर्प कामदेव ।
५ कोटेक – करोड़ों ।
६ वठै कठै [illegible] तीरवारा – कहीं पड़ावके नियालमें बाणा तिरारे हैं ।
७ गायणया पातरिया – गायिकाओं पातुरियों और तवायफोंका समूह । पातुरियों आदिके लिए विशेष देखिये मारवाड़ मरदुमसुमारी रिपोर्ट भाग ३ सन १८६१ ई० ।
८ ख्याल – लगभग गीतोंका एक प्रकार ख्याल राजस्थानी लोक-नाटकोंको भी कहा जाता है । विशेष देखिए-लोक कला निबन्धावली भाग १ भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर ।
९ नटमुळट – एक प्रकारका तमाशा [illegible] ।
१० तायफ – तवायफ ।
११ [illegible] – गोलियां [illegible] होंसला रखती हैं ।
१२ [illegible] – मदिराके नशामें [illegible] ।
१३ पटाछूट – [illegible] ।
१४ जुवा जुवा – अलग अलग ।
१५ [illegible] – [illegible] ।

रीझ रीझवार वार न्हापै छै। अरु गोलीरी चोटनु सराहे छै। केई केई सिरदार (गोलीरी चोटनु सराहे छै) गौळी वाहतां आपरी राणिआं ठकुराणिआ हेत-हासीरी[1] वातां करै छै। जौ अपछरा म्हानू वरणरी मन माह धरै छै। सो काई हुवो। अपछरा आसी। थांरी तो हुई रहसी दासी। अर करसी षवासी[2]।

तिको ठकुराणिआ भी हसनै कहै छै। अपछरा म्हारी बरोबर मुरातब[3] क्यौ कर लहै छै। ईण भांत चोंप चाव माहो माह हित हरप वढावै छै। बंदुका अर प्याला एकण साथ भर रह्या छै[4]। केई केई वारला[5] आय कोटरी भीतसू निपट नेडा[6] भिडिया छै। अर कटा-रीआंसू पोदवानैं[7] अडिया छै।

त्यारै उपरै केसर पतंग रंगरी धार पिचकारिआं तीरकसांमै[8] घाली थकी छूटै छै। अर वंदुकांरा भी मारिआ फूटै छै। कांगरां ऊपरांसू गुलाळां अबीरारा थैलांरी घमरोळ पडै छै। अर मतवाळा भी गुड़ै छै।

ईण भांत फाग नै पागरो[9] षेल दोन्यू ही मांच रह्या छै[10]। गेहर[11] पिण नाच रह्या छै। अर कठै ही म्हांभारथ[12] भी वांच रह्या छै[13]। केई केईक सासत्रोक विधांन अवसांण समैयारै उपरै निरकुरा[14]

---

१ हेत हासीरी – प्रेम और हसीकी।

२ पवासी – पासमे रहनेकी सेवा।

३ मुरातव – सम्मान, पद।

४. वदुकां ' रह्या छै – वन्दूक और प्याले एक साथ भरे जा रहे हैं। इन शब्दोसे मुगल शासनके अन्तिम कालके युद्धोकी पतनोन्मुख स्थिति प्रकट होती है।

५ वारला – वाहरके।

६. निपट नेडा – बहुत निकट।

७ पोदवानै – खोदनेके लिये।

८ तीरकसामै – तरकसोंमे।

९. पागरो – तलवारका।

१०. माच रह्या छै – मच रहे हैं।

११ गेहर – होलीके दिनोमे पुरुषो द्वारा छडिया वजाते हुए नाचा जाने वाला एक वृत्त-नृत्य।

१२. म्हाभारथ – महाभारत, राजस्थानमें महाभारथ नामक एक कथा गीत अर्थात् पवाडा भी प्रचलित है। सभवत यह प्राचीन महाभारतका ही प्रचलित रूप है।

१३. वाच रह्या छै – पढ रहे हैं। स०-वाचन।

१४. निरकुरा – वैरागी, उदासीन।

हुवा थका विष्णु सिव इष्ट अरचा करै छै। अर मामनरी विध लीधा थका तीण चोपरी भी अरचा करै छै। केई केईक तो केसरिआ करै रंग गहरै छै।

अर किलादार जिका ऊपर किलारो भार। जिका मोनारी कुचिआरी[1] माळा वर कर पहरै छै। म्हानू ईण सहनाणसू[2] लहसी। अर आ तीपरी वात घणा दीन रहसी। कहै छै कवाड पोल जिण वपत तरवारआ वाहा अर काम आवा तिण वपत तरवारियारी चोट वाहता र वहावता ईस्ट सुमरण कर नाम लेणा। अर आघा वधता[3] पावडा देणा। तिको पावडै पावडै अस्वमेधरो फळ पावा। चोप तीपरी वाता काम आया पछ रुपरा[4] माहे गवाया। अर मुकत[5] तो जावा ही जावा।

तिण समै कोई कहै छै। रजपूतीरा साधिक[6] नै ईस्टरा अराधिक[7] ठाकुरै पहली कही थकी तो ओर भी लागै। पण कहिया बिना चोप चाव भी न जागै। माथो पडिया पछै तो तरवार बहै। अर पडतो माथो राम नाम कहै। अनै आगनी ही धाव[8] रहै तो रजपूत वदज्यो[9]। कोई कहै छै परतै माथै तो कटारी वाहू। अरु पडतो माथो हाथमै झेल सिवनै चढाऊ तो रजपूत वदज्यो। इण भात चोप चावसू वाता करै छ। आप आपरा ईस्टरो वानो अलकार धरै छै। तुळसीका मजरारा मोड वणाव छ। ब्रह्मचरज[10] ले छै। दान दे छै अर वेद

---

१ कुचिआरा – चाबियोकी।
२ सहनाणसू – निशानसे।
३ आघा वधता – आगे बढते।
४ रुपरा – काव्यो।
५ मुकत – मुक्त मोक्ष।
६ साधिक – साधक।
७ अराधिक – आराधक, आराधना करने वाला।
८ आगना ही धाव – आगकी ही दौड़।
९ वदज्यो – कहना।
१० ब्रह्मचरज – ब्रह्मचर्य।

भणावैं छै[1] । सो ईण भात तो नेठाव[2] अर चावसू गढ मांहिला लडै छै ।

अर वारला तो निपट पाता पडै छै[3] । झडै छै सो तो झडै छै । अर पड़ै छै तिकौ भी आघोई उळज उळज पडै छै। वारला कितराहेक तो गोळियांरा मारिया मतवाळा हुवा थका घूम रह्या छै। अर कितराहेक नीसरणीया[4] लूव रह्या छै[5]। कितराहेक तो फूट गया छै। अर कितराहेकका हाथ पग तूट गया छै। तिको पण वाळकरी तरह गोडांरै ही वळ ध्यावैं छै। कितराहेकांका तिग[6] तूट गया छै। तिके रिगसता थका लफ लफ कोटरै जाय जाय कटारी लगावै छै। केहक सावता[7] पगां आगै जाय जाय कोटसू लागा छै। तिकानै चांप जितावैं छै। कहै छै देपो ताता पडो[8] । हर कोटमै जाय पडो। म्हे थां पहली घडेक[9] सुरग जावा छा। पण थानू भी लेणनै सतावी हीज[10] आवां छा। वै पण हसनै कहै छै। ठाकुरा सुरग सिधारीजै। सतावी कीजै। म्हारै वास्तै भी सुरगमै नवा नवा पारपरा[11] विमाण आछा आछा तजवीज कीजै। म्हे पण आया। जितरै म्हारा वाटैरा[12] अमृतरा प्याला थे हीज लीजो।

केहकारै सुमार लागी छै[13]। जिकामै वोलणरी तो वकाय[14] रही

---

१ भणावैं छै – पढाते हैं।
२. नेठाव – हठ, दृढता।
३. पाता पडै छै – शीघ्रता करते हैं।
४. नीसरणीया – सीढियां।
५ लूव रह्या छै – लटक रहे हैं।
६. तिग – तग, घोडे पर काठी कसनेका साधन।
७. सावता – साबित।
८. ताता पडो – तेजीसे चलो।
९. घडेक – घडी एक।
१०. सतावी हीज – जल्दी ही।
११. पारपरा – परीक्षाके, प्रकारके।
१२ म्हारा वाटैरा – मेरे हिस्सेके।
१३. केहकारै‥ छै – कईके अधिक चोट लगी है।
१४. वकाय – बोलनेकी शक्ति।

नही पण मूठा हाथ फेर फेर साथियानु कोटमें पडणरी मन[1] करै छै। पिंड[2] तो थक्यो पण जीव तो ईणरो भी कोटमें पडणरी घक धरै छै[3]। कोई सुमार लागा पडतो थको तडछ पावै छै[4]। तिको भी नुळतो थको[5] कोटरी हीज कानी[6] जावै छै।

दोहा–ईल लुट्टै[7] फिर उलट्टै, घाव न घटै धीर।
सिर सट्टै पट्टै[8] सुजस[8], नह मिट्टै बरबीर ॥ १

वात

ईण भात कतराहेक नीमरणिया चढै छ। तिकानू माहिला भालामू माझै[9] छै। जिके दोय दोय तीन तीन आदमी भाला पहर साजणवाळानु जाय जाय नावै छै। उणा माहिलाकी गिरवान[10] पकड पकड ल्याव छै। तिको कुही कुळगरी सी चाट दिपावै छै। इण भात कटारियारी अमरोळ[11] पडै। लोटपोट हुवा तिको आलात चक्करी सी लीक बधी[12] न जाणजे भेळा[13] छै क जुवा जुवा।

ईण भात आप आपरी रजपूतीरी भात स कोई[14] दिपावै। सो वात कहता तो वार लागै। पण म्होकमसिंघन कठै सुहावै। कह्यो

---

१ मन – सकत।
२ पिंड – शरीर।
३ घक धरै छ – उत्साह धारण करता है।
४ तडछ पावै छै – तडाछ खाता है गिरते हुए चक्कर खाता है।
५ नुळतो थको – झुकता हुआ।
६ कानी – तरफ ओर।
७ ईल लुट्टै – धरती पर लटते है।
८ सिर सुजस – सिरके बदलमें सुयश प्राप्त करते है।
९ माझै – सग्हामत।
१० गिरवान – गरेबान गलका कपडा।
११ अमरोळ – मार।
१२ आलातचक्करी बधी – अग्निचक्र जसी रखीर बध गई।
१३ भेळा – शामिल।
१४ स कोई – सभी कोई।

ठाकुरे घणी हुई । मो उभा[1] ईतरी वार लागी[2] अर गढ तूट्यो । इतरी कही अर दोडियो ।

सो रंजकरी[3] रपट । वाजरी झपट । लायरी लपट[4] । चीतारी दपट । वज्र कर मकर किना विह्मनो चक्र छूटो । कैतो ईतरी वात कही र कै दोडतो चढतो नजर ही न आयो । कोटा मांहि तरवार हीज वही । ओरा मोरचारा घणा पाता[5] लागा छा तिका माथा चूण किया। ठाकुरे वो म्होकमसिंघ कोटमै उड पड्यौ[6] । तरवारियारी कडा कड सुण्या । ईण भात तो वारला कही ।

अर मांहिला तो चक्रत चित रह गया । जाण्यो क प्रळैकाळरी बीज[7] पडी । किना परमेसर पीजियो[8] सो आकाससू तरवार वही ।

कवित–मक्र[9] सीस सेटवा चक्र ही कोप चलावै ।
कनां सक्र कर क्रोध वज्र पहाड़ां पठावै ।।
धरे रोस धज धमल[10] आंचकां करण आछटे[11] ।
अंग दहणं[12] अभग असुर सिर जांण उपटे ।।
कर हाक रीठ देतो कहर, वीर डाक वग्गं समौ[13] ।
अण संक[14] जोम षड़ियो[15] अनड़[16] कूद वीच पडियो कमौ ।। १

---

१ मो उभा – मेरे खडे रहते ।
२ ईतरी वार लागी – इतनी देर लगी ।
३ रजकरी – बारूदकी ।
४ लायरी लपट – आगकी लपट ।
५. पाता – तेज ।
६ उड पड्यो – उड पडा ।
७ प्रळैकाळरी वीज – प्रलयकालकी विजली ।
८ पीजियो – क्रोधित हुआ ।
९ मक्र – मकर, गर्व ।
१०. धज धमळ – अग्रणी योद्धा ।
११ आचका करग आछटे – हाथसे तीर चलाते है ।
१२. दहणू – जलाने वाला ।
१३. वीर डाक वग्ग समौ – वीर-गर्जना करनेके समान । वीर ५२ कहे जाते हैं ।
१४. अण सक – निशङ्क ।
१५. पडियो –चला ।
१६ अनड – अनम्र, नहीं झुकने वाला ।

ईय कमौ[1] ग्रहसत्या[2] धूज ग्रग उवर धडके[3] ।
वीरझाल विकराल किना ग्रण काल कडके ॥
मूक सिंधु मरजाद उलट ग्रायो ग्रणपारा[4] ।
किना गजब कोई कहर पडै सिर परम पहारा ॥
हलहले थाट हैकप हुवो झाट ग्रथगा कर झिलै[5] ।
कोटरै सीस घमचाल कज[6] ग्रलै काल जै हो पडै ॥ २
झलके मगल झाल ईला फिर गई उथलै[7] ।
पडि गोलो ग्रज गैब काल टोलो कर चलै[8] ॥
धाड जम धडहडै[9] मेर पडभडै ग्रचुके ।
वीरभद्र बडबडै हण् हडहडै हसके ॥
वूठो क ग्रसण[10] रूठो सकर सीह विछूटो हक समो ।
फूटो क सिंधु तूटो गयण[11] कोट कूद जूटो कमो[12] ॥ ३

वात

ग्रठै सफीला[13] उपरा निपट ग्रमामी[14] तरवारियागी भडाभड वागी । तिण भात होळीरा पेल माहे डडेहडारी[15] कडाकडरी घाई लागै तिण भात लागी । घणी ग्रमामी गजर[16] पडै छै । जिण भात

---

१ ईय कमो – महोकर्मसिंहको देख कर ।
२ ग्रहसत्या – कायर ।
३ धूज धडके – ग्रङ्ग कांपते हैं ग्रौर हृदय धडकते हैं ।
४ मूक ग्रणपारा – समुद्र मर्यादा छोड कर ग्रपार रूपमें उलट ग्राया ।
५ झाट ग्रथगा कर झिलै – ग्रपार प्रहार सहन करते हैं ।
६ घमचाळ कज – प्रहारके लिये ।
७ ईळा उथलै – पृथ्वी चलायमान हुई ।
८ पडि चलै – तोपसे ग्राश्चर्यजनक गोला गिरता है जिससे काल भी बच कर चलता है ।
९ धाड धडहडै – ग्रातंकसे यमराज भी कांपता है ।
१० वूठो क ग्रसण – जैसे वज्रपात हुग्रा हो । स ग्रशनि ।
११ तूटो गयण – ग्रासमान टूटा । स गगन ।
१२ कोट कमो – महोकर्मसिंह गढमें कूद कर युद्ध करने लगा ।
१३ सफीला – दीवारों ।
१४ ग्रमामी – तेज घनी बहुत ।
१५ डडहडारी – डांडियोंकी ।
१६ गजर – चोट ।

प्रळैकाळरा लुहार अहरण[1] उपरा घणारी धामधूम दे वादो वाद[2] लोह घड़ै छै। धारसु धार लाग माहोमाह घणी सिरोहियांरो सांवणो[3] मार झड़ै छै। काळजा फीफरा[4] उपरा झपटता ग्रीध जिके झपटमें आयां थकां कटि कटि पडै छै। तिण रजपूतारै माथै सीरोहियांरा वाड[5] वरणाटक करता तूटै छै नै लोहियांरी धकगोळ चादरा चलै छै। जको जाणीजे क पहाडां उपराथी गंगरा पाळ[6] उतरै छै। छोदा छीदा[7] आछा आछा कमणैतारा हाथांसू तीर सरणकै छै। तिको च्यार च्यार पाच पांच आदम्यामैं फूट परां पथरा उपरा जाय जाय पणकै छै। सो जाणे सूधी धारां निमाछलो मेह[8] पड़ै छै। तिण भांत सिरोहियारी धार झड़कै छै अर केई वीच वीच बीजळीरी सी नांई बंदूका भी किडकै छै। घणा नेठावरा[9] बंदूकारा पिलाडी निकां माहोमाह हो उपाडी। जिको पैला आवतांनु हाथसू धकाय[10] म्होरीनु[11] छातीसु भिड़ाय कटारीरी जायगां गोळी लगावै छै। कठै कठै ई माहोमाह वरछियांरी धमरोळ[12] पडै छै। ईण भात माहोमाह सरावै छै[13]। हर चोप जगावै छै। जठै वरछिया अधसळ[14] हुवा थका गळवाथां घाल जमदढा जडै छै[15]। केहक लथोवथ[16] हुवा थका कटारियांसु

१. अहरण – एरिन।
२. वादो वाद – प्रतिस्पर्द्धामें, बारी बारीसे।
३. सावणो – सघन, पास-पास।
४. फीफरा – फेफड़े।
५. सीरोहियारा वाट – तलवारोंके पैने भाग।
६. पाळ – नाले।
७ छीदा-छीदा – चौडे-चौड़े।
८. निमाछलो मेह – सं० निर्म्लोच वर्षा, अविरल वर्षा।
९. नेठावरा – हठी।
१०. धकाय – धक्का देकर।
११. म्होरीनुं – अग्र भागको।
१२. धमरोळ – मारामार।
१३ सरावै छै – सराहना करते हैं।
१४ अध सळ (अर्द्ध सिलह) – घायल।
१५. गळवाथां जड़ै छै – गलबाही डाल कर एक प्रकारको भयकर कटारका प्रहार करते हैं।
१६ लथोवथ (लत्थोवत्थ) – गुत्थमगुत्था।

सफीला उपरा[1] लोटण कबूतररी नाई[2] लोटता नजर आवै छै। केहक गिरैवाज[3] कबूतररी नाई गिरह पाता नै पलचर[4] पपिया ज्यू भड-फडाता सफीलासु धरती पडता पहली दोय दोय तीन तीन कटारिया लगावै छै। तठै म्होकमसीघरा तो हाथसू तरवार वहै छै अर ईण भातरी चोट करै छै तिका नजरमैं रापै छै हर वाह वा कहे छै। तिको म्होकमसिंघरो नजररो रीपिवो अर रीझरो दापवो। हाथरी उछाग[5] नै पगारी फुरती अर गाढ पर अमट[6] तिको सरदाररी वातानो चार। सो म्होकमसिंघ तो च्याराहीमैं वारपार।

ईण भात म्होकमसिंघ घणो जाडो घूमरो[7] आवै छै। जिणहीमैं उड उड पडै छै। अर इण उपरै घणो तरवारियारो गज बोह झडै छै[8]। ईणरा हाथमू घणा निरलग[9] होय होय पडै छै। ईणरै दातै आय चडै छै। जिको मुरगनै ही पडै छै[10]। ईण भात बात कहता वार लागै ओर मोरचारा घणा पाता अडिया[11]। तिके पण ईण समैं कूद कूद पडिया।

च्यारु तरफ ईण ही तरै होळीरी सी चाचर[12] माची। सो दोनु ही तरफारा आकाय तिके कुण पाय लाची[13]। ईण तरै भात भातरा लोह बाहै छै अर अवसाण[14] साधै छै।

---

१ सफीला उपरा – दीवारों पर से।
२ लोटण कबूतररी नाई – लकी कबूतर एक प्रकारका कबूतर जो आकाशमें लुढ़कता हुआ सा उड़ता है।
३ गिर बाज – गुलाच खाने वाला।
४ पलचर – मांसाहारी।
५ उछाग – उछाल।
६ गाढ पर [थर] अमट – गाढ़ी अर्थात् गहरी, स्थिर और अमिट।
७ घणो जाडो घूमरो – बहुत तेजी और अभिमानमें।
८ गज भड छ – बहुत जोरदार प्रहार होते हैं।
९ निरलग – अंगहीन।
१० पड छ – चलता है।
११ मोरचारा अडिया – मोरचोंक डटे हुए प्रबल वीर।
१२ चाचर – चचरी, एक प्रकारका होलीके अवसरका नृत्य।
१३ आकाय लाची – पुरुषार्थ वालमिंस कौन पीछे हटे।
१४ अवसाण – औसान, मौका।

गीत त्रिकुत[ट]बंध[1]

अणभंग[2] विहु[3] थटपे जुटै, अंग जोस धर कर उपटै ।
सज सकौ आवध[4] अमो समुहां[5], वकारै[6] वर वीर ।
इण भांत थक चंड वोपिया[7], लहरीक किरह हलोलिया[8] ।
कर साह किरमर सुर सम हर ।
अडर अरि हर पछंट[9] सिर पर ।
कससि कँमर फूट वड़ फर ।
पार कर घर गजर धर हर ।
सीस हथ धर सोंपि जटधर[10] ।
दीध तिह वर[11] चंड पत्र[12] पर
गूंद पल[13] वर धपाड़ै[14] रिण धीर ॥ १
नव नूर[15] चढियो भड़ निलां, गढ लाज वांधी जिण गलां[16] ।
हद विहद कर हथहू विया, नृभै[17] नर नपतैत[18] ।
पंजर[19] रुधारी परलकै, रुधराल पाल[20] सुपरलकै ।

---

१ आढा किसनाजी कृत रघुवरजसप्रकास, सम्पादक श्रीसीताराम लाळस, प्रकाशक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरके अनुसार राजस्थानी भाषामें ६२ प्रकारके गीत नामक छंद प्रचलित है (पृष्ठ १८६-१८७) जिनमें 'त्रिकुटबंध' गीत भी है ।

२ अणभंग – अभंग, अजेय ।

३ विहु – दोनो ।

४. आवध – आयुध, शस्त्र ।

५ अमो समुहा – आमने-सामने ।

६ वकारै – ललकारते ।

७. वोपिया – सुशोभित हुए ।

८ लहरीक'' हलोलिया – मानो समुद्रकी लहरोंकी तरह हिलोर लेने लगे ।

९ पछट – प्रहार करने वाला ।

१०. जटधर – जटाधारी, शिव ।

११ तिह वर – उस समय ।

१२. पत्र – पात्र, वर्तन ।

१३. पल – मांस ।

१४. धपाडै – तृप्त करते ।

१५ नव नूर – नया तेज ।

१६. गला – वार्ते, गल्ल, गर्दन ।

१७. नृभै – निर्भय ।

१८. नपतैत – अच्छे नृक्षत्रोंमें उत्पन्न ।

१९. पजर – पिञ्जर, शरीर ।

२० पाल – खाळ, परनाला, चमडी ।

मडि सबल दमगल[1], दलण खलदल ।
प्रबल मलम्ल अटल अचपल ।
विहद[2] छलबल, करत धकबल ।
बहल बीजल, धार बल बल ।
कटि कमल पल, उछल पडि पल ।
तडिछ तड लल, थहे[3] रिण थल ।
रुहिर[4] रल तल, प्रछड पड अचल ।
जुबल अणियल[5], जुडै करिबा जैत[6] ॥ २

तिण वार दल दुहूवा तणा[7], अति अडै भड अड़ियावणा[8] ।
अवगाह अमहा अनड[9] उभा[10], सूर सिंघ अवसाण ।
तन प्रचड रिण अति तापडा[11], वहो लोह वाहै[12] वेभडा ।
पड भाट भड भड, भाट कँगड ।
छुटै बान छड, ताड तड तड ।
बाण छुट वड, मौक सड मड ।
फूट फिफरड[13], कलिज[14] भड फड ।
अतड उधग्ड[15], लोथ लड थड ।

---

१ दमगळ – युद्ध ।
२ विहद – बहद बहुत ।
३ थहे – होती है ।
४ रुहिर – रुधिर रक्त ।
५ अणियळ – सेनाके अग्रभागमें रहने वाले, वीर ।
६ जुड करिवा जैत – विजय करनेके लिये एकत्रित हुए ।
७ दुहूवा तणा – दोनोंके ।
८ अड़ियावणा – शूरवीर ।
९ अनड – अनम्र उग्र ।
१० उभा – खड़े हैं ।
११ तापडा – प्रबल ।
१२ लोह वाहै – प्रहार करता ।
१३ फिफरड – फेफड़े ।
१४ कलिज – कलेजा ।
१५ अतड – आंतें ऊपर आती हैं ।

उलझ आपड़, रुंड रड़ वड़ ।
पंप भड़ पड, वीर वड वड ।
अछर[1] अड वड, धग धडहड ।
इमो मचि आरांण[2] ॥ ३
दईवाण[3] पत्रवट रापतो, अंणगंज[4] म्होकम आपतो[5] ।
समराथि[6] निज हलकार, साथी उरडियो अणभंग ।
अवगाढ पोरस उफणें[7], वहो रीझ करतो जुध वणें ।
अति रोस उपट, रूकरों[8] झट ।
थोग सह थट, रूयण द्रहवट ।
कमल[9] केई कट, समल सट पट ।
फवि झपट सिर रंगट मट फट ।
वणें रिणवट[10], धाट अवघट ।
लड़ै लटचट, कुलट नटवट ।
पलट उलट, पड़त चटपट ।
पहै पग फट, विरद अति पट ।
जीतवा कजि जंग ॥ ४

कवित्त

विहद मचे घम गजर, किरमर[11] अरि सिर गोड़ै[12] ।
केई केई कर किलक, धजर अरि उवर[13] घमोड़ै ।

---

१. अछर – आकाश ।
२. आराण – युद्ध ।
३. दईवाण – दीवान, प्रतापसिंह ।
४ अणगज – अजेय ।
५ आपतो – कहता ।
६. समराथि – सामर्थ्यवान ।
७ पोरस उफणे – वीरता उफनती (प्रकट होती) है ।
८. रूकरो – शस्त्रका ।
९. कमल – मस्तक ।
१०. रिणवट – युद्ध ।
११. किरमर – तलवारोंके ।
१२. सिर गोडै – सर काटते हैं ।
१३. उवर – उर, छाती ।

पजर[1] मांनल पहर कहर केई अंव कटारा।
लेता छक छक लहर [illegible] जियारा।
फरहरै पार फूटै अणी[2], धार रुहिर रत धरहरै।
कर कर उछाह गह घर घुमर, वीर अछर मम नडनडै॥ १

नजै भाट[3] वीजला, काटि पड कर निछूटै।
तडिछ उठ घट तटै, जोम[4] धक दूता जूटै।
अमो समा[5] आछटै, छोह उपटै छलोहा।
मिट घटै नह मरट, लहै चहै गल लोहा।
अरनाड वीर साहस अधिक, दुहू तरफां छक दापवै।
धड भिडै देप पडिया धरा, वाह गाह सिर आपवै[6]॥ २

वूठ[7] लोह विकराल, तूट[8] अग धरा तडफै।
फूट कलिज फिफगड, भूल पलचरा[9] भडफै।
वीर थट[10] नडनडै, चड पत्र[11] भरे चठठै।
रभ रुंड नडनडै, मुंड माला हर गठै[12]।
उफणै छकै निलकै अतर, मेलै सिर भर ओभडा।
अस हथा थाट ठेलै अउर, रावत पेलै रूकडा[13]॥ ३

---

१ पजर – शरीर।
२ अणी – शस्त्रोंकी नोक।
३ भाट – प्रहार।
४ जोम – वीरता मद।
५ अमो समा – आमने सामने।
६ आपवै – बहता है।
७ वूठ – बरसता है।
८ तूट – टूट कर।
९ पलचरां – मांस भक्षी पक्षी।
१० थट – समूह।
११ पत्र – पात्र।
१२ मुंड माला हर गठै – महादेव मुंडमाला पिरोते हैं।
१३ रूकडा – शस्त्रोंसे।

पड़ै झड़ै पैमार[1], अड़ै सरदार अमांमा[2] ।
केई छक चढ़िया कड़ै, सूर मलफै[3] त्यां सांमा ।
केहकां सिर कटै, राम मुख उभा रटै ।
धरै धार धड़ लड़ै, प्रगट किरमाल पछटै ।
केई कथा पत्र धरियां करग[4], एकण हत्था आछटै[5] ।
कर वोह सोह चाढै कलां, लोह छाक धरती लुटै ॥ ४
कईक जुट्टै[6] कवर, अउर अणियाचा[7] भमर ।
अंग ज बाहर अतर, रंग केसर रच डंबर ।
चोंप चाव चित चाउ, गुमर धारै गद चहता ।
अछर झाला दिये[8], लड़ै परला लेवंता ।
किरवार धार जद्वार कटि, उड अकास पाछो पड़ै ।
आरती जांण न्हापै अछर, वरवाकजि[9] रथ अड़वड़ै ॥ ५
केई पड़तो झल कमल[10], आंण चाढै[11] सिव आगै ।
झड़ै कटारा कमध, लटां चहुवा गल लागै ।
कटिया पग भड कि येक, टेक असमर उछटै ।
लत्थ वत्थ होय लुटै, जांण मतवाला झूटै ।
केई कोट भार धरियां कमल, गल कूंची मालां ग्रहे[12] ।
कूंचियां सहत अंग पल[13] कटै, झुंड अछर झोका कहै ॥ ६

---

१ पैमार – परमार क्षत्रिय अथवा "झडंवै मार" के अनुसार गिरे हुए पर प्रहार ।
२ अमामा – वीर ।
३ मलफै – उछलते हैं ।
४ धरियां करग – हाथमें धारण किये हुए ।
५. एकण हत्था आछटै – एक हाथसे ही प्रहार करते हैं ।
६ जुट्टै – एकत्रित होकर ।
७. अणियाचा – सेनाके ।
८. अछर झाला दिये – अप्सरा संकेत करती है ।
९ वरवा कजि – वरण हेतु ।
१०. कमल – मस्तक ।
११. आण चाढै – लाकर चढ़ाते हैं ।
१२ गळ...ग्रहे – गलेमें दुर्गरक्षक चावियोकी माला धारण कर ।
१३ पळ – मास ।

ईसै जोस अणभग, दुहू तरफा दईवाणा[1] ।
सझै मार माचणी[2], गाडि असमरा[3] उडाणा ।
नकै छकै रीफ्रै, हुवा भभरूत गहक्कै ।
चोप तीप नह चकै, थहै गिणदून न थकै ।
नाराह रूप[4] दहू थट निकट, पग पूनी वाहै पहै ।
यग भड़[5] वैयक पड उपडै, ढाण तेण केहु रूटहै ।

वात

ईण भात कितराहेक तो गोळी तीर वरछियासू फूटा[6] । कितराहेक कटारियारा मारिया नयोजय हुवा तिके ईण भात उळझिया । सो जुवा किया ही न होय जुवा । सो म्होकमसिंघ कितराहेक सरदार रजपूतानू पकड लीधा । पकडिया तिकानू रावत प्रतापसिंघरी हजूर आण हाजर कीधा[7] । तिकानू घोडा सिरपाव[8] देर छोड दीधा । फुरमायो थान वळी ओर हर होय[9] तो म्हारी सरकारसू घोडा दिरावा । म्हारी धरती माहे दोडज्यो । अर गढरो जोम होवै तो फेर सामान करो । म्हारी फोज आवै छै । जिणसू हाथ जोडज्यो । अबरकै[10] तो छोडिया छै । जमीदाराकी सापसू[11] हर अबरकै चूकस्यो तो मार हीज नापस्यू[12] । अवै वा जायगा म्हारी दीवी[13] रहसी थाहरै कन[14]

१. दईवाण – दीवाण रावत प्रतापसिंह ।
२ साचणी – नकरी थोड थोडे स्थान पर ।
३ असमरा – तलवारें ।
४ नाराह रूप – सुअरके रूपमें सुअर वीरताका प्रतीक माना जाता है ।
५ भड – भड़ते हैं कटते हैं ।
६ फूटा – घायल हुए ।
७ प्रतापसिंघरी कीधा – प्रतापसिंहके दरबारमें ला कर उपस्थित किया ।
८ सिरपाव – मस्तकसे पर तकके वस्त्राभूषण ।
९ ओर हर होय – फिर इच्छा हो (लड़नेकी) ।
१० अबरक – अबकी बार ।
११ सापसू – साक्षिसे सिफारिशसे ।
१२ मार नापस्य – मार ही डालूंगा ।
१[3] म्हारी दीवी – मेरी दी हुई ।
१४ थांहर कन – तुम्हारे पास ।

कोई न लेसी । छत्रीधरमरै राह चालस्यौ तो थे हीज पावस्यौ । फेर किणही गरीबनै दुप दीया तो थाहरा किया थे हीज पावस्यौ अर मारचा जावस्यौ । अबकै तो थांनु छोडिया । ईण वासतै कोई आसर[1] किण ही तरैंकी रह गई होय तो फेर पेटो करै डोडिया[2] ।

तिण उपरै डोडिया अरज कीवी । म्हानु आप जीवदांन दीधा अर चाकर कीधा । अबै तो रहस्या म्हे रावळो हुकम माथै पर लीधा । राजसू लडिया ईसडो कुण छै जिणनु आसर रहै । राजरी रीस झेलै जिणरै दोय सीस होय जको सहै । हर तरवार गहै ।

ईणा ईण भात अरज कीवी । रावतजी वानू विदा कीधी । म्होकमसिघनू बुलाय पाथापणा प्रतोपीज्या[3] अर मनमें घणा रीज्या । घणो हेत कर गळै लगाय कह्यौ । म्होकम भाई मुनौं[4] हेट[5] हेट करै थाहरी रजपूतीरी अधिकाई । सो एकसू एक सवाई । पण बाबा थोडा धीरा[6] रह्या करो । म्हारो हुकम अर म्हे जिण वातमै चैन पावां जिकौ मन माहे धारचा करो । तू तो ईण भात सदाई राडमै पाथो बहै छै[7] । पण म्हारो जीव तोहीजमै रहै छै सो तू जायनै वपस । अर लै सुजस ।

सो ईणा रावत प्रतापसिंघरी सरकारसु भी लेपणौं[8] दांन दीधो । अर आपरा घर मांहे छो सो तो सरब ही दीधो । सो ईणारो तो सार नैं आचार घणौ घणो तिको कठा तांई कह्यो जावै । जिणारा प्रवाड़ारो[9] कुण पार पावै । निपट अमांमी[10] अद्भुत अछूती रजपूतीरो

१. आसर – शक्ति, इच्छा ।
२. पेटो करै डोडिया – डोडिया रजपूत फिर युद्ध कर लें ।
३ पाथपणा प्रतोपीज्या – तेजीको, वीरताको सन्तुष्ट किया ।
४ मुनौं – मुझको ।
५ हेट – धिक्कार ।
६. धीरा – धीरजसे ।
७ राडमै पाथो बहै छै – युद्धमें तीव्रता (वीरता) प्रकट करता है ।
८. लेपणौं – विशेष उल्लेखनीय ।
९ प्रवाडारो – प्रवादोका, वीरतापूर्ण कामोका ।
१० अमामी – बहुत, असीम ।

सरदार । ताता रजपूतामै ही तीप चोपरी वात[1] अपियातरो उवारण-हार[2] । तिको रजपूतारी तो ईण भात रजपूती अखियात निधान रहसी । अर ईण वातरा रीझवार रीझिया रीझ छै अर रीझ रहसी ।

घणा काचा अपणानै[3] तो न उपजे चाव । उलटो पडै सरमदगीरो डाव[4] । अर ताता तीपा रजपूतानै चोप चढावै । अर रग चढावै । त्यौ त्यौ वात पढै त्यौ त्यौ रग चढै ।

दोहा

काचा[5] धन साचा[6] किता, चिता न उपजे चाव ।
मरदा[7] सुण इ[ड]ण वात मन, चव गुण छाक चढाव[8] ॥ १
धाक पडै जिण अरि धरा, डाक वजै जिण दिन[9] ।
छाक चढै जिण छत्रधट, च ममताक[10] सु मन ॥ २
जग अथगा जूटवै[11], धज वड वागा[12] वूत ।
भिडण भाभरा भूत व्है[13], रीझै सो रजपूत ॥ ३
रहै न तन धन गणिया[ा], कीधा[कीधा] जतन किरोड ।
मान लहै मरदा भला[14], महि सुण वात मरोड[15] ॥ ४

---

१ ख प्रति यहासे आगे त्रुटित है।

२ अपियातरा उवारणहार – आख्यातको प्रसिद्ध करन वाला सुयशमें लिख गये काव्यको अमर करन वाला ।

३ काचा अपणान – कमजोर कायरो को ।

४ सरमदगीरो डाव – लज्जित होना ।

५ काचा – कच्चे कमजोर कायर ।

६ धन साचा – धनका सञ्चय करने वाले ।

७ मरदा – मर्द वीर ।

८ चव चढाव – चौगुना उत्साह बढता है ।

९ डाक दिन – जिस दिन युद्धका नगारा बजता है ।

१० ममताक – मस्त ।

११ जग अथगा जूटव – युद्धमें भारी समूह वीरतापूर्वक युद्ध करते हैं ।

१२ धज वड वागां – युद्ध वाद्य बजने पर ।

१३ भाभरा भूत व्है – अत्यन्त क्रोधित हो । राजस्थानमें भाभरा नामक क्रोधी भूतकी कथा कही जाती है ।

१४ मान लहै मरदा भला – श्रेष्ठ वीर मान प्राप्त करते हैं । ग और घ प्रतियोंमें दोहोंके पश्चात निम्नलिखित सोरठा अधिक है—

सोरठा—विद्या जां सग घुर भणसी लिखसी वाचसी ।
त्यां सग रावत सूर पतो कमो रहसी प्रसिध ॥

१५ महि सुण वात मरोड – ससारमे उनकी वीरताकी वात सुनी जाती है ।

वीरमदे सोनीगरारी वात

॥दं०[1]॥ श्री गणेशाय नम [नमः] ॥

अथ वीरमदे[2] सोनीगरारी[3] वात लिख्यतै[4] ॥

गढ जालोर सोनीगरो वणवीर राज करै छै। वणवीररे कवर २ हूवा। वडा कवररो नाम कानडदे। छोटो राणगदे। टीकै कानडदेजी सोवनगीर[5] राज करै छै।

एक दिन कानडदेजी सिकारनै चढीया। सो साथ बीपर गयो। आप जालोरसु कोस ७८ ११ [७-८] उपरे गया तिसै रात पडी। पवास[6] १ बीजीयो कन्है[7] रहीयो। ग[आ]धी रात गई। रावजी उजाडमै पोढीया छै[8]। तिम[ण] समै कामदेव जागीयो। तरै रावजी

---

१. दं० – गुरुके साथ ६ श्री लगानेकी प्रथा रही है। ॥दं०॥ ६ श्री का प्रतीक और परिवर्तित रूप ज्ञात होता है। अक ६को लिखते-लिखते अलंकृत करनेके प्रयत्नमें "दं०" रूप प्रचलित हो गया है। अथवा यह चिन्ह ॐका प्रतीक या परिवर्तित रूप है।

२. वीरमदे – कथा-नायकका नाम है। यह वीरमदे "वीरवांण", अपर नाम वीरमायण नामक राजस्थानी काव्यके चरित्रनायक वीरमदेसे भिन्न है।

३. सोनीगरारी – सोनीगरेकी। चौहान क्षत्रियोकी एक शाखा "सोनीगरा" नामसे विख्यात है। जालोर दुर्ग जिस पहाडी पर निर्मित है उनका प्राचीन नाम सुवर्णगिरि कहा जाता है। सोनीगरा चौहानोका मुख्य स्थान भी जालोर ही रहा। सुवर्णगिरिका अपभ्रंश>सोनीगरा हुआ, जिसके आधार पर क्षत्रियोकी सोनीगरा शाखा प्रसिद्ध हुई।

४ ख. प्रतिमें "वात लिख्यतै" के स्थान पर "वार्त्ता लिख्यते" पाठ है।
ग प्रतिमें "॥दं०॥" लिख्यतै" पाठ नहीं है। संभवत प्रतिलिपिकर्त्ताकी असावधानीसे छूट गया है।

५ सोवनगीर – सुवर्णगिरिका (?)।

६ पवास – पासमें रहने वाला सेवक।

७. कन्है – साथमें, पासमे।

८. पोढीया छै – सोये हैं।

कह्यौ । विजडा इण वेला[1] असतरी ल्याव[2] ।

माहाराजा नेडी[3] तो कोइ गाम न्ही । असतरी कठासु ल्यावु । तरै तामस[4] करनै कह्यौ । तरै पथररी पूतलीरो[5] कह्यौ । तरै कान्हड़देजी कह्यौ ।• उरी[6] ले आव । माहरी छाती उपर मेल दै । मन वैसास[7] छै ।

तरै पूतली पथररी आणे नै कानडदेरे छाती उपरा मेली । तिसै छातीसु भीडता[8] पथररी पूतली मानव देह हुई । तरै वोली । माहाराजा हु अपछरा[9] छु । अकन कुवारी[10] छु । राजन परणीया पछै[11] सुप भोगवसु[12] ।

कानडदेजी राजी हूवा । प्रभातै[13] घाडै चाढनै[14] गाम वडाडा[15] माहै सापलो मोमसिंघ घररो घणी छै तिणरै घरै ले जाय उतारी

---

१ इण वेला – इस समय वेला (स) ।

२ विजडा ल्याव – के स्थान पर ख प्रतिमें यह पाठ है— 'बीजड़िया रांणी तो काई हाजर नहीं न नीद आव नहीं । त काईक लुगाई ल्याव ।'

३ नेडी – निकट ।

४ तामस – क्रोध ।

५ पूतलीरो – पुतलीकी बात ।

६ उरी – समीप ।

७ वसास छ – विश्वास है (कि यह पत्थरकी पुतली भी सजीव हो जावेगी) ।

८ भीडता – लगाते हुए ।

९ अपछरा – अप्सरा ।

१० अकन कुवारी – अक्षुण्ण कुमारी ।

११ परणीया पछ – परिणयके पश्चात विवाहके बाद ।

१२ सुप भोगवसु – सुख भोग करूंगी । ग प्रतिमें यह प्रसङ्ग इस प्रकार है—'तारां रावजी न बीजड़ियो चाल्या जगलर विच एक देहर आया । वासो लीयो । देहरेमें पाखाणरी पूतळी, सा घणी रूडी फूटरी कान्हड़देजी उणर रूप दिसी घणी गोर करि जोवण लागा । तिण सम कोई देवर जोग उवा पूतली थी तिका अपछरा हुई । तर रावजी कह्यौ थे कुण छो । तर उवा बोली अपछरा छु मैं थांन परिया छ । पिण म्हारी आ बात किणी आग कहो तो परी जासू ।'

१३ प्रभात – प्रात कालमें ।

१४ चाढनै – चढ़ा कर ।

१५ ग और घ प्रतिमें गांवका नाम 'बराडो' लिखा गया है ।

नै विजडै प्रधान कहीयो । इणनै कानडदेजी परणीजण आवसी[1] ।

सोमसी सापले सारी सभाई[2] कीधी । वरी-विसाणो[3] रावजी लेनै आया । गोधूलक समै[4] परणीया । गतिवासै पोढीया । प्रभातै सुपपालमे[5] वैसांणनै[6] गढ जालोर ले आया। अलायदो[7] मैहल करायी। तिण माहै घणा सुप भोग विलास करै । अतर नुंवा अरगजा माहै गरकाव रहै[8] ।

इण भाति वरस २ हूवा । तरै बेटो हूवो । तीणरो[9] नांम कवर वीरमदे दीधो । आगै रांणी तीणरै बेटी हूई । तिणरो नाम बाई वीरमती दीधो। वरस सात माहे वीरमदे हूवो । तिसै मा गडपे[10] सारा टावर रमै छै[11] । पागती लोक उभा छै[12] । तिसै हाथी छूटो सो पाधरो[13] टावरां माहे आयो । देपनै वीरमदे दोडीयो । यु लारै हाथी दौडीयों । तिसै रजपूतां कूको कीधो[14] । कंवर मारीयो २ । इसो सवद अपछरा झरोपै वैठी सुणीयो ।

आगै वरती सांम्हो जोवै[15] तो वीरमदे नै हाथी लपेटीयामै छै । तिसै झरोपै वंठी हाथ पसारनै वीरमदेनै उचो लीधो । तिको रजपूता देपनै इचरज[16] हूवो । ठाकुरै मिनप तो न्ही ।

---

१ परणीजण आवसी – विवाह करनेके लिये आवेंगे ।

२. सभाई – सजाई, सजावट ।

३. वरी-विसाणे – ख. वरी चुडो, ग चूटो वरी, विवाहके लिये वस्त्र-चूडा आदि ।

४. गोधूलक समै – गोधूलिकाके समय, सायङ्कालमें ।

५. सुपपालमै – एक प्रकारकी पालकीमें ।

६ वैसांणनै – वैठा कर ।

७. अलायदो – अलहदा, अलग ।

८. अतर'''रहै – इत्र, अरगजा आदि सुगंधित पदार्थोंसे भरे हुए रहें ।

९. तीणरो – उसका ।

१० गडपे – गढ़ पर ।

११. टावर रमै छै – बालक खेलते हैं ।

१२. पागती'''उभा छै – एक ओर पंक्तिवद्ध लोग खडे हैं ।

१३. पाधरो – सीधा ।

१४. कूको कीधो – हल्ला किया, शोर मचाया ।

१५. जोवै–देखती है ।

१६. इचरज–आश्चर्य ।

आ वात राणगदेजी साभली[1] । तरै पूछियो । हठ घणो कीधो । तरै भेद अपछरारो बतायो ।

मझ्या ममै[2] रावजी महिला पधारीया तरै अपछरा मुजरो करै नै सीप मागी[3] । अबै तो माहिरजी मोनै लोका दीठी[4] । राज पीण हकीगत कीही सो म्हे ता आवसु । रग भोग विलास करनै अनाप हूई[5] । जाती थकी कहीयो माहरा बेटारी छायामै छानी थकी रहसु[6] । ईनरो वहिनै जाती रही ।

अब वीरमदजी पजू पायक का मिम्नरा [मिश्रा][7] घाव वाव सीपै । पजूसू घणा हेत वधाणो ।

वरसा १६ माहे वीरमदेजी हूवा । तिम जेसलमेररो धणी भाटी राव लापणसी एक दिन गोपै बेठो थो। तिमै सवणी बोलीयो[8] । रावजी सलामत सवा पोहर दिन चढीया सोनिकरा कान्हडदेन विस होसी[9] । इसो साभलेनै राव लापणसी कागद लिपनै वीरा राइकानै[10] कह्यौ । थोनाई साट ताती छै[11] । तिण चढन जालोर जा। सवा पोहर दिन चढीया मोहर जाए[12] । तोनै सावास देसा । परवानो कान्हडदेजीरे हाथे दीयो । इसो कहिनै चापरनु[13] चढीयो। जेसलमेरसु जालोर कोस

१ साभली — सुनी।
२ मझ्या ममै — मध्याके समय सायङ्काल।
सीप मागी — छुट्टी मांगी, जानेकी स्वीकृति चाही।
४ मान दीठी — मुझे लोगोंने देख लिया।
५ अनाप हुई — लुप्त हुई अन्तर्ध्यान हुई।
६ छानी थकी रहसु — गुप्त रूपसे रहूंगी छिपी हुई रहूंगी।
७ मिम्नरा [मिश्रा] — प्रारम्भिक मल्ल विद्याके (?)।
८ सवणी बोलीयो — भविष्यवक्ता शकुनी बोला (?) [illegible] प्रतियोंमें तावण बोल्यो। तिण जिनावर क्यो (स्यो) कह्यो' पाठ है। स्यणीसे तात्पर्य शकुन एवं भविष्य बतानेवाले पक्षीसे है।
९ विस होसी — विष दिया जायगा खून होगा।
१० राइकाने — ऊंट सवारको।
११ थोनाई साट ताती छै — समीपवर्ती (?) ऊंटनी तेज चलने वाली है।
१२ मोहर जाए — पहले आना।
१३ चापरनु — शीघ्रगामी वाहन (ऊं)।

७६ हूवै। घड़ी ५८६ दिन चढीयो नगर जालोर कोस १ रही ग्रर सांढ थाकी।

तरां सांढीयैं उपरणीरो फररो कीयां[1] आवतां विरमदेजीरी नीजर आयो। तरै कह्यो। ठाकुरै कोई ओठी लागी सांढ पडीया[2] आवै छै। तिसै साढीयो पीण आय पोहतो[3]।

तरै पूछीयो तू कठारो छै। तरै कह्यो। जेसलमेर रहूं छूं। राव लापणसीजी मेलीयो छै[4]। रावजीरु काम छै।

कान्हडदेजीसु मीलीयो। परवानो वांचीयो[5]। हकीकत साभली[6]। वात मन माहे रापी। उ[ओ]ठीनै डेरो दीयो[7]। तिनै अमल करनै विराजीया छै[8]। तिनै दूध मिश्री पवास ले आयो। रावजीरे मन माहे चमक थी[9] तिणसू दूध नै मिश्री कूतरानै पाई[10]। घडी १ तड-फडेनै प्राण छूटा।

तरै रावजी पवासनै पूछीयो। साच बोल म्हानै जेहर किण दिरायो छे। तरै कह्यो माहाराजा गुनो माफ हूवै। अणहूतो कीणरो नाम लेउ[11]। तरे पवासरा जांम २ पीलीयो[12]।

---

१. उपरणीरो फररो कीया – दुपट्टे, ओढनेका सकेत (?) किये हूए।
२. पडीया – चलाते हुए।
३. ग प्रतिमें इसके पश्चात् यह पाठ है 'नै आवंत सना पूछियो, रावजी दातण करिनै आरोगियाके नहीं आरोगिया। तद पुछणवाळै कह्यो, रावजी अबै अमल करिनै दूध मिश्री आरोगसी। तरै पोळियै माहे रावजीनै गुदरायो ।"
४. मेलीयो छै – भेजा है।
५. वाचीयो – वाचन किया, पढा।
६ माभली – सुनी।
७ उ[ओ]ठीनै डेरो दीयो – ऊट सवारके ठहरनेका प्रबन्ध किया।
८. अमल ' विराजीया छे – अफीम लेकर बैठे हैं।
९ ग. प्रतिमें आगे ऐसा पाठ है—"नै तिरवाळा निजर आया। तरै खवासनै कह्यो, औ दूध मिश्री तू हीज पीय जा। खवासनै पहलै दिन चोट घाली थी। तिण रीसमू खवास विस घाल्यो दूध पिवै नहीं।"
१०. कूतरानै पाई – कुत्तेको पिलाई।
११. अणहूतो ' लेउ – बिना कारण किसका नाम लू।
१२. जाम २ पीलीयो – शरीरका प्रत्येक भाग पेल दिया। ख में "जांम २ पीलीयो" के स्थान पर "जनवचौ पीलावौ" और ग. में "जनवचौ पी लियौ" पाठ है।

राव लापणसीजीनै पाछा परवाना लिपनै ओठिनै सीप दीवी। रावजीनै रसाल मेली[1]। घणो हेत हूवो। परवाना रावजी वाचीया पूस्याली[2] हूई।

एक दिन कान्हडदेजी कहीयो। आपासु राव लापणसीजी गुण कीधो[3]। हिवै[4] आपे बाई विरमती दीजे तो भलाई ज छै। तरै गणगदेजी कह्यो। माहाराज फूरमावो सो प्रमाण छ[5]। गढपती सगा छै।

इसो आलोच[6] करनै घोडा १५ नालेर २ सोना रूपारा परधान साथै आसामी[7] १० ठावो[8] देनै जेसलमेर मेलीया। सो जेसलमेर आया।

रावजीसु मालम हूई जे सोनिगरारा नालेर आया छै। आ वात सुणन रावलजीनै घणो सोच हूवो। रावजी कहे म्है तो सोनिगरासु भलो कीयो थो पिण माहरै ही गलामै डोर नाषी छै[9]। हिवै ठाकुरे की करा। कैन पूछा[10]।

तरै परधानै कह्यो। रावलजी सलामत सोढीजीनै पूछीया[11]। हा सावास भली कहीया।

---

१ मली – भेजी।
२ पूस्याली – प्रसन्नता।
३ गुण कीधो – गुण किया, भलाई की।
४ हिव – अब।
५ प्रमाण छ – प्रमाण है, ठीक है।
६ आलोच – विचार।
७ आसामी – आदमी।
८ ठावो – मुख्य विश्वासपात्र।
९ नाषी छ – डाली है। 'माहरै ही गलामै डोर नाषी छै' के स्थान पर ख प्रति में 'माहिज गल मलयद छोकरीरो नांषी' और ग प्रति में 'माहिज गळ मलयदो छोकरीरो नांखियो' पाठ है।
१० हिव ठाकुरे की करा। कैन पूछा – अब ठाकुरों! क्या करें किससे पूछें?
११ सोढाजीन पूछीया – सोढी रानीको पूछिये। आगे ग प्रति में यह पाठ है 'आग रावजीरै ऊमरकोटरी सोढी राणी छ। तिका डील माहे माती घांणीरे फेर छै। रुप कुडको छ पिण रावलजी सोढी के वस छ तर रावळजी कह्यो मूधां पूछां कि पाछा भला ता मूडा दीसां।'

रावजी मैहला दुमना विराजीया[1] । तरा सोढीजी बोलीया । रावजी सलामत नालेर वादीयां के न्ही[2] । तारे रावलजी बोलीया । म्है तौ नालेर पाछौ मल देसा ।

तारा सोढी बोली । हूवा साठी नै बुध नाठी[3] । डोसा[4] गढपती-यारा नालेर पाछा मेलो मती ।

तारा नालेर झालीया[5] । परधाननै सीप दीधी । लगन जोयनै जान चढी[6] । तरा सोढी कहीयो । सामोलो मोढारो वपाणज्यौ[7] । हथलेवो[8] सोढीरो वपाणजो । पिण सोनिगरारै घरै जीमजो मती[9] । तारा रावजी कह्यौ । भला ।

जान चढी । आगै वधाई दीधी । तरै सामेलो कीधो । सोनीगरासूं रांम २ हूवो । तिसै रावजी अठी उठी देपने बोलीया । सांमेलो नीपट सपरो[10] पिण क्युहीक सांमेलो मोढारो सकस[11] । विरमदै जाणीयो । जाणै तो मन जाणै ।

---

१ दुमना विराजीया – उदास होकर बैठे ।

२. नालेर ' न्ही – नारियल स्वीकार किये अर्थात् विवाह-सम्बन्ध स्वीकार किया अथवा नहीं ?

३ हूवा नाठी – साठ वर्षके हुए और बुद्धि भागी, एक राजस्थानी कहावत है । आगे ग प्रतिमें यह पाठ है "किस् पुछता हूवा छो, राडोचानै करिस्यो किस्यूं, खाणै पीवणै पोहचा नहीं, थे रीसावो मती ।"

४. डोसा – वृद्ध, मुख्य ।

५ झालीया – ग्रहण किये ।

६. लगन' चढी – लग्न देख कर बरात (वरयात्रा) रवाना हुई ।

७. सामोलो वपाणज्यो – सोढोके स्वागतकी प्रशंसा करना ।

८ हथलेवो – पाणीग्रहण, विवाह-संस्कारकी एक क्रिया ।

९ जीमजो मती – भोजन मत करना ।

१० नीपट सपरो – बहुत उत्तम ।

११ सकस – बढ़कर । आगे ग प्रतिमें यह पाठ है—"पिण सोढारै सामेळारी होड व्है नहीं । इतरो सांभळत समो वीरमदेरा डीलमें आग लागी । सोढारो नैस (नाश) छै तिके दोढा छै । भोमिया-भूव, घरतीरा वासी त्यांरो, सांमेलो आछो, तो रावळ मांहे परमेसर नहीं, गधैड़ाकी बूझ छै । सुणीयो थो त्यूंहीज छै । तरै वीरमदेजी आगै वुधि [वधि] गढ आया, तठै रावळजी तोरण पण त्यूहीज कह्यो ·· ।"

तिसे तोरण वादीयो[1]। आरती कीधी। चवरी वीराजीया। हथलेवो दीधो। तरै रावजी बोलीया। हथलेवो तो सोनीगरीगे मपरो पीण सोढीरी होड[2] न करै।

ईसो मुणनै वीरमदेजी जाणीयो। सगपणमै पोटा पाथा[3]। रावलमै लपण पीलोरीरा छै[4]। सोनिगरी रीसायनै सुम घालीयो[5]। हथलेवो छूटा पछै रावलसु घरवास करु तो भाइ वीरमदेमु करु। परणीजता विरस हूवो। छेहडा छोडीया[6]। चावड[7] पधारता राव लापणरो वेगारो[8] हूवो। सीप मागी।

हठ घणो रिधो। रहै न्ही। तरै कान्हडदेजी राणगदेजी रीसाणा[9]। रावलजी चढै नै चालीया। तरा वीरमदेजी कह्यो। बाईने मेला न्ही। तरै कान्हडदेजी कह्यो। एक वार जेसलमेर पोहचावणी मदामद[10] रीत छै।

असवार १०० नै राजडीयो पवास नाई साथे दैनै बाईजीगो रथ जोतरीयो सो जालोरमु कोस ४० पोहता[11]। गाव माडलगो तलाव तठै रथ छोडीयो। वलरी[12] तयारी करे छै। केइक टेव टालणनै[13] गया छै।

---

१ तोरण वादीयो – तोरण बांधा तोरण बांधनेकी परपराका सम्बन्ध तोरण रागसकी एक पौराणिक कथासे जोड़ा जाता है।

२ होड – बराबरी।

३ सगपणम पोटा पाथा – विवाह सम्बन्धमें भूल हो गई।

४ पीलोरीरा छ – लिलोरी(?)के ह।

५ सोनिगरी … घालियो – सोनीगरी राजकुमारीने रुठ कर निश्चय लिया।

६ छेहडा छोडीया – बन्ध हुए वस्त्रोंके छोर खोले गये। विवाह संस्कारमें वर वधुके दुपट्टे गाठीसे दोनों एक साथ बांध जाते हैं।

७ चावड – प्रात काल।

८ वेगारो – विवाद झगड़ा।

९ रीसाणा – रुठ गये।

१० मदामद – परंपरागत मर्यादा।

११ पोहता – पहुंचे।

१२ वलरा – व्यालुकी भोजनकी (?)

१३ टेव टालणन – आदत टालनेके लिए शौच आदिके लिये।

तिसै सोनीगरी वीरमती छोकरीनै[1] कहीयो। तू पाणी भर ले आव। तरै छोकरी झारी भरनै ले आई[2]। तिसं वाई पूसली[3] भरनै देपै तो पाणी माहें तेल हीज तेल दीसै। तरै कह्यौ। हाथ धोयनै झारी भरी न जायै। तरै छोकरी कहीयो। वाईजी साहिब। कोइक सीरदार सांपडै छै[4]। तिणरा तरवाला आपा[5] तलावमै दीसै छै।

तरै सोनिगरी कहीयो। कठारो सिरदार छै। काई नाव छै। तू पूछनै आव। तरै छोकरी आयनै पूछीयो। तरै ढोली वोलीयो—

निबो सैवालोत[6]। साप राठोड। धिणलागे धणी[7]। लापांगे लोडाउ[8]। रूलीयांगे जोड[9]। रांकारो मालवो[10]। अधणीयांरो धणी[11]। परभोम पंचायण[12]। सयणांरो सेहरो[13]। दूसमणांरो नाटसाल[14]। वडो झोकाइत[15]।

इसो सुणनै छोकरी जायनै पाछौ कह्यौ। सोनिगरी पाछी मेली।

---

१ छोकरीनै – दासी को

२. ग प्रतिमें यह पाठ है "तरै दासी झारी भरणनै गई। आगै देखै तो नीवो सिवालोत सात-वीसी साईनारी साथसूं झूलै छै। तिके केवा, चपेल, अरगजारी पांणी माहे लपटां आवै छै। केसररा रगसू पाणी वदळ गयो, रंग फिर गयो छै। दासी झारी झकोळ पाणीसू भरी नै सोनगरीनू दीधी।

३ पूसली – अजली।

४ सापडै छै – स्नान करता है।

५ आपा – सारे।

६ सैवालोत – सैवाल (शिवलाल ?)का वशज।

७. धिणलारो धणी – धिणलाका स्वामी।

८ लापारो लोडाउ – लाखोको मारने वाला।

९ रूलीयारो जोड – बिछुडे हुए, भटकने वालेको मिलाने वाला।

१०. राकारो मालवो – रकों, निर्धनोके लिये मानवा। मालवा समृद्ध प्रान्त माना गया है।

११ अवणीयारो वणी – जिनका कोई स्वामी न हो, उनका स्वामी।

१२. पर भोम पचायण – दूसरोकी धरतीके लिये पञ्चानन, सिंह, वीर।

१३. सयणारो सेहरो – समझदारोका मुखिया।

१४ दूसमणारो नाटसाल – शत्रुओंको छकाने वाला।

१५. वडो झोकाइत – बहुत मनमौजी। ग प्रतिमें यह पाठ है—"तरै एकण चाकर कह्यौ, साजि राठोड, नींवो सिवालोत, लाखांरो लोड़ाउ, वडो झोकाऊ, सैणारो सेहरो, दुसमणरो साल, जाता-मरतांरो साथी, लाखारो लहरी।

तू जा पूछै आव। राव "लापणसीरी परणी[1] सोनिगरा कान्हडदेरी बेटी थाहसु[2] "पणी आवै तो थाहरै घरै आव्"[3अ]।

इसा समाचार छोकरी कह्या। तरै निवै सेवालोन वोलीयो। चढनै आयो। म्हे थानै ले जावमा।

तरै छोकरी जायनै कह्यो। रथ जोतायन[3] सोनिगरी चाली। तिमै निवाजी अधकोस सामा आया। घोडासु उतरनै रथ माहै पधारीया। सोनिगरीसु मीलीया।

तिसै रथरै लारै[4] साथ चढीयो। आगै असवार दीठा[5]। सात वीस[6] असवारासु साफ तो वागो[7]। राजडीयो पवास वाजनै[8] काम आयो[9]। निवोजी फतै करनै[10] गाव धीणलें पधारीया। वधामणा[11] हूवा।

वेढरी[12] वात कानडदेजी सुणी। विरमदेजी पीण जाणीयो। निवै घणी कीधी[13]। पिण राउलमै पिरोगीरा लपण[14] था तिणसु परणी गई और सावास नीवानै। माहरै माटो सगो छै। म्हे मनमै इण वातरो आटो[15] कोड गाया न्ही।

---

१ परणी — परिणीता (स) विवाहिता।
२ थांहसु — तुमसे।
३अ ग प्रतिमें पाठ इस प्रकार है—थारमा? माम ... तिको फेरोरो होय लागो छ। जो थांसू मोर परम ... आंव तो तू आव्।
३ रथ जोतायन — रथमें बैल जुड़वा कर।
४ लार — पीछे।
५ असवार दीठा — अश्वारोही दिखाई दिये।
६ सात वीस — सात बीसी अर्थात १४०।
७ सा वागो — लोह बजा लड़ाई हुई।
८ वाजन — लड़ कर।
९ काम आयो — मारा गया।
१० फते करनै — विजय कर।
११ वधामणा — बधाईयां स्वागत।
१२ वेढरी — लड़ाई की।
१३ घणी कीधी — बहुत किया विनय स्वागत किया।
१४ पिरोगीरा लपण — फिरोजी (दिल्लीपत)के लक्षण।
१५ आटो — वैर।

राव लापणसी पीण साभलियो[1] जे सोनिगरीने ले गयो। लोहारानै बुलाया। इसो भालो घडो[2] तिणसु एथ[3] बैठा निवलानै मारां।

तरां लोहार साराई दुचिता बैठा[4]। तरै मिरधारी[5] बेटी बोली। बापजी दुचिता क्यु बैठा छौ। तरै कह्यौ रावल भालो वडावै सौ भालो न हूवौ। तरै डावडी[6] कह्यौ लोह नै मैनतरा[7] दाम उरा ल्यौ[8] नै घर काम करो नै हू रावलजीनै जाव देसु[9]।

तरै भालारा रुपीया ले आया। मास ६ हूवा तरै रावलजी कह्यौ भालो उरो ल्यावो। तरा लोहाररी बेटी हाथ जोडनै कह्यौ। रावलजी साहीब भालैरो मोनै घणो सोच छै। रावलजी तो पूपता[10] छै नै निवौ तो मोटीयार[11] छै। कदेस भालो पकडनै पूठो[12] रावलजीनै बावै[13] तो म्है किसुण करा।

तारा रावलजी कह्यौ। हा म्हारी नाहर, भलो वेगौ कह्यौ। भालो भाभरालो[14] देपीयो निवलो ले जायलो। रावलजी लोहारानै परची दिराई। भालो भजायो[15]।

रावलजी सोनिगरी गमाय बैठा[16]।

---

१ साभलियो – सुना।
२ भालो घडो – भाला बनाओ।
३. एथ – यहा।
४ तरा बैठा – तब सभी लोहार चिन्तित हो बैठे।
५ मिरधारी – मिरधा नामक व्यक्तिकी (?)।
६ डावडी–लडकी।
७ मैनतरा – महिनतके।
८. उरा ल्यौ – पासमें लो।
९ जाव देसु – जवाब दूगी, उत्तर दूगी।
१० पूपता – पुख्ता, परिपक्व, वृद्ध।
११ मोटीयार – जवान, युवा।
१२. पूठो – पीछेसे, वापस।
१३ बावै – चलावे।
१४. भाभरालो – वडा, जबरदस्त, भाभरा नामक क्रोधी भूतकी कथा प्रसिद्ध है।
१५. भंजायो – तुडवाया।
१६. गमाय बैठा – खो बैठे।

सोनिगरीरै दोय बेटा हूवा । वीरमदेजी नै कागद आवै नै जावै । भाई वैहनरे घणो हेत[1] छै ।

वरस १० वीता तरै वीरमदेजीरै छोटी वैहन तिणरा नालेर दहीयानै मेलीया । साहो थाप्यो[2] । निवाजीनै चावल मेलीया । प्रोहितनै मेलनै बाई वीरमतीनै गढ जालोर ले आया । दिन ५ साहा आडा था[3] तरै वीरमदेजीनै वैहिन कह्यौ । थाहरा बैनोइनै बुलावो ज्यु थाहरै नै उणारै चितपात भाजै[4] । मानै अमर काचली[5] दीधी ।

तरै रावजीनै पूछनै कूगतरी मेली[6] । निवोजी वाचेनै घणा राजी हूवा ओर पाछा कागल[7] लिप्या । तिणमै घणी मनवार लिपी नै वलै[8] कहीयो । मोनै रजपूत लेपवीयो[9] पिण मोनै तो पजू पायक आयनै ले जायै तो हू मुजरो करू[10] ।

इसा समाचार वीरमदजीनै कह्या । तरै पजू पायकनै कह्यो । थे सिधावो[11] । निवाजीनै ले आवौ ।

तरै पजू कयो । ये देसोत[12] छो । मन माहे दगो[13] रापो तो मोनै मेलो मती[14] । पछै आपण रस[15] रेहसी न्ही ।

---

१ हेत – हित प्रेम ।
२ साहो थाप्यो – विवाह लग्न निश्चित किया ।
३ आडा था – सामने थे, शेष थे ।
४ चितपात भाजे – मनोमालिन्य दूर हो ।
५ अमर काचली – अमर सुहाग । कांचली अर्थात आधी बांहकी चोली सुहागकी प्रतीक मानी गई है ।
६ कूगतरी मेली – कुंकुमपत्रिका । निमंत्रणपत्रिका भेजी ।
७ कागल – कागज पत्र । राजस्थानीका अन्य रूप कागद ।
८ वलै – फिर ।
९ लेपवीयो – आलेपित किया जाना ।
१० मुजरो करू – अभिवादन करूं ।
११ सिधावो – सिद्ध करो चलो ।
१२ देसोत – देशपति ।
१३ दगो – दगा, धोखा ।
१४ मोन मेलो मती – मुझे मत भेजना ।
१५ रस – आनन्दमय सम्बन्धसे तात्पर्य है ।

तरै वीरमदेजी पजूनै वचन वोल दैनै निवाजी कनै मेलीयो ।

पजूनै निवै घणो आदर सनमान देनै वीजै दिन[1] चढीया सो लग्नरै दिन जालोर आया । राव कानडदेजीसु राणगदेजीसु वीरमदेजीसु जुहार कीधो । डेरो दिरायो[2] । मोदी भलायो[3] ।

दहीयो परणीयो तिणरो[4] महिल गढ माहे करायो । वीरमदेजीरै नै निवाजीरै वणो हेत । पजूपायक नीवाजी कन्है वैठो रहै[5] ।

एक दिन राजडीयारो वेटो वीजडीयो वीरमदेजीरी पवासी करै छै[6] । तिसै वापरो वैर याद आयो तरै आप भरी[7] । तरै देपनै वीरमदेजी पूछीयो । क्यु तोनै कीण दूप दीन्हौ[8] ।

तरै विजडीयो मुजरो करनै वोलीयौ । कवरजी राज सरीपा धणो[9] । तिणसु मोनै दूप कुण दै । पिण निवो सेवालोत धणीयारो हासो[10] करावै नै आप ही करै । वलै गढ माहै पैपारो करैनै पोढै[11] । तिका मन माहै आई ।

तरै वीरमदेजी कह्यौ । म्है पजूनै वाह[12] दीनी छै तिणसु काई कैहणी आवै न्ही । थारै वापरै वैरमै मारै तो मार उतार ।

इसो सुणनै वीजडीयै कयौ । धणीयांरा माथै हाथ छै तो सागै[13]

---

१ वीजै दिन – दूसरे दिन ।

२. डेरो दिरायो – ठहरनेका स्थान दिलाया ।

३ मोदी भलायो – भोजनादि सामान इच्छानुसार ठिकानेकी ओरसे देते रहनेके लिये मोदीको (दुकानदारको) ताकीद की ।

४ तिणरो – उसका ।

५ दहीयो परणीयो वैठो रहै – पाठ ग प्रतिमें नहीं है ।

६ पवासी करै छै – पासमें रह कर सेवा करता है ।

७ आँप भरी – आँखोमें आँसू भरे ।

८, क्यूं दीन्हौ – क्यो ? तुमको किसने दुख दिया ?

९ धणी – स्वामी ।

१० हासो – हँसी ।

११ पोढै – सोता है ।

१२. वाह – वचनसे तात्पर्य है ।

१३ सागै – वास्तवमें ।

मारू तो चारर। इमो मचकूर[1] करने ऊठीया।

तिमैं बीजै दिन वीरमदेजी गोठरी[2] तयारी कीवी। तरै निवोजी वीरमदेजी पातीयै[3] बैठा। तिसै वीरमदेजीनै कानडदेजी बुलायो। तिसै उठता थका कह्यौ। बीजडोया पुरसगारो[4] करे हु आयो।

तिमैं बीजडोयारा हाथम वीरमदेजीरो पाडो[5] हूतो सो नीवाजीनै वायौ। आध नेत्र सहीत माथो तूट पडीयो।

थाभारै ओलै बीजडीयो उभो[6] तिसै नीवेजी तरवार वाई[7] सो थाभो कटेनें बीजडियारा दोय टूक हूय पडीया। तरै चारण कहै।

दूहो

वही वहतै वाह, नर थाभो निंभोडीयो[8]।
निवडा तणै नेठाह[9], मारयो बिजडीयो मुणस[10] ॥१

तिसै गढ माहे हाको हूवो। नीवाजीरा साथरै गुलीयढ तरवारा थी[11] तिणासु काई मभीयो न्ही[12]। साथ सगळो[13] ही नीवाजी कन्है

---

१ मचकूर – निश्चय (?)
२ गोठरी – गोष्ठिको प्रीतिभोजकी।
पातीय – पातीय पर भोजनके लिये पंक्तिबद्ध बठनेके लम्बे वस्त्रको पातीया कहते हैं।
४ पुरसगारो – भोजनके विविध पदार्थ सामने रखना।
५ पाडो – खड्ग (सं) विशेष प्रकारकी दुधारी तलवारको खांडो' कहा जाता है।
६ थाभारै उभा – स्तंभकी ओटमें बीजडीया खड़ा था।
७ ग प्रतिमें यह पाठ है– तिको नींबाजीरो माथो अलगो जाय पडियो न बीजडियो थांभार उल आय गयो। तदि नीवेजी आपरी तरवार माय पडिय पछ थाडी वाही।
८ निभोडीया – काट दिया।
९ निवडा तणा नेठाह – नींबाजीकी हठ वीरता।
१० मुणस – मनुष्य। ग प्रतिमें दूहका पाठ इस प्रकार है–
वही वही त वाहि नर थांभो नीभोडियो।
नीवडा तण नठाहि मरिय बीजडिय मुणस ॥१
११ गुलीयढ तरवारा थी – गुलीवढ (?) तलवारें थीं। ग प्रतिमें नींबाजीरा तरवारा थी के स्थान पर यह पाठ है–नीबाजीरा साथ उमरावांरा हथियार सिकलीगरर दीधा था सठ गुलरी बाढ दिरायो थो।
१२ मभीयो न्ही – बना नहीं सफलता नहीं मिली।
१३ सगळा – समग्र सारा।

पडीयो । सोनिगरा बेटा दोनु ही लेनै थिणलै आई ।

श्री चूक पजू पायक सुणीयो । तरै ओठै चढ नीसरयो । सो दीली अलावदी पातिसाहसु[1] मिल्यो । पातसाहनै मिस्रा घाव डाव[2] सीषाया । तरै पातसाह रिझीयो[3] ।

एक दिन पातसाहसु रमता कह्यो । Aश्रू वें[4] पंजू तो बराबर खेलै तैसो कोई पातसाहीमें है के न्ही । तरै पजू कह्यो । जाळोरमें कांनडदेरा बेटा वीरमदे मोनै बी कुछ सरस है[5]।

तरै जालोर परवाना मेल्या[6] । कानडदेजी परवांना वाच्या[7] ।A घणो सोच हुवो नें जांण्यो श्रै पजूडारा काम छै[8] । पातसाहसु जोर लागै न्ही[9] ।

सपरो[10] मोहरत सपरा श्रावण[11] हुयां असवार हजारवस्[12] चढीया सो दीली श्राया । पातसाहनै मालम हुई । श्रवपासमें[13]

---

१ अलावदी पातिसाहसु – अलाउद्दीन बादशाहसे ।

२. मिस्रा घाव डाव – मिस्रके अर्थात् उच्च श्रेणीके अथवा शुरूके, आरम्भके (?) घाव-दाव ।

३. रिझीयो – प्रसन्न हुआ ।

४ वें – सम्बोधनके लिये खड़ी बोलीका हीनतासूचक प्रयोग ।

५ मोनै · · सरस है – मुझसे भी कुछ बढ़ कर है ।

६ परवाना मेल्या – एक प्रकारका पत्र, आदेशपत्र भेजा । ग प्रतिमें आगे यह पाठ है—'तिण माहे लिखियो, तीनै ही सिरदार हजूर आवज्यो नहीतर हमकू फेरा दिरावोगे ।'

७ वाच्या – पढ़ा (वाचन–स) A–A प्रस्तुत अंशकी राजस्थानी मुसलमान पात्रोंसे सम्बद्ध होनेसे खड़ी बोली प्रभावित है ।

८ ख प्रतिमें यह पाठ है—'श्रै पजूरा चाळा छै । तरै तीनै ही आलोचयो । जो बैस रहीजै तो दिल्लीरा धणीसू पोच आवां नही । नै हजुर गयां काई वात झूठी साची रफै दफै करिस्या, यों जाण घोडा हजार १ री साठ करि सवरै मोहरत सपरा सावण चढीया ।'

९ पातसाहसु · · न्ही – बादशाह पर बलका प्रयोग नहीं किया जा सकता ।

१० सपरो – अच्छा ।

११ श्रावण – श्रवण, सुने जाने वाले शकुन (?)

१२. हजारवसु – सहस्रार्द्ध (स.), आधा हजार, पांच सौ ।

१३. श्रवपासमें – आम खासमें । मुगल सम्राटोके दो दरबार होते थे । दीवान-ए-आम और २ दीवान-ए-खास ।

बुलाया। दोनु भाई नै वीरमदेजी मुजरो कीधो। पातसाह डेरो[1] दिरायो।

एक दिन पातसाह रमणरो[2] हूकम वीरमदेजीनै दीयो। उमराव रेतीमै[3] उभा छै[4]। पजू पगाग अगुठा नीचै पाछणो[5] वाधीयो छै।

तिसै वीरमदेरी मा अपछरा वीरमदेनै कह्यौ। तू पाछणो वाधनै रमै। उणग डाव हू टाल देसु नै थार हाथे पजू मरसी। हिवै दोनु जणा[6] रमै छै।

तरे कानडदेजी राणगदेजी उभा भजन करै छै। तिसै कूकडाभट[7] पेलता वीरमदे पाछणो काळजानै चलायो। घणा राजी हूवा[8]।

हमेस पातसाहरी हजुर आवै। तिन वीरमदेजीरै पगारी मोजडी[9] करणरो हूकम मोचीनै दीयो[10]। मोती लाल चुनी कलावतू मकतूल मूपमल देनै मोचीनै सीप दीधी।

मोची परवाण[11] माफक मोजडी करै छै। तिसै पातसाहरी असाह[12] बेगम तिणरी छोकरी मोजडी मोची कन्है करावणनै आई थी। तिण मोजडी देपनै पूछीयो। या मोजडी किणरी है। तरै मोची कह्यौ–कवर वीरमदेरी मोजडी छै।

---

१ डरो – ठहरनका स्थान।
२ रमणरो – खेलनेका।
३ रेतीम – रेत पर खाली जमीन पर।
४ उभा छ – खड़ है।
५ पाछणो – शस्त्र।
६ दोनु जणा – दोनों व्यक्ति।
७ कूकडाभट – मुर्गेका वार (?)
८ ख प्रतिमें यह पाठ है— तिस दोनूं थपतां २ वीरमदे इसो दाव पेल्यो तिको ऊछलतो सांम कालजा माहे पजूर दीधो। तिको प[पे]ट फाडि आंत ऊभ्ठ फेफरा निकल दर हुया। धरती पडीयो। पातिसाहजी क्यु मसलायो। पिण पेल माहे पाय डाव मोटीयारगो फुरत तिणसु थय कह्यो नही।'
९ मोजडी – मोचडी, जूती।
१० मोचीन – जूती बनान वालको।
११ परवांण – परिमाण नाप।
१२ असाह – सम्भवत बगमका नाम है।

तरै मोजडी साह बेगमनै दिपाई। तरै छोकरीनै कह्यौ तिण कवरनै देपने आव तरै उडदाबेगण[1] वीरमदेने देपनै राजी हुई। सागै गेह्णी जलाल छै[2]। पातसाहीमै हूवै तो वताउ। तरै छोकरीनै कह्यौ दरवार आवै तरै मोनै दिपावै।

तिसै दूसरै दिन दरवार आवता बेगमनै विरमदे दिपायो। तिसै कवरने देपने सनेह जागीयो सो पुरवला भवरो पावद छै[3]। वासलै भवै[4] कासी वाणारसी माहै एक साहूकार तीणरै एकाएक बेटो। जवान हूवो तरै परणायौ[5]। तिसै एक दिन सपाडो करता[6] मुहडा आगै वहू उभी छै[7]। तिण समीयै आधी आई। तिसै अस्तरी घर माहे गई। साहूकाररो डील रजसु भरीयो। तरै जाणीयो अस्त्री माहरा जीवरी न्ही[8]। रीसमै[9] उठनै कासी करवत छै तठै गयो। करवत लेतां कह्यौ। आधा अगरो डणहीज साहूकाररै घरै पुत्र होज्यौ। डावा अगरी अरधंग्या होयजो[10]। अस्त्री तो वेह हूई[11]।

उण साहूकाररै पुत्र उपनौ[12]। आधा अगरी अस्त्री हूई सो परणीयो। एक दिन वलै[13] सपाडो करतां आधी आई। तिसै अस्त्री आपरा वसालूसु[14] लपेटीयो। तरै साहूकार हसीयो। साहजो क्यु

---

१. उडदाबेगण – उडदा नामकी बेगम (?)

२ सागै · जलाल छै – वास्तवमें गहाणी जलाल है। 'जलाल' एक राजस्थानी प्रेमाख्यानका नायक है। विशेष जानकारीके लिये 'मरुभारती' पिलानी. वर्ष ६ अङ्क ३ में प्रकाशित मेरा एतद्विषयक निबन्ध अवलोकनीय है।

३. पुरवला · पावद छै – पूर्व जन्मका पति है।

४ वासलै भवै – पिछले जन्ममें।

५ परणयौ – विवाह किया, (स. परिणय)।

६. सपाडो करता – स्नान करते।

७ मुहडा उभी छै – मुंह आगे वहू खडी है।

८ तरै जाणीयो जीवरी न्ही – तब जाना स्त्री मुझसे प्रेम नहीं रखती।

९. रीसमै – रोषमें, क्रोधमें।

१० डावा होयजो – बायें अगकी अर्द्धांगी-स्त्री होना।

११ वेह हूई – विधवा हुई (?)

१२ उपनौ – उत्पन्न हुआ।

१३ वलै – फिर।

१४. वसालूसु – सालूसे, दुपट्टेसे।

हसीया। तर कह्यौ गोपडै[1] वठी थाहरी जेठाणी छै। माहरी असतरी छै। अवार वालो[2] समयो थो। तरै आप दोड घर माहे गई। हू रस[ज]सु भरीयो। तरा करवत लेता माग्या था सो आधा अगरा आप हूवा छो। तरै अै जतन कीवा।

आगनी असतरी सुणनै मेहलमु उतरनै करवत लीन्ही। करवत लेता कह्यौ। इणहीज भरतारनी असतरी होयजो। इतरो केहत पाण[3] वरती पडी सौ पडता गायरो हाड पगै लागौ[4]। सौ अलावदी पातसाहरै घरै जामो पायो[5]। साहूकाररा वैटानै कह्यौ थारी भोजाई नेम धारनै[6] करवत लीधो। तरै माहरै वैटी [ट] करवत लेता कह्यौ। मोटा रावजीरै घर जामो पावज्यो। इण अमनरीरो वाड काटो[7] देजो मती। देह छाडत पाण जालोर गढै कानडदेजीरै कवर वीरमदे हूवै। तिणसु नेह वधाणो।

तरै वेगम पातसाहनै अरज कीधी। मेरो व्याह वीरमदेसु करो। भला पूब है[8]।

एक दीन पातसाह अवपासमै विराजीया छै[9]। तिसै कानडदेजी आया। पातसाह घणो सनमान देने वतलाया[10]। कानडदे वीरमदेनै हमारी लडकी दीवो[11]।

---

१ गोपड – झरोखमें।

२ अवार वालो – अभी वाला अभी जैसा।

३ इतरो केहत पांण – इतना कहते ही।

४ गायरो पग लागो – गायकी हड्डी पैरों लगी।

५ जामो पायो – जन्म प्राप्त किया।

६ नेम धारने – नियम धारण कर।

७ वाड काटो – सम्बन्ध रूपी शूल।

८ मेरो व्याह पूब है – इस अंश पर खडी बोलीका प्रभाव अवलोकनीय है। ख प्रतिमें 'मेरो व्याह पूब है' के स्थान पर यह पाठ है—'मै वीरमदे सोनिगरान वचन दीधो। मेरा व्याह तिणसु करो। मेरा वाचन सिरपोय जालोरका धणी है। पातिसाह कह्यौ–वेगम ऊ तो हिंदु है। मेरो तरफस गाढ भाति २ सु करिस्यु विण भलो तो पुराईव हाय है।'

९ विराजीया छ – बैठे हैं।

१० घणो वतलाया – बहुत आदर दे कर बातचीत की।

११ हमारी लडकी दीधी – अपनी लडकी दो खडी बोली और राजस्थानी भाषाका मिश्रण अवलोकनीय है।

तरै कानडदेजी कह्यौ । हम तो हजरतकं नोकर है ।[1] तरै पातसाह घणो हठ कीधो । तरै कानडदेजी कह्यौ नां हजरत मैं न जाणु । वीरमदे जाणै । उणरी रजावधीर्रा वात छै । तरै पातसाह इनाम देनै वीदा कीधा ओर कह्यौ । सवा वीरमदेकु ले आईयो ।[2]

कान्हडदेजी डेरे आया । रांणगदेजी वीरमदेजीने हकीगत कही । तरै वीरमदेजी कह्यौ । रावजी कबुला न्ही[3] तो पातसाह[4] अठे हीज मारै । हूं पातसाहसु वात कर लेसु ।[5]

प्रभात हूवां कान्हडदेजी राणगदेजी कवर वीरमदे पातसाहरे हजुर[6] गया । मुजरो करनै बैठा । तिसै फूरमायो । वीरमदे तुम हमारी लडकी व्याहो । वीरमदे सलाम करनै कह्यौ । हजु[ज]रत सलामत मे तो घररा धणी[7] रजपूत छा । साहिजादी माहरा घरां लायक न्ही । पिण हजरत फूरमावै तौ सिर ऊपर कबूलायत छै[8] । पिण जालोर जाय जान करनै[9] पातिसाहारै घरै आवा तिसौ म्हा कन्है[10] पजांनो न छै । तिणसु नाकारो[11] कीजै छै ।

इसो सुणनै पातिसाह १२ लाप रुपीया दिराया । तीन वरसरी सीष दीधी । हिंदू गीराहमैं परणावेंगे[12] । सताव[13] आईयो । सीप दीन्ही ।

---

१ ख. प्रतिमें यह पाठ है–पातिसाह दीन दुनीरा छो । हु पादरीयौ घररो धणी रजपूत छु । पातिसाहांरा सगा वलक रोम सुम विलायतरा धणी छैं । हु तौ वदगी करूं छु ।

२ सवा · आईयो – सुवह (?) वीरमदेको ले आना । 'आईयो' ग्राम्य हिन्दीका विशेष प्रयोग है ।

३. कवुला न्ही – स्वीकार न करें ।

४. ख प्रतिमे पातसाहके स्थान पर 'तुरकडो' पाठ है ।

५ वात कर लेसु – वात कर लूगा ।

६ हजुर – दरवारमें ।

७ धणी – स्वामी ।

८ सिर छैं – सर पर धारण करने योग्य है, आज्ञा स्वीकार है ।

९ जान करनै – वरात चढा कर । 'जान' शब्द सस्कृत 'यान' का अपभ्रंश है ।

१०. म्हा कन्है – हमारे पास ।

११ नाकारो – मना, नाही ।

१२ हिंदू · परणावेंगे – हिन्दू ग्रहोमें विवाह करेंगे ।

१३ सताव – शीघ्रतासे ।

तग साह वेगम पातिसाहनै कह्यौ । हजर[त] कान्हडदे वीरमदेनै सीप द्यो । इणका चचा राणगदेकु ओलमे[1] रपो । हिंदू है आवै कै नावै ।

पातिसाह कह्यौ पूब कही ।

कान्हडदे सोनिगरो सीप मागणनै आयौ तरै पातसाह कह्यौ । भाई राणगदेकु हमारै पास रपो । कानडदेजीरो घोडो देवासी[2] छै । आसौ चारण नै एक पवास तीजा राणगदेजी । अै तीन जणा रापैनै चालीया ।

तरै राणगदेजी कह्यौ । ठाकुरा आगै तो सोनारो पोरसो[3] छै नै वारै लाप रुपीया ले जावा छौ तिणरा गढ करावजो । आपणै तो पातिसाहसु नावो करणो छै[4] । मोनै वेगो[5] समाचार देजो ।

इसी वात ठहरायनै कूच कीधो जालोर पोहता[6] । सपरो[7] मोहरत जोयनै गढरी गाग दोधी[8] । गढरी ताकीदी कीधी ।

वासै तगा मीलकरी[9] हवेलीमे राणगदेजीनै रापीया । राणगदेजीगे जाब्तो कीजो । आसो चारण पईसा २ भर अमल[10] लीया करै । राणगदेजी अमल कर कमर वाधनै भीया[11] घोडा उपरै चढे नै पुरी करावै तरै अमल उगै[12] ।

राणगदेजी दिन ५ऽ७ पातसाहरै मुजरै जायै पातिमाह घरारा

---

१ ओलम – बधक रूपमें ।
२ देवासी – देव-स्थानका ।
३ पोरसो – पारस पत्थर ।
४ नावो करणो छ – नाम अर्थात सधय करना है ।
५ वेगो – शीघ्र वेग (स) ।
६ पोहता – पहुंचे ।
७ सपरो – श्रेष्ठ अच्छा ।
८ गढरी गाग दोधी – गढ़ निर्माणका काम प्रारंभ किया ।
९ तगा मीलकरो – मजरबन्द करने वालका नाम है ।
१० अमल – अफीम अहिफेन (स) ।
११ भीया – घोड़ेका नाम ।
१२ अमल उग – अफीमका नशा आये ।

समाचार पूछै। तरै मास २ ऽ ३ गढ जालोर पोहतांरा[1] ममाचार आया वले आवसी। तरै पिण हजरत वीरमदे दोड गयो थो सो दोड पिण गयो न्ही नै सेहर पीण गयो न्ही तिणरो घणो सोच छै[2]। च्यारं दिस आदमी दोडीया छै। एसा ममाचार आया। वले आवसी तरै मालम करसु[3]।

मास १ ऽ २ नै वलै पूछीयो। तरै कह्यौ काइ पवर न्ही। पातसाहरा मुहडा आगैं नाकरो न कर सकै पिण परो गयो दीसै छै। मांहरै घरमं इतरोइज चादणो हूतो[4]। इसी वात पातसाह आगै कही। वीरमदे भागो सो गम न्ही[5]।

तरै साह वेगम वे[बो]ली। हजरत काफर वैह नावणाया[6]। पातसाह सलामत रांणगदेका जावता करीयो। इणकै तांई पवर है[7]। पातसाह तोगवैसो छोडचौ[8]।

तिण समीयैं वलकरै पातसाह अलावदीनै भैंसो १ निपट मातो मेलीयो[9]। जिणरा सिघ[10] पूठो ढांकनैं पूछडै जाय लागा छै। तिको भैंसानै झटकासु मारज्यौ। जवै[11] करो मती।

दिली आया। पातसाहसु मिल्या। परवाना दीधा। हकीकत वाची। भैंसौ मारणरै वासतै पातसाह दरीपांनो[12] करैनै विराजीया[13]। मीरजादा जवांनानै हुकम कीया सो भैंसा उपरै थेट

---

१ पोहतारा — पहुंचनेके।
२ तिणरो घणो सोच छै — उसकी बहुत चिन्ता है।
३ वले ... करसु — फिर आवेंगे तब निवेदन करूंगा।
४ इतरोइज...हूतो — इतना ही प्रकाश था।
५. वीरमदे ... न्ही — वीरमदे भागा जिसका दुख नहीं।
६ वैह नावणाया — दोनो नहीं आनेके है।
७. इणकै तांई पवर है — इनको सूचना है।
८ तोगवैसो छोडचौ — पैरोमे बेडी पहिनानेकी आज्ञा दी। (?)
९. निपट मातो मेलीयो - बहुत मस्त भेजा।
१०. सिघ — सींग।
११. जवै — जिवह, हलाल।
१२. दरीपानो — अनौपचारिक बैठक।
१३ विराजीया — बैठा।

पुरसाणरा पाडा तूट पडीया[1]। पठाणजादा हार छूटा। भसो मरै न्ही। मास ५ऽ७ रापेनें सिरपाव देनै पाछी सीप दीधी। सो हालत[ता] हालता[2] जालोर आय उतरीया।

तिसै वीरमदेजी वाग पधारता था नै विचै जमराणारो देठालो हूवो[3] नै भैसागे तमासो देपनै वीरमदेजी उभा रहीनें[4] पूछीयो। मीया भैसो कठै ले जावो छौ।

तरै सिपाई बोलीया। वालकरै[5] पातसाह दिलीरा पातसाह कहै मारणनै मेलीयो थो सो किणहीसु मुवो न्ही[6]। पातसाह न्ही है पटैल[7] राज करै छै।

इसो साभलनै[8] वीरमदेने रीस चढी[9] तीको पूठासु[10] आयनै तरवार व[वा]ही सीगा नै पूठा विचै तिणम् माथो तूट पडीयो। वलकरा सिपाई वाह २ कहिनें वीरमदेनै देपता हीज रह्या।

भसो मारनै वीरमदेजी गढ सिधाया[11]।

भसा वाला सिपाई पाछा दिली आया नै भैसारो माथो पातिसाहनै दिपायो। तरै कहीयो हजरत एसा सिपाई हजूरमै रापीजै। वीरमदे कवर भैसानै मारीयो सो जाणीजै वकरानै लोह कीधो[12]।

पातसाह पुस्याल हूवा[13]। बलकरा सिपाइ वलक गया।

---

१ पेट तूट पडाया – ठेठ खुरासानके खांडे टूट पडे। खाडा = एक प्रकारकी तलवार, जिसके दोनों ओर धार हो।

२ हालत हालता – चलत चलते।

३ विच हूवो – बीचमें यमराजका (भैसेसे तात्पर्य है) सामना हुआ।

४ उमा रही न – खडे रह कर।

५ वालकर – बलखसे।

६ किणहीसु मुवो न्ही – किसीसे मरा नहीं।

७ पटैल – किसानोंका मुखिया।

८ सांभलन – सुन कर।

९ रीस चढी – क्रोध आया।

१० पूठासु – पीछेसे।

११ सिधाया – चले।

१२ वकरान लोह कीधो – बकरेको मारा।

१३ पुस्याल हूवा – प्रसन्न हुआ।

दूहौ – सुध पूछै सुरतांण, कोलाहल केहो कटक।
कै हाथी ठांण उथंडोयौ[1], कै रीसत्रीयौ रांण[2] ॥ १

पातसाहनै मालम हूई। तगानै मारनै राणगदे भागो। लारै तो बावीसी[3] विदा कीधी नै कह्यौ। तुमारै लार मै आया। जलदी करीयो। जाण न पावै[4]।

दिलीसु रांणगदेजी घडी ४ दिन चढतै नीकल्या सो रात घडी ४ थाकतां[5] सोझतसुं कोस ९ आथवणी कांनी[6] आया।

तरै डोकरी[7] १ गोबर वीणती[8] थी तिणनै पूछीयो। डोकरी तै कांइ वात सुणी। तरै डोकरी कह्यौ। वेटा! राणगदे तगानै मारनै निकलीयो। वासै[9] बावीसी चढी छै।

इतरो सुणनै राणगदेजी कह्यौ। फिट झीथडा[10]। तो पैहला वात आई।

फिटकारो सुणतां घोडारो प्रांण छूटो तिणरै नाम गाव झीथडो कहीजै छै। आगै तो तूरकारी ढांणी थी। आगै सिकोतरीनै[11] कह्यौ।

---

१. कै ' उथडीयौ – या तो हाथी अपने स्थानसे छूट भागा है।
२. कै रीसवीयौ राण – अथवा राणगदे क्रोधित हुआ है।
३ वावीसी – सेनाकी बाईसो टुकड़ियां। बादशाहो और राजाओंके यहा विविध महकमो के २२ विभाग रखनेकी प्रथा रही है।
४. तुमारै लार…न पावै – प्रस्तुत अंश पर खड़ी बोलीका प्रभाव है।
५ थाकता – थकते हुए।
६ आथवणी कानी – पश्चिमकी ओर। राजस्थानी भाषामें चारो मुख्य दिशाओके नाम इस प्रकार हैं– १ ऊगमण (पूर्व), २ आथमण (पश्चिम), ३ धराऊ (उत्तर), ४ लङ्काउ (दक्षिण)।
ख प्रतिमें 'रात… कानी आया' के स्थान पर यह पाठ है–'राति घडी ४ पाछली थकां रोहीठ गांवसु उरै कोस ४ एक गांव आयो'।
७ डोकरी – वुढ़िया।
८ वीणती – चुनती, एकत्रित करती।
९ वासै – पीछेसे।
१० फिट भीथडा – झीथडा घोडे! धिक्कार है। झीथड़ा गांव जोधपुर डिविजनमें है।
११. सिकोतरीनै – शाकिनी (एक प्रकारकी तांत्रिक स्त्रीको) अथवा शकुनोत्तरी, भविष्यवाणी करने वालीको।

मोनै जालोर पोहचावणो । रोहीठसु उलीका न्ही[1] । कोसा चार गाव ढाहरीया सासण[2] राणगदे सोनिगरै दीधी ।

उठासु गढ जालोर पोहता[3] । कान्हडदेजीसु मिलीया । दिलीरी हकीगत सारी ही कही । गढरो घणो जावतो करणो । रजपूतारो बारै वरसारो रोजगार चुकाय दिन्हो नै कह्यो । गढरी सरम थाहरै भुजै छै[4] । गढ घणो फूटरो[5] दीसै[6] त्यू करणो ।

तरै रजपूत बोलीया । रावजी सलामत । राजरो लूण घणो फूटरो दिपावसा[7] ।

साह वेगमने साथे लनै पातिसाह ाप १ घोडासु जालोर नेडा[8] कोसा ४ उरे[9] डेरा कीधा । मोरचा लगाया । नालीया चाढी[10] । गढरै ग्रास पास फोजा लागी[11] ।

वरस १ राड[12] हूई । गढ हाथ ग्रावणरो ढग कोई न्ही । तरै पातसाह वेलदार[13] ५०० बुलायनै गढरै मुरग दिराई ।

---

१ रोहिटसू उलीका न्ही – रोही को (जगल प्रदेशरो) उलांघें नहीं (?)

२ सासण – शासन, दानमें दी हुई जमीन ।

३ पोहता – पहुचे । ख प्रतिमें पाठ इस प्रकार है–तर सीकोतर सांपलो हुईन कह्यो म्हारी पूठि ऊपरा चढो । तर राणगदे पूठ ऊपरा चढो न सीकोतरि उडी तिका रात घडी २ पाछिली थका गढ माहे मेल्हीयो । सीकोतरी पाछी ग्राई । तठा पछ झीपडारो घडो कराय झीपडार नांम गाम बसायो तिको ग्रबाए कुवाजीरो झीपडो कहीज [illegible] ।'

४ गढरी भज छ – गढकी लज्जा तुम्हारी भुजाग्रों पर ह ।

५ घणो फूटरो – बहुत ग्रच्छा, श्रेष्ठ ।

६ दीसै – दिखाई दे ।

७ राजरा दिपावसा – ग्रापका खाया हुग्रा नमक बहुत ग्रच्छी तरह दिखावेंगे ।

८ नेडा – समीप ।

९ उरे – इधर इस ग्रोर ।

१० नालीयां चाढी – तोपें चढाई गई । तोपें मुख्यत मुगलकालीन युद्धोंमें प्रचलित हुई थी ।

११ ख प्रतिका पाठ इस प्रकार है–'जर घडी २ नालां सो जू[ऊ]ट जूतै तिसो सईकडाबंध लीधी । जिके दोय मण तीन मणरो गोलो पाय । हाथी पूर टल्ला दै तर पिस तिसो नालां लीधी । ग्रोर नालांरी किसी गणत छ । ग्रगन वरस । इसो भांतिसु फोजरो घणारी लीयां गढ लागा । साह बेगमरो चकडोल साथे छ ।'

१२ राड – राड, लडाई ।

१३ वलदार – भवन निर्माणमें काम करने वाले मजदूर ।

तिण समीयै उमादै राणी थाल माहै मोतीयांरो हार पोवती थी सो सुरगरो धको लागो। सो मोती पडहडीया[1]।

तरै रांणी जायनै वीरमदेजीनै कह्यौ। अठै सुरंग लागी दीसै छै। तिसै तेल मण हजार उनो करायनै[2] तइ[3] कीधो छै। तिसै सुरंगमै बारी हूई तिणमै तुरत उन्हो तेल नवायो[4]। तिको पालो[5] साथ ३०००० तेलसुं वल भस्म हूवा[6]।

तरै वीरमदेजी जांणीयो इण मोरचै गढ भीळसी[7]। कंवरजीरै रसोडै रजपूत जीमै तिकै सोनारा थाळमै जीमैं। चलू करनै[8] उठ जायै। वाघ वानर जीमै थाली मंजायनै थाळरै चिबठीरा ठोलारी[9] मारै सौ आगल २ री टीकडी उड पडै। सोनार सांधै[10]। तिसै कवरजीनै रसोडदार कह्यौ। वाघ वांनर मनमैं पोरस[11] घणो जाणै छै। हमेसा थाल भांजै। रसोडदारनै रीस करनै परो मेलीयो[12]।

पछै वाघ वानरनै बुलायनै सूरगरो मोरचो दीधो। पिण कवरजी एक अरज छै। लोह एक वार चलावसु[13] तिण वास्ते तरवार कटारी हजार २ ऽ ३ मो कन्है मेलावो[14] पछै रजपूतरा हाथ देपीजै। इसी

---

१. मोती पडहडीया – मोती हिले, मोती चलायमान हुए। यह प्रसङ्ग ख. ग प्रतियोंमें नहीं है।
२ उनो करायने – गरम करवा कर।
३ तइ – तैयार, बहुत गरम।
४. नवायो – नमाया, बहाया।
५. पालो – पैदल सिपाही।
६. यह प्रसङ्ग ख. और ग. प्रतियोमें आगे दिया गया है।
७. भीळसी – नष्ट होगा।
८. चलू करनै – आचमन कर, पानीसे मुंह साफ कर।
९. चिबठीरा ठोलारी – अगुलीके जोड़के उठे हुए भागकी।
१०. सोनार साधै – सोनी जोडता।
११. पोरस – पुरुषार्थ।
१२. यह प्रसङ्ग ख. और ग प्रतियोमें नहीं है।
१३. लोह'' चलावसु – एक हथियारका प्रयोग एक बार ही करूंगा।
१४. मो कन्है मेलावो – मेरे पास रखवाओ।

वात सुणनै वीरमदेजी मनमें रापी[1] । अलावदी पातसाहनै १२ वरस हूवा गढ भिलै न्ही[2] ।

किणहेक पातसाहनै कह्यौ । हजरत गढ माहै सामान नीठीयो दीसै छै[3] । आ पबर वीरमदेजीनें हुई । तरें दूधगी पीर करायने दोना भरनै फोज दीसा नापीया[4] ।

तिरै पातसाह देपनै कह्यौ । मैरा वैटा काफर अजसैं[5] तो गढमे पीर पावै छै । सामान वोहत वरसके है ।

पातसाह पाछो कूच कीधो । मोरचा उठाय दीया । जालोरसु कोस ४ उपरै डेरा दीधा । दुजै[6] दिन घडप भवराणी डेरा हूवारो हलकारे[7] आयन कह्यौ ।

तरै गढरी पोल पोलनै सैंदाना[8] वागा[9] । दरीपानो कीधो[10] । जाचक जिन[11] विरद बोलै छै । तिसै गोठ[12] तयार हूई । तरै सारो ही साथ जीमैं छ[13] । वीरमदेजी ने वेंनोई[14] दहीयो भेला जीमे छै ।

आगै दहीया २ मूल दीया था । तिकारा मुहडा आमा सामा देयनै

---

१ यह प्रसङ्ग ख और ग प्रतियोंमें आगे दिया गया है ।
२ भिल न्ही – नष्ट नहीं होता विजित नहीं होता ।
३ नीठीयो दीस छ – समाप्त हुआ दीखता है ।
४ फाज दीसा नापीया – फोजकी ओर डाले । ख प्रतिका पाठ इस प्रकार है तरै वीरमदे[री]कूतरी ब्याई थी तिकांरी दुध सन पीर कराई । तिक पानलीर पीर लगायन ल्हसकर दीसी नांवी ।'
५ अजस – अब तक ।
६ दुज – दूसरे । स द्वितीय युज बीजा ।
७ हलकार – समाचारदाताने ।
८ सदाना – नक्कारे ।
९ वागा – बजे ।
१० दरीपानो कीधो – दरबार किया ।
११ जाचक जिन – याचकजन ।
१२ गोठ – प्रीति भोज, [illegible] गाल्ठी ।
१३ जीम छ – भोजन करता है ।
१४ वेंनोई – बहनोई ।

वीरमदेजी मसकरी कीधी । आज दहीया मतो भुंडो करै छै[1] । सही तो गढ भेलावसी ।

इसो सुणनै वैनोड कहै । कवरजी मुवांमुं[2] किसी मसकरी करो । तरै वीरमदेजी कह्यौ । थे तो मुवांरा जीवता भाइ छौ । थे मदत करो । भायारो वैर वालो[3] । तरै दहीयै कह्यौ । मोटो बोल साहिबनै साजै[4] ।

गोठ जीमतां वेरस[5] हुवो । उठासु उठनै मांणस तो मारोठ परब-तसरनै पोहचाया । आप नीकलनै पातसाहसु मीलीयो । हकीकत सारी कही । माहे तो सामांन पूटो । राज पाछो कूच करो । हू गढरो भेदू[6] छुं । गढ भेलावसु ।

प्रभाते[7] कूच हुवो सो जालोरगढ दोला[8] डेरा दीधा । मोरचा लागा । सुरंगमै दारूरा[9] थेला भराया । पछै लगाई । सोर उडीयो । तिणसु गढरै वारो[10] हूवो ।

तणी सुरंगरै मोरचै वाघ वानर वैठो छै । तिण सुरंगमै पैदल साथ चढनै गढरै वारै आवै तिणनै वाघ वानर घाव करै सो मरै । एक लोह करै । मारता मारतां हजार ४ पैदलरो गरो हूवौ[11] । सगला आवध नीठीया[12] । तुरक होकारो[13] कर करनै आया । तरै तरवार विनां

---

१ मतो भुडो करै छै – बुरा विचार करते हैं ।

२ मुवासु – मुर्दोंसे, मरे हुएसे ।

३ भायारो वैर वालो – भाइयोंके वैरका बदला लो ।

४. ख प्रतिमें यह पाठ है 'वडा सिरदार नर नींदवीजे नही । नरांरी भ्रणमापी राशी छै । चाहे ज्यू करै । नै म्हे तो वाहरा भलर्चीत छां । पिण मोटा बोल तो श्री नारायणजीनै छाजै । '

५. वेरस – मनमुटाव ।

६. भेदू – भेदिया, भेद देने वाला ।

७. प्रभाते – प्रात कालमे ।

८. दोला – चारो ओर ।

९. दारूरा – बारूदके ।

१०. वारो – छेद ।

११. गरो हूवौ – ढेर हो गया ।

१२ सगला आवध नीठीया – सभी आयुध (शस्त्र) समाप्त हो गये ।

१३. होकारो – किलकारी ।

वाघ वानर उभो। फोज आई देपनै हाथ पछाडीयो सो वैणी माहसु[1] हाथ भड पडीयो। हाड तीपो नीकलीयो तिणसु लोह करै। तिको जाणै कटारी वावै छै। इण भात ४० ऽ ५० पाडनै[2] आप पडीयो।

तरा वीरमदे कह्यौ। आलम पना। रजपूतरो वट हिंदु पत्री धरम[3] जिण मुहडै राम जपीयो तिण मुहडै कलमो न कहणी आवै। पिण श्रीरामजी करै सो कबूल छै[4]।"

इसो सुणनै पातिसाह बोल्या। हम तो व्याह हिंदुकै राह कबूलाया[5] था। पिण तुमारै तो नका पढणकी दिलमै आई[6]। जावो वीरमदेकु सपडावौ[7]। काजी बुलाय नका पढावौ।

चाकर वीरमदेने दूजै[8] डेरै ले आया। कमर पोली। वागारा चहिरवध[9] पोलीया। तरै आतारो ढेर हूवो नै वीरमदे नेत्र फेर दीया।

तिसै चाकरा पातिसाहनै कह्यौ। हजरत। वीरमदे पेट परनालनै[10] आया था सो भिस्तकु पोहता[11]।

आ वात वेगमकु कही। तरै वेगम कह्यी। आलम पना वीरमदेका सिर काटनै ल्यावो। उनका सिरसु फेरा लेउगी। मैरा पैहला भवका पावद[12] है। इणके वास्तै मै करोत लीधी। आगै छ वेला इणनै

---

१ वणी माहसु – कनाईमैसे।
२ पाडन – गिरा कर मार कर।
३ पत्री धरम – क्षत्रिय धम।
४ ख प्रतिमें यह पाठ है गऊ पुजा। तुलछी मांा। श्रीसालगरांमजीरो चरणा मत ल्यां। ब्रामण पटदरसणर आधीन रहा न जिण मुपसु श्रीराम राम जप्यौ तिण मुपमु असुर मत्र कलमो कहिणो नाव। पिण श्री परमेस्वरजी कर तिकू प्रमाण [illegible]।'
५ कबूलाया – कबूल करवाया स्वीकार करवाया।
६ ख प्रतिमें यह पाठ विशेप है साहिब एक है। राह दोह कीया है।'
७ सपडावौ – स्नान करवाओ।
८ दूज – दूसरे।
९ वागारा चहिरवध – वागाके (एक प्रकारकी मुगल-कालीन घेरदार अगरखीकं) बधन।
१० परनालन – चीर कर काट कर।
११ भिस्तकु पोहता – भिस्तको (बहिश्तको) पहुच।
१२ पहला भवका पावद – पूर्व जन्मका पति।

परणी छु[1]। आ सातमी वेला[2] छै।

> दूहौ– मरूं मुंछ मटकडै[3], अवग्म नांपुं भार।
> वर वरसं[रू]तो वीरमदे, रहुँ तो अकन कंवार[4] ॥ १

पातिसाह आगै वात सगली[5] कही। वीरमदै नमीयो नही। वीरमदेरो माथो काटनै साह बेगम कन्है थालमै घालनै[6] ले गया।

वेगमे सांमी[7] आई तरै मुहडो फिर गयो। तरै वेगम कह्यौ। कवरजी साहि[व] मैं तो करोत लैतां भव २ तंहीज[8] भरतार माग्यौ है नै राज इणहीज भव मांग्यौ। जे इणसुं वाड काटो देज्यो मती[9]। राज तो रुसणो जिसोहीज निरभायो[10]। हूं तो फेरा ले[11] सती होसु।

इतरो सुणतां मुहडो फिरीयो। साह वेगम फेरा लैनै पातसाहनै कह्यौ। मोनै दाग द्यौ[12]।

तरै पातसाह कयो। सात भवरो पांवड छै। सत करण द्यौ[13]।

---

१. परणी छुं – विवाह किया है।

२. वेला – समय, संस्कृत शब्द है।

३ मटकडै – मरोड।

४. अकन कंवार – निपट कुंवारी, कन्या।

यह दूहा ख. और ग प्रतियोंमें नहीं है।

५ सगली – सारी समस्त।

६ घालनै – डाल कर।

७ सांमी – सामने।

८ तंहीज – तुमको ही।

९ वाड काटो देज्यो मती – वाड कांटा मत देना, एक मुहावरा है, जिसका तात्पर्य किसी प्रकारकी बाधा नहीं देनेसे है।

१० राज तो ' निरभायो – आपने तो अपना रोष वैसा ही निभाया।

११ फेरा ले – विवाह कर, विवाह-संस्कारमें अग्नि-परिक्रमा की जाती है।

१२ मोनै दाग द्यौ – मुझे जलाओ, मेरा दाह-संस्कार करो।

१३ सत करण द्यौ – सती होने दो।

चदणरो घर करनै गोदमै धड माथो मेलनै[1] सती हूई। साह बेगमरै नै वीरमदेरै रूसणो भागो[2]। पातिसाह पाछो दिली गयो।

इति श्री वीरमदे सोनिगा[गरा]री वात सपूर्ण[3]।

---

१ मेलन – रख कर।

२ रूसणो भागो – आपसका रोष दूर हुआ। रूसणो <स रोष भागो <स भग्न।

३ ख ग और घ प्रतियोंके अन्तमें यह पाठ है वडी वढ (ग वठ) हूई। रावजीरा राजपूत हजार ५ (ग पांच) काम (ग काम) आया। हजार २ (ग दोय) लोहा पडीया न पातिसाहजीरा सिपाई हजार १५ कां[म] (ग काम) आया। हजार १० ऽ ११ लोहा पडीया (ग पडिया) वडो (ग वडो) गजगाह हुवो (ग हुवो)। इण समीयारा गीत गुण भावन घणा ही छ। पछ पातिसाह दिल्ली गयो (ग पाति साहजी दिली गया)। सवत १३०० जालोर (घ जालोर) वसीयो। सवत १४१६ गढरी नीव दीधी। सवत १४३७ अलावदीन पातिसा (घ पातिसाह) जालोर (घ जालोर) लीधो ॥ इति श्री वीरमदेजीरी वार्त्ता सपूण।

भावन–स्व श्री सूयकरणजी पारीकने गुणगान' अथ दिया है (राजस्थानी वार्ता पष्ठ १०३)। प्रेम अथवा समान प्रकट करनके लिये रचित राजस्थानी काव्यके एक विशेष प्रकारको 'भावन' कहते ह।

ग प्रतिमें सवतवार घटनाओंका उक्त लेख नहीं है और पुष्पिका लेख इस प्रकार है इति श्री वीरमदे सोनिगरारी वात पूण।

घ प्रतिका पुष्पिका लख इस प्रकार है—'इति श्री वीरमदेजीरो वार्त्ता सपूण ॥श्री॥ मुनि पृथ्यालचद लपि कृ [कृत] सवत १८३६ वर्षे ॥ फागण वदि ११ बुधवासरे ॥ श्री गुदवच नगर मध्य ॥' आगे यह कवित्त है—

"कवित्त – किसी चद्र विण रयण, किसौ पान वीण तरवर।
किसो पुरष वीण नार किसो हस विण सरवर ॥
किसो देवल वीण देव किसो दव विण पूजारो।
किसी ग्रन्थ विण वात किसी वात विण पडारो ॥
किसो खडग विण वीजी रूधा रायनसो।
कवि गद कहै हो राय हर, विण दीधां कीरतो कामी। १

पडारो – पाण्डित्य, स।

परिशिष्ट

प्रस्तुत पुस्तकमें प्रकाशित वार्ताओंसे सम्बद्ध विशेष कृतियोंके कतिपय उद्धरण पाठकोंकी जानकारीके लिये यहा दिये जाते हैं ।

१ बगडावत—

"बगड़ावत" नामक महाकाव्य राजस्थानी जनतामें मौखिक परपरासे गाया जाता है। प्रस्तुत महाकाव्यमें सगीत और काव्यकी प्रारंभिक स्वाभाविक रमणीयताके दर्शन होते हैं। काव्यका प्रासङ्गिक परिचय पुस्तककी सम्पादकीय भूमिकामें दिया गया है। बगडावत काव्यके कतिपय विशेष अश साहित्यानुरागियोंकी जानकारीके लिये नीचे प्रकाशित किये जा रहे है। संपूर्ण काव्यका गठन एक विशेष लय (तर्ज) पर आधारित है।

[मङ्गलाचरण]

पैला ही कणी देवने सिवरजै और कुणीरा लीजै नाम ।
पैली अणगड देवने सिवरो और गणपतरा लीजै नाम ।

* * *

सारदा ब्रह्मारी डीकरी, हस बैठी बजावै बीण ।
खातो सवरे खतोडमे, एरण धमता लवार ।
वेटो रजपूतरो आपने सवरे,
उगतडे परभात नीली पाखर पर माण्डे झून ।

* * *

समरू देवी सारदा, नमण करूं गणेस ।
पांच देव रच्छा करे, ब्रह्मा विस्नू महेस ।

[रावत भोजा-वर्णन]

लेणा हररा जी नाम, परभाते भोजने गावणा ।
लेणा भोजरा नाम, भोज दातागरो सेवरो ।
मतवाळारो मोड, भोज दातारांरो सेवरो ।
ऊचा बधावे देवरा, सोनारा कळस चढाय ।
सोनाने काटी तोलणा, रूपाने लेणो ताय ।
रूप उधारो नी मले, मर्‌या न जीवे कोय ।

मर जाणो ससारमे, कई य न श्रावे लार ।
खावो न खूव्या करो, करो जीवरा लाड ।
जीवडा सरीखा पावणा, मले न दूजी बार ।
चुणियोडा देवळ ढस पडें, जनमियोडा नर मर जाय ।
काचा घडा नरजन पूतळा, काची मरदारी देही ।
असी चूडी काचरी, फूटे न फटीको होय ।
उगियोडा सूरज श्राथसी, फूलियाडा कुमलाय ।

[सूम वचन]

कई न श्रावे लार, सूमरे गाडो भरिया लाकडा ।
खाडी हाडी लार, सूमने जाय खेतरा उतार दो ।
गरूदेवरी श्राण, सूमसू मरतो मेलो कुंआरजी ।
गुरुदेवरी श्राण सूमरा धूश्रा धूधला नीवळे ।
गुरूदेवरी श्राण, पाछो मलोजी भोळा रामजी ।
मृतलोकरे माय पाछो मलोजी भोळा रामजी ।
कोठामे रह गयो धान, म्हारे गढिया रह गया टूकडा ।
धूळ व्हियो धन माल, सगो कोई नी रे बेटो बापरो ।
पूत न परवार, सगो कोई न जो घररी गोरज्या ।
मगो है न समार, सगो कीजे रे श्रगनि देवता ।
वा लली सुधार सगी कीजो जी वनरी लाकडी ।
उठ जलेरी लार, सगी कीजो जी वनरी लाकडी ।

[रावत भोजाकी दानशीलता श्रोर एश्वय]

गुरुदेवरी श्राण, ऊचा वधाऊ जी हररा देवरा ।
गज गरियारी नीव, म्हूँ तो कूडा खुदाऊ रे बावडी ।

* * *

मायाने किण विध खाय रे मायाने ऊडी गाड दो ।
दो ने धीणो दळाय, मरदा काळ दुकाळा काढमो ।
गुरुदवरी श्राण, ताळा जड दो वीजळमाररा ।
वगड जडो कूमाड, मरदा काळ दुकाळा काढमो ।
गुरुदवरी श्राण आपा माडल ढावा मालवो ।
श्रापा वळता ढाबा मेवाड, रे जानोडो परजा ढाव ला ।

गुरुदेवरी आण, घोडीरै पगां ठळकती नेवरी ।
चांदीरी खुरताळ, घोडीरे हरियाला नेवर वाजणा ।
घमके घूघरमाळ, घोडी नानासणारी नेवरचा ।
गुरुदेवरी आण, घोडीरे भूल वणी जगाल जी ।
गुरुदेवरी आण, घोडीरे दुमची फूदा पाटका ।
गुरुदेवरी आण, घोडी ताजी जुगको ताजणो ।
सतजुगरो पलाण, घोडीरे लाख लाखरा पागडा ।
गुरुदेवरी आण, घोडीरे सिंगाडो सोने जडचो ।
हीरा तपे ललाड, घोड़ीरे मोती बालां जडचा ।
लाला जडी लगाम, चावडने तुर्रो तो ओपे घणो ।
तुर्रे तार हजार, रे वेलामे चमके वीजळी ।

[जयमती विरह-वर्णन]

गुरुदेवरी आण, हीरा काजळसूं काळी पडूं ।
रूप देहीरो जाय, छोरी काजळसू काळी पडू ।
वावा हाथरी मूदडी, छोरी रळकण लागी बाय ।
फूलांसू फोरी पडू, छोरी गेलामे आई नींद ।
नजरसू देखू रावत भोजने, जदी खाऊं धान ।
पछ मगरारा मोर, आज मीठा घणा बोल्या ।
घणा बोल्या दादर मोर समन्दरा हस जी ।
दियाडो घणो रूडो लागे ओ हीरजी ।
छै दनरी ली रजिया भोज, यो छटो महीनो जाय ।

[जयमती सौन्दर्य-वर्णन]

भूल गया भगवान, भाभी ! वण सांचे दो घड़चा ।
भूल गया भगवान, भाभी ! नही देवळ फूतळी ।
नही नारामे नार भाभी ! नही देवळ फूतळी ।
गुरुदेवरी आण, भाभी जाघ देवळरो थभ जी ।
पिण्डी बेलण होय, भाभी एडी तो सुपारो वणी ।
नाक वणी तलवार, देवी मुख गंगा खळक रही ।
गुरुदेवरी आण, राणीरे गोडामे गुणेशजी ।
गोडामे गुणेशजी, देवीरो कमर केळीरी कामडी ।

पेट पीपळरो पान, देवीरे दात दाडम कर बीजड़ा ।
गरुदेवरी आण, देवीरे नेता सुरमो मारणो ।
कोया काळी रेख, देवीरे नेताजी मुरमो मारणो ।
गुरुदेवरी आण, देवीरो जीभ कमलरो पानडो ।
होठ फेफरा फूल, राणीरे जीभ कमलरो पानडो ।
कोया काळी रेख, देवीरो चोटी गई पनाळ ।
गुरुदेवरी आण, अगमरो झालो आवसी ।
अगमरो झोलो आवसी, पच्छमने लुळ जाय ।
पच्छमरो झोलो आवसी, अगमने लुळ जाय ।
चोफेरा वाजे वायरा, टूक टूक हो जाय ।
थने सूवो झपट ल जाय, हसनी बोल वेण जी ।
गुरुदेवरी आण, राणी सोप भर पाणी पिव ।
गुरुदेवरी आण राणी बोळ्या पानम जीमसी ।
गुरुदेवरी आण धणारी झोपडोमें खाय ।
चोथो दाणो चावता तो राणी पेट फाट मर जाय ।

[युद्धसज्जा और युद्ध]

गुरुदेवरी आण, भाटी नूताजी जगलमेररा ।
भीलवाडरा भील, मरदा गढ देवलरा देवडा ।
भीलवाडरा भील, मरदा गढ चित्तोडरा चौतला ।
गुरुदेवरी आण, काळू मीया सनवाड ।
काळू मीया मनवाड, चन्ने वेगो आवजे ।
महाभारतरे माय, काळू चन्ने वेगो आवज ।
गुरुदेवरी आण काळूरे ढाल उडे आग फरे ।
गूजर गावे गीत, काळूरी बरछी मागे आतडा ।
तग मगी तरवार, काळूरे छुरियां चमके बीजळी

* * *

रे जोधो जगमाल, नानी पयरो बाळवयो ।
हुयो जोध असवार, गयो पानीरे रतमें ।
भारत करता साथो सूरमा, धरती रगत धपाई ।
द महोनारो भारत भूभियो, माथो देवी सीधा ।

के नीयाजीरो माथो चांवड माळामे पोयो ।
नीयाजी घोड़ो ऊवटा रगमहलांमे आवे ।
सूती हो तो जागजो नियारी आरती लीजो उतार ।
गज मोतीडा थाळ, गढरी गूजरचा आई ।
गूजरचा देखे वेप नीयाजीरे माथो नहीं ।

*　　*　　*

कै भड भाई चोईस, हुया घुडल्ने असवार ।
कै रण भाग्त माचियो, खारीरे ढावे पास ।
देवी चावडा खप्पर खाण्डो ले ऊनरी ।
ऊतरी धर वदनोरासू आज वगडावतारी फोजमे ।
चोईमारा माथा काट, झट माळा पहरली ।
गण गण माथा तोड, वैठी वदनोरांरी ढाळमे ।

[देव नारायण]

देव पधारिया दसा वावडी, गावो मगलाचार ।
वधावा गावो परथीनाथरा, गावो मगलाचार ।
गूजर करे आरती, घणी खमा नारायण हीदे पालणे ।
पुजारा करे आरती, ओ नारायण हीदे पालणे ।
खारीरा भोमिया थारी आरती, भदेरचा भेरू थारी आरती ।
मातासरी ओ थारी आरती, वदनोरी चावडा थारी आरती ।
खूमाणा स्याम थारी आरती, काळी काळका थारी आरती ।
जोगडारा धणी थारी आरती, भूत्या सूक्या थारी आरती ।
तेतीस करोड देवता, थांरी वोला आरती ।
कासीरा वासी, ने वारा ही पुजारा वोला आरती ॥

२ महाराजा वहादुरसिंह कृत रयाल

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके पुस्तकालयमें किशनगढ महाराजा वहादुरसिंह प्रणीत ख्याल परक एक नवीन कृति हालहीमें प्राप्त हुई है । यह कृति पुस्तकालय रजिस्टरमे क्रम संख्या १३७५२ पर अङ्कित हुए गुटकेमें लिखित है ।

ख्यालके कतिपय अश पाठकोकी जानकारीके लिए प्रकाशित किये जाते हैं ।

* श्री गणेशाय नम *

अथ ख्याल महाराज वहादुरसिंहजी कृत लिख्यते

राग रांमकरी

सुतडीनं माही छेडो रूडा महान आळमियो हो आवै ।
द्रिग हिय महार पागा छुवावो या नहो बात सुहावै ॥ १
हो लाडीजी श्रो कई विसडो सुभाव ।
पिय आधीन रहैं कर जोडया तोहा भौंह चढाव ॥ २

राग ललित

उणीदा छो जी रातरा ।
यण स्थिल अरु नण भकया ही आवैं, लग उठा परभातरा ।
पलका पीक अधर फीक रंग, रम अळसाया गातरा ॥ ३

राग भर्ज

उणीदा बोलो घणा घूमै छ ।
भपक उभक मिल लालच नुभाव छ ।
अजब छारणवी भमै छ ।
उणीदी आपडल्या पर घूम छ ।
लालच लगी भमय मिल भपक ।
लाज दबी भुकि भूम छ ॥ ४

* * *

आज हुयो छ मनरी भायो, राज महेनो व्है गुण गास्यां ।
पा‍ा गालग्रह कुंयर पावणा, फिरघो दिन थद पास्या ॥
पुसी जनमरी माहि जनम फल, वयातणो जितास्या ।
या पेसरयान लडाय बर छकस्या, ग्रोर छकास्या ग्रोर छकास्या ॥ ५२

नवल सखीजी भन आया हो राज ।
सांभो बाज फून बीणण पायोजी पर आज ।
इहि बन फूनो सी फिरत अकेली तू ग्राली गांवरी है ।
सांभीवों फून गरें डोगी हम पन भर भर सावरी है ॥ ५३

रहै दोऊ उन्न निहार ।
फूलन स्याम सगी इत उत स्यामा सुकुमार ।
लता विन्नमें रह गये इन उन मर्म कौन निवार ।
नागरिया मिल नन दुहुनसे बडे ठगन ठगार ॥ ५४

पना मारूजी आजी जी प्यारा पावणा हो राज ।
पना मारूजी काछी चढज्यो कूदणे हो राज ।
पना मारूजी हाथे चावक मावल माज ।।
पना मारू धण थारी ग्रोलू करै हो राज ।
पना मारू किणनै कहा दुख जियकी आज ।
पना मारुजी मेह बूझा हरक हातमै हो राज ।। ६२

* * *

मेहडलो लूवियो राज अजव झड रगरी मचो ।
नेह मेहरी झूम झूममै मतवालो मौज सचो ।
इद्र नीलमणिरै मधि नायक कुदन रेप पचो ।
घण दामणरो कियो घण उपमा लचो कचो ।। ७१

* * *

हो गोरीजीरा वालम सेझडली लुभाया रग राता रै ।
लोयण झुक झुक उझक लजाता रै ।
लपि छकि छकि हरपा [ता] रै ।
झिझक देपि उठत छाता थुकै रुक मदमाना रै ।
कुवर पना किण नही भावो अलमाना मुमकाता रै ।। ७९
महारा आलीजाजी थारी छवि भावै ।
मदछक राग गवाना महला वरछा थेगा देता आवै ।। ८०
हरिया वनडा नेहडला लगा ।
अलभ लाभ धन भाग मान छकि वनडोकै चाव जगा ।। ८१

उक्त ख्याल गुटकेके पुस्तकाकार ६ पत्रोमें लिखित है। इसमें कुल ८१ गीत हैं जो विभिन्न राग-रागनियोमे गेय है। सम्भवत लेखनमें ख्याल अपूर्ण रह गया है। उक्त ख्याल राजस्थानी भाषामें गीतिनाट्यके विकासको सूचित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, जिस पर उत्तर मुगलकालीन कलाका प्रभाव पूर्णरूपेण प्राप्त होता है।

३ वीरमदे सोनीगरारी वात—

सोनीगरा चौहान कान्हडदे, वीरमदे और राणगदे नामक वीरोंके विषयमें अनेक साहित्यिक कृतियाँ राजस्थानी भाषामें उपलब्ध होती हैं, जिनमेंसे महाकवि पद्मनाभ विरचित काव्यग्रथ, कान्हडदे प्रबन्धका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालामें प्रतिष्ठान द्वारा पहिले किया जा चुका है और वीरमदे सोनीगरारी वातका प्रकाशन प्रस्तुत पुस्तकमें

किया जा रहा है। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर द्वारा हालहीमें प्राप्त किए गए इन्द्रगढ़ (कोटा) के सरस्वती भंडारके हस्तलिखित ग्रन्थोंमें एक चारण गीत सग्रह भी है जिसमें उक्त सोनीगरा चौहान वीरोंके विषयमें भी गीत ग्रौर दूहे लिखे गये हैं। पाठकोंकी जानकारी ग्रौर सदभ हेतु उनको नीचे उदधृत किया जा रहा है—

गीत वीरमदे सानगराको

सर सेल कटारी पट [पेट] न सवीया,
उरपीयो हर ग्रहर दुप।
फुरत भलो वीरमदे फुगेयो
माथो पीड विरा परा मुख ॥
पोट्टोप पटोळै वीर पुजीयो,
देव क वरज माहि दीवाण।
आणीया पछो हूवो ग्रगराठो
सुदतायी मोभ वदी सुरताण ॥
रगि वैवरि न रचे ग्रने रडे
गव प्रभतायी तणी रुप।
चरवा वजि उठि सीम नन्मो
मुप देप फररीयो मुप ॥
छ चोव छनीस पोहोरकी छेटी,
वीर तहु न वीसगीया।
वाढीया पछो भतो वीरमद
फटि फटि [फाट फाट] मह नमल फरीयो ॥ ५२३

गात जतो सोनगरारो

जुग च्यार पद गा मुझ जोवता
गजि वन रहना दोन गति।
ग्रानि महार जिन उगाम,
जुगा देव नवो या जानि ॥
पाटिव ग्राटि वनत ग्राणाया,
गा जाध म न्दि मन।
रमला नगो वग्न वग्वनां
रिम मिगीवो पिम वान घटै ॥

मह रामायण सीस लीया म,
आप ईस मकत्तिसु येम ।
जाय आणिया स ताहि तू जाणे,
' कहन आणिया सजाण केम ॥
उतवग अनत आणीया आगै,
नाथ कह माम्हळि नीय नारि ।
दीयणहार न मीळीयो दुजो,
सीघ समो भूम[प] तिस्यो सैसारि ॥
आप तणे त्रिय तणों आपरी,
भड भटनेर पडन भारि ।
सीर व्यहु वजसिये सोनंगर,
दीधा मुड वडे दातारि ॥ ५२५

दूहा

वुतवग अरधंग ता, वधे कठ लडीयो वयम ।
जोय अचिरज जैसा नाडुळा, नर हर नयम ॥ १
राणगा रुणभुणतेह, राय आगणि रमियो नही ।
पाय वेडी पहरेह, वाजंती वाणारउत ॥ १ [२]
तगो न जांणै तोल, मूग्ध मछगीका तणो ।
कारणि हेक कुवोल, मारे काय आपे मरे ॥ २ [३]
तगा तगाई भिणि करै, वोलै मोह सम्हालि ।
नाहर अर रजपूतनै, रैकारै ही गालि ॥ ३ [४]
कथ कवियण साची कहै, राणिगदेवै सम्हालि ।
काय कर घाति कटारिया, काय पग आठी वालि ॥ ४ [५]
जमडढ काढ्या जाय, चूवती ऊभै चौहटै ।
अमर न आडा थाय, राणिगदेरा ताकिया ॥ ५ [६]
सांकि कह्यिो सुरताण, यो कोलाहळ कासु हुवै ।
सदि रीमाणो रांण; काय मैगल पभ मगोडियो ॥ ६ [७]

उक्त दूहोंमेंसे २, ३, ४ और ६ सख्यक दूहे मूल वार्तामें आ चुके हैं, शेष ३ दूहे न[illegible]
हैं। सग्रहमें ५२४ सख्यक ' गीत राणगदे सोनगरारो" शीर्षकके अतर्गत दिया गया है कि[illegible]
यह वास्तवमे अमरसिह राठोड़का है। गीतकी प्रथम पक्ति "सम्हारी जेम राणिग सोनग[illegible]
होनेसे लेखकको भ्रम हो गया है।